॥ श्रीवीतरागाय नमः

अथ

पंडित श्रीमोहनविजयविरचित नर्मदा सुंदरीनो रास प्रारंभः ॥

प्रभु चरणांबुजरज तणी, बलीने होय लोक ॥ मायो वली जग जेहनो, बिहु अक्षरने श्लोक ॥१॥ धारक अतिशय पदवा, जिन सुरगिरि परें धीर ॥ हुं प्रणमुं ते वीरने, गोतम जास वजीर ॥ २ ॥ कवि सुरतरु शोनावया परनृत तनया पूत ॥ ज्ञान चंदने चंडिका, कृपा करी अति नूत ॥ ३ ॥ जड ताडय मुद्रा नणी, जनु रूपा स्वयमेव ॥ शब्दोदधि तारण तरी, सा नारति प्रणमेव ॥ ४ ॥ गुरु गुण मणि हारावली, धरियें हृदय तटेण ॥ कीधो तजी पिपीलिका, मत्त मतंग जलेण ॥ ५ ॥ जिन गुणहर नारति सुगुरु, प्रणमी चरण रसेण ॥ धर्मोद्यम कीजे सदा, सवि सुख लहियें जेण ॥ ६ ॥ चार नेद ते धर्मना, दान शील तप नाव ॥ तेहमां शील विशेष छे, कष्ट रत्नागर नाव ॥ ७ ॥ चक्षुश्रवण शीलें करी,

थयो कुसुमनी माल ॥ पावक पण पाणी थयो, शीलें सिंह शीयाल ॥ ८ ॥ शीलरूप सन्नाहथी, मन्मथ नृपनां बाण ॥ वेधी न शके वज्रने, रे मन मृषा म जाण ॥ ए ॥ शीलतणे अधिकार अथ, नमया सुंदरि चरित्र ॥ रचीश शास्त्र अनुसारथी, वर्णव करी विचित्र ॥ १० ॥ सांजलजो श्रोता नरो, मित्र पुत्र स्थिर लाय ॥ पण पीतां करतां रखे, महिषी किन्नर न्याय ॥ ११ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ देशी चोपाइनी ॥

जंबूद्वीप जोयण एक लाख, साधक त्रिगुणी परिधिनी जाख ॥ क्षेत्र सात तिहां अति विस्तार, नाम मात्र कहुं तास विचार ॥ १ ॥ जरह ऐरवय पांचसें ठवीश, ठकला तास उवरी सुजगीश ॥ हेम ऐरण्य ठे सहसग इगसत्त, पण जोअण पण कला पमत्त ॥ २ ॥ आठ सहस चउसय एकवीश, एक कला हरि रम्यक जगीश ॥ तित्तिस सहस ठसय चूल नेह, चार कला ए मान विदेह ॥ ३ ॥ ठ कुलगिरि ए द्वीप मजार, तास तणो हवे कहिश विचार ॥ जोयण एक सहस बावन्न, बार कला हिमशिखरी मन्न ॥ ४ ॥ महा हेमवंत रूपी चार हजार, उसय दश

जोयण दश कला विस्तार ॥ निषध नील सोरहश्त
इगसत्त, दोय बला ए गिरि पमत्त ॥ ५ ॥ सत्त चित्त
षट कुलगिरि दाख, मेलतां दोय जोयण एक लाख
॥ जिनवर वचनें करीयें प्रमाण, तेहथी को नहिं अधि
को जाण ॥ ६ ॥ इवे नरहंजन पद वंदत्त, मनुज लो
क शोजानो गत्त ॥ वन उपवनने गहन विशेष, तर
णि किरण करी न शके प्रवेश ॥ ७ ॥ अति उत्तंग
शिखर गिरि तणां, खडहडे वहेतां रह रवितणा ॥
जरे तसमांनुं निऊरणां जलेख, मानुं गंगाधर प्रक
ट्यो अनेक ॥ ८ ॥ अवनी वनिता चाल समान, रति
रमणीयक देश प्रधान ॥ नगरी वर्धमाना युतिदरी,
अलकानी शोजा रहि परी ॥ ए ॥ शंकाये लंका वा
पडी, मूकी सुरनगरी आपडी ॥ सासय नगरीयें चं
दिका, जू जामिनी कुंकुम विंदिका ॥ १० ॥ मंदिर
सुंदर गढ मढ पोल, सोहे विजय तणी तिहां जेल ॥
वर्ण अढार वसे गुणवंत, निज निज धर्म सदा निव
हंत ॥ ११ ॥ अतिहि कृपण महिसुर तिस्या, ठिल्लर तो
क्षीरोदधि जिस्यां ॥ कहुइ वाणी साकर जिसी, ते
हनी उपमा दीजे कीसी ॥ १२ ॥ एहवा मूढ रहे गह
गही, अवगुण सुणवो शीख्या नहीं ॥ हृदय कठोर-

जेहवुं नवनीत, हरिचंद्र नृप सरसी अप्रतीत ॥१३॥ उना इंदुकिरण सारिखा, निर्धन धनद जिस्या पार ख्या ॥ वांका कमलनालिके तीर, निःस्नेही जिम ज ल ने खीर ॥ १४ ॥ निरुपकार जेम रंजाखंज, अप्रि य तो जेम देवी नंज ॥ डुःखीयां जेम दो गुंदक दे व, विरुआं कामदेव अजिनेव ॥ १५ ॥ व्यवहारी व्यापारी वसे, धर्म कारजें सवि धस मसे ॥ परउप कारी परम प्रवीण, जिनवर वचन थकी लयलीन ॥ १६ ॥ पन्नणी प्रथम ढाल रस मणी, नर्मदा सुंदरी सुचरित्र तणी ॥ आगल वात रसाल विशेष, कहे हवे मोहन तिहां नरेश ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रतिपाले पुरजन जणी, संप्रति नामें जूप ॥ रह्यो दर्प तजी काम नृप, देखी सुंदर रूप ॥१॥ हरवा डुर्जनमहिघटा, अतुलीबल शार्दूल ॥ परिजन हंस रमाडवा, अजिनव गंगाकूल ॥ २ ॥ अरियण सहिं ता जूप बल, सेवे गिरिदरी जूप ॥ जेम जल विह तो ग्रीष्मथी, वसे रहे जई कूप ॥ ३ ॥ ख्याग त्याग वाचा अचल, न्यायें निपुण नरिंद ॥ धवलीकृत दि ग दश जिणें, करी उदय जस चंद ॥ ४ ॥ रति रू

पा पट्टरागिणी, रतिसुंदरी नामेण ॥ कीधो मुख आजासथी, झांखो उडुपति जेण ॥ ५ ॥ एक पक्ष उज्ज्वल करे, नजचर चंद्र प्रसिद्ध ॥ राणीमुख को ई अपर शशी, बिहु पक्ष उज्ज्वल कीध ॥ ६ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

प्रवहण तिहांथी पूरीयुंरे लाल ॥ ए देशी ॥ नगरजूषण सरिखो तिहां रे लाल, वृषजसेन सा थेंश ॥ गुणवंता रे ॥ रयणायर सरिखो धने रे ला ल, जलदधि दाता विशेष ॥ गुं० ॥ १ ॥ सांजल जो श्रोता जना रे लाल ॥ शीलतणो संबंध ॥गु०॥ सरस वचन रचना तिसी रे लाल, जेम सोनूंने सु गंध ॥ गु० ॥ सां० ॥ जलवट थलवटना करे रे लाल, द्रव्य वर्ले व्यवसाय ॥ गु० ॥ महिपति पण माने घणुं रे लाल, धने वश कोण न थाय ॥ गुं० ॥ सां० ॥ ३ ॥ सोनुं रुपुं सामटुं रे लाल, मणि मा णिकना पुंज ॥ गु० ॥ कर धरे मोती दासीयो रे लाल, परिहरि जाणी गुंज ॥ गु० ॥ सां० ॥ ४ ॥ वी रमती तस गेहिनी रे लाल, लाजें मृतलोचन्न ॥ गु० ॥ शील धर्मनी जाणीयें रे लाल, अजिनव जू मि जतन्न ॥ गु० ॥ सां० ॥ ५ ॥ पतिजक्ति चंड्गान

नी रे लाल, कोपनो नहिं संसर्ग ॥ गु० ॥ गुणमणि
खाणी गोरडी रे लाल, रूपकला अपवर्ग ॥ गु० ॥
सां० ॥ ६ ॥ विलसे विविध ते दंपती रे लाल, सां
सारिक सुखन्नोग ॥ गु० ॥ रामा राम नीरोगता रे
लाल, लहीयें पुण्य संयोग ॥ गु० ॥ सां० ॥ ७ ॥ वे
अंगज बे तेहने रे लाल, वीरसेन सहदेव ॥ गु० ॥
दिनकर हिमकर सारिखा रे लाल, जोडे परम गुण
मेव ॥ गु० ॥ सां० ॥ ८ ॥ रुषिदत्ता बेटी सहजथी
रे लाल, किन्नरी सुंदरी अणुहार ॥ गु० ॥ बालपणे
सघली कला रे लाल, शीखी पूर्वसंस्कार ॥ गु० ॥
सां० ॥ ९ ॥ रुषिदत्ता विहु सहजथीरे लाल, हसेय
रमेय अति प्रेम ॥ गु० ॥ सोहे वे मोती वच्चें रे लाल,
राती चूनी जेम ॥ गु० ॥ सां० ॥ १० ॥ वीरमती
निजपुत्रीने रे लाल, वेसाडे उत्संग ॥ गु० ॥ नित्य
आन्नूषण नव नवां रे लाल, स्थापे नेहें अंग ॥ गु०
॥ सां० ॥ ११ ॥ बालुडां जस आंगणें रे लाल, धूल
धूसर न रमंत ॥ गु० ॥ कारागार आगार ते रे लाल,
जाणीयें अहो पुण्यवंत ॥ गु० ॥ सां० ॥ १२ ॥ हवे
अनुक्रमे वधती थई रे लाल, बाला मायारूप ॥ गु०
टाले नहिं निज देहथी रे लाल, लज्जाकौम अनूप॥

गु० ॥ सां० ॥ १३ ॥ जनकें जणावा पाठवीरे लाल, सा अध्यापक गेह ॥ गु० ॥ जैनधर्म जलो अन्यसे रे लाल, लघुअमथी धरी नेह ॥ गु० ॥ सां० ॥ १४ ॥ झीले अहिंसा तटिनी तटे रे लाल, लीधो विनय कज गंध ॥ गु० ॥ चाखी समकित सूखडी रे लाल, जाण्यो जैनप्रबंध ॥ गु० ॥ सां० ॥ १५ निष्ठा एक जिनधर्मनी रे लाल, मिथ्यात्वथी प्रतिकूल ॥ गु० ॥ विकथा सर्वे विरमी रही रे लाल, जेम दल गलित तांबूल ॥ गु० ॥ सां० ॥ १६ ॥ पुत्री माही पेखीने रे लाल, हरखे तात अतीव ॥ गु० ॥ तात प्रभृति सहु को करे रे लाल, धर्मकथा ते सदैव ॥ गु० ॥ सां० ॥ १७ ॥ जेहवी संगति कीजीए रे लाल, तेहवा गुणनी केल ॥ गु० ॥ कुसुमनी संगतिथी तेलें रे लाल, पाम्युं नाम फूलेल ॥ गु० ॥ सां० ॥ १८ ॥ पामी वीरमती सुता रे लाल, यौवनवय सुकुमाल ॥ गु० ॥ मोहनविजयें वर्णवीरे लाल ॥ बीजी ढाल रसाल ॥ गु० ॥ सां० ॥ १९ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

सा पुत्री नवयौवना, देखी चिंते तात ॥ पुरमें कोइ महेभ्यसुत, जोइ करुं जामात ॥ १ ॥ पुर स

वर कारणे, जोयुं करी तलास ॥ पण वर पुत्री सारि खो, न मल्यो कोइ तास ॥ २ ॥ मिथ्यादृष्टि नयरमें, अछे घणा धनवंत ॥ तस घर तनुजा आपतां, मन नवि धारे संत ॥ ३ ॥ केम दे श्रावक बालिका, मिथ्यात्वीने गेह ॥ केम दीजे चंमालने, वृंदा तरु ससनेह ॥४॥ मणि न जडे कोइ लोहमें, म्हेली कुंदन पत्र ॥ वृषज्ञसेन एम मनमें, आलोचे एकत्र ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

हांरे माहरे जोबनीयानो लटको दहाडा चार जो ॥ ए देशी ॥ हांरे हवे आव्यो ए हवे रूपचंद्र पुरहुत यो ॥ वारु रे रुद्रदत्त नामा वाणीयोरे लो ॥ हांरे कांइ करवा वाणिज्य वर्द्धमान पुरमांहि जो, तेइने करियाणुं लोकें प्रमाणीयोरे लो ॥ १ ॥ हांरे तेणे वेची साटी सयण वसाणानी कोडि जो, कीधा रे तेणे गांठे दाम सोहामणा रे लो ॥ हांरे जस पुण्य सखाइ छे तेहने शी खोड जो, एके के पगले रे पुंज मणितणा रे लो ॥ २ ॥ हांरे तेणे पहेरी अंबर सखरां चहूटामांहि जो, हिंडे ते मोडामोडे छलशुंरे लो ॥ हांरे परदेशीनी परगाममें एहिज रीति जो, फोगटीयो थइ फूले धोची चेलशुंरे लो ॥३॥ हांरे तेणे

जमतां जमतां पुरमां कीधो मित्र जो, कुबेरदत्त नामा एक व्यवहारीयोरे लो ॥ हांरे तस मांहोमांहे बाझी पूरण प्रीति जो, ससनेही नेहीनी वात छे न्यारीयोरे लो ॥ ४ ॥ हांरे एम जांख्युं कुबेरे अहो अहो मित्र रुद्रदत्त जो, बंधाणी तुमसेंती माया आकरीरे लो ॥ हांरे तुम्हे परदेशीडा कामणगारां लोक जो,पंखीनी पेरे जाउ न मिलो फरीफरीरे लो ॥ ५ ॥ हारे मेंतो मित्रजी माहरा कहींयें आ पुरमांहि जो, नेहडलो नवि कीधोरे कोइथी एवडोरे लो ॥ हांरे मारी विनति मांनो आवो मंदिरमुझ जो, कांइ जो पोताना करीने त्रेवडोरे लो ॥ ६ ॥ हांरे हुं तो जाणीश कीधी मुझने करुणा जोर जो, प्राहूणला तुम जेहवा किहांथी आंगणेरे लो ॥ हांरे तुम जेहवा नरथी क्यांहथी एक घडी गोठ जो, जेह तेहथी वातडली करतां नवी बने रे लो ॥ ७ ॥ हांरे तुम्हे इहां तो रहेता हशो कोइकने गेह जो, तेहथी शुं घर त्रूंछुं कहोजी आपणुंरे लो ॥ हांरे तुमे रहेशो तेता दिन करशुं गुजराण जो, फेरीने शुं कहीयें तुह्मने घणुं घणुंरे लो ॥ ८ ॥ हांरे कोइ वातनो अंतर त्रेवडो माहरा राज जो, करशुं जे काइ थाशे अमथी चा

करीरे लो ॥ हांरे अमें लेशुं सो सो लोटणां तुम्ह हजूर जो, कहियें ठे पयललीया साहिब अनुसरी रे लो ॥ ए ॥ हांरे तव बोल्यो ततक्षिण रुद्रदत्त हित लाय जो, नाइजी तुम्हें नांख्युं ते अमें शिर धर्युं रे लो ॥ हांरे कांइ तुम अम मेलो हूउं पूरव लेख जो, दैवे ए मनगमतुं काम नलुं कर्युं रे लो॥ ॥१० ॥ हांरे जो तुमचो हेत ठे अम उपर परिपूर्ण जो, अलगा रहीयाथी तोइयें ढूंकडा रे लो ॥ हांरे जूउ गयण घनाघन उमहे नूतल मोरजो, मंके रे ते तांडव रसवशे रूपडारे लो ॥ ११ ॥ हांरे जुउ किहां दिनकरने किहां कैरववन्न जो, तोहीपण विकसे ते साचा नेहथी रे लो ॥ हांरे कांइ क्यारे कोइथी टाल्यो पण न टलंत जो, मांनेतो मनमे लो होय जेहथी रे लो ॥ १२ ॥ हांरे तुमें राजी जो ठो मुफथी आवे गेह जो, तो तुमने किम ड हतुं कहो थोडे गजेरे लो ॥ हांरे एम कहीने रुद्र दत्त आव्यो मित्रने गेह जो, लाखेणी मनुहारो ते तत्वरी मजेरे लो ॥ १३ ॥ हांरे रहियो ते परदेशी मित्रना मंदिर मांहि जो, पोताना कुटुंबनी परे सहु अइ रह्यां रे लो ॥ हांरे ते खावे पीये नित्य नवला

आहार जो, किणहि परे पर करीने नवी शक्यो रे लो ॥ १५ ॥ हारे ते वेगो रुद्रदत्त एक दिन गोखम कार जो, जूए पुरकेरी शोभा नयणथी रे लो ॥ एतो मोहन विजयें भांखी त्रीजी ढाल जो, स्नेहाली हितकारी मीठी वाणियेंरे लो ॥ १६ ॥ सर्व गाथा॥

॥ दोहा ॥

दीठी रुद्रदत्तें एहवे, ऋषिदत्ता सोत्साह ॥ स खीयां संगें परवरे, घालिने गले बांहि ॥ १ ॥ बाला सघली विविहपरें, हसती रमती त्यांहि ॥ एक एकने ताली दीये, चाले चहूटा मांहि ॥ २ ॥ जाणे शा वक हंसना मानसरोवर पंति ॥ खेले मुख करी के सरा, तिम बाला शोभंति ॥ ३ ॥ सा देखी परदेशी यो, चिंते चित्तथी एम ॥ खेचरपुत्री नगरमां रमवा आवी केम ॥ ४ ॥ के शुं प्रगटी पन्नगी, पुहवीतल थी एह ॥ एतो कौतुक सारिखुं, दीसे छे ससनेह ॥ ॥ ५ ॥ एहवे तिणहिज अवसरे, मूर्छागत थयो तेह ॥ धडहडीने धरणी ढल्यो, जिम गिरिवर शि खरेह ॥ ६ ॥ मूर्छित देख्यो मित्रने, आव्यो कुबेर वरवीर ॥ कीध सचेतन ततखिणें ढोली मंद समीर ॥ ७ ॥

करीरे लो ॥ हांरे अमें लेशुं सो सो लोटणां तुम्ह हजूर जो, कहियें ठे पयललीया साहिब अनुसरी रे लो ॥ ए ॥ हांरे तव बोल्यो ततक्षिण रुद्रदत्त हित लाय जो, नाइजी तुम्हें नांख्युं ते अमें शिर धस्युं रे लो ॥ हांरे कांइ तुम अम मेलो हूठ पूरब लेख जो, दैवे ए मनगमतुं काम नलुं कस्युं रे लो॥ ॥१० ॥ हांरे जो तुमचो हेत ठे अम उपर परिपूर्ण जो, अलगा रहीयाथी तोइयें ढूंकडा रे लो ॥ हांरे जूठ गयण घनाघन उमहे नूतल मोरजो, मंरू रे ते तांडव रसवशे रूपडारे लो ॥ ११ ॥ हांरे जुठ किहां दिनकरने किहां कैरववन्न जो, तोहीपण विकसे ते साचा नेहथी रे लो ॥ हांरे कांइ क्यारे कोइथी टाल्यो पण न टलंत जो, मांनेतो मनमे लो होय जेहथी रे लो ॥ १२ ॥ हांरे तुमें राजी जो ठो मुऊथी आवे गेह जो, तो तुमने किमए ड हवुं कहो थोडे गजेरे लो ॥ हांरे एम कहीने रुद्र दत्त आव्यो मित्रने गेह जो, लाखेणी मनुहारो ते सखरी सजेरे लो ॥ १३ ॥ हांरे रहियो ते परदेशी मित्रना मंदिर मांहि जो, पोताना कुटुंबनी परे सहु थइ रह्यां रे लो ॥ हांरे ते खाये पीये नित्य नवला

आहार जो, किणहि परे पर कीने नवी लहो रे
लो ॥ १४ ॥ हारि ते बेठो रुद्रदत्त एक दिन गोखम
झार जो, जूए पुरकेरी शोभा नयणची रे लो ॥ एमो
मोहन विजयें जांखी त्रीजी ढाल जो, स्नेहाली
हितकारी मीठी वाणियेंरे लो ॥ १६ ॥ सर्व गाथा॥

॥ दोहा ॥

दीठी रुद्रदत्तें एहवे, ऋषिदत्ता सोरसाह ॥ स
खीयां संगें परवरे, घालिने गले बांहि ॥ १ ॥ बाला
सघली विविहपरें, हसती रमती त्यांहि ॥ एक एकने
ताली दीये, चाले चहूटा मांहि ॥ २ ॥ जाणे शा
वक हंसना मानसरोवर पंति ॥ खेले मुख करी के
सरा, तिम वाला शोभंति ॥ ३ ॥ सा देखी परदेशी
यो, चिंते चित्तथी एम ॥ खेचरपुत्री नगरमां रमवा
आवी केम ॥ ४ ॥ के शुं प्रगटी पन्नगी, पुहवीतल
थी एह ॥ एतो कौतुक सारिखुं, दीसे छे ससनेह ॥
॥ ५ ॥ एहवे तिणहिज अवसरे, मूर्छागत थयो
तेह ॥ धडहडीने धरणी ढल्यो, जिम गिरिवर शि
खरेह ॥ ६ ॥ मूर्छित देख्यो मित्रने, आव्यो कुबेर
वरवीर ॥ कीध सचेतन ततखिणें ढोली मंद
समीर ॥ ७ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

रंग रह्यो रे रस रह्यो रे फूल गुलाबरो ए देशी ॥ बांधव कहो ए शुं हतुं, मूर्छा पाम्या एमह्रो रसीया रे मित्रजीरे जांखो मया करो ॥ ए आंकणी ॥ ते कारण मूजने कहो, जाणुं जाये जेम हे ॥ र० ॥ १ ॥ वगर कहे केम जाणीयें, पारका मननी वात हे ॥ र० ॥ खोली मन साचुं कहो, जेम जाणुं परमार्थ हे ॥ र० मी० ॥ २ ॥ जे कांइ मूजथी सीजशे, ते तो करीश हुं काम हे ॥ र० ॥ वचन कुबेरदत्तनां सु णी, बोल्यो रुद्रदत्त ताम हे ॥ र० ॥ मी० ॥ ३ ॥ अ हो अहो सजान माहरा, अकथ कथा छे एह ॥ र० ॥ तो तुम आगलें जाखीयें, जो तुमथी होये तेह हे ॥ र० ॥ मी० ॥ ४ ॥ नहिं तो कुण नांखे कहो, जल मे कंचन जाल हे ॥ र०॥ दुःख ते आगल दाखीये, जे टाले तत्काल हें ॥ र० ॥ मी० ॥५॥ ते तो कोइ नाहिं जगतमें, जे जाणे परपीर हे ॥ र० ॥ गोष्टि ज ली तेहथी कही, मनमेलू जे वीर हे ॥र०॥मी०॥६॥ रोग होवे तो वैद्यने, दाखीयें करी उपाय हे ॥ र० ॥ पण ए अंतर गत तणी, कोइ थकी न कलाय ॥ र० ॥ सी० ॥ ७ ॥ ते माटे तुमने किसुं, कहीयें कहो म

हाराज हे ॥ र० ॥ मन ए जाणे माहरुं, वात सवे शिरताज हे ॥ र० ॥ मी० ॥ ८ ॥ बोल्यो कुबेरदत्त फरी, कहो कहो मनमें हूंस हे ॥ र० ॥ जो न कहो मुझ आगलें, तो छे तमने सूंस हे र० ॥मी०॥९॥ वचन सुणी एम मित्रनां, भांखे रुद्रदत्त भांख हे ॥ र० ॥ हमणां इहां बेठो हतो, हुं आपणे गोख हे ॥ र० ॥ मी० ॥ १० ॥ तेहवे में दीठी बालिका, किन्नरी सरखी एक हे ॥ र० ॥ विस्मय हुं पामी रह्यो देखी रूपविवेक हे ॥ र० ॥ मी० ॥ ११ ॥ विधाता ए केम घडी शक्यो, एहवे रूपे एहरे ॥ र० ॥ एक ज वक्र विलोकतां, नवलो कीधो नेह रे ॥ र० ॥ मी० ॥ १२ ॥ बाला ए प्रेमनी सांकली, सांकली गइ ततखेव रे ॥ र० ॥ काम शिलीमुख देइ गइ, किणही न जाण्यो भेद हे ॥ र० ॥ मी० ॥ १३ ॥ साले छे नट सालसी, क्षण क्षण हियडा मांहिहे ॥ र० ॥ वसती नगरीमां गइ, चित्त चोरीने आंहि हे ॥ र० ॥ मी० ॥ १४ ॥ ए पुत्री छे केहनी, मित्र कहो मुजतेह हे ॥ र० ॥ जिम ते बाला जोयवा, पोंहचूं तेहने गेह हे ॥ र० ॥ मी० ॥ १५ ॥ विण दीठे ते बालिका, कांइ एह न सूहाय हे ॥ र० ॥

जलथी ते मीन वियोगीउं, तेह्नी शी गति थाय हे ॥ र० ॥ मी० ॥ १६ ॥ कुबेरदत्त ह्वे बोलशे, वाणी अतिहिं रसाल हे ॥र०॥ मोह्नविजये सोहा मणी, नांखी चोथी ढालरे ॥ र० ॥ मी० ॥ १७ ॥ सर्वगाथा.

॥ दोहा ॥

कुबेरदत्त ह्वे मित्रने, नाखे वचन सुरंग ॥ रे नाई ए शो कस्यो, खोटो चित्त उमंग ॥१॥ वृषनसे ननी पुत्रिका, ए रुषिदत्ता नाम, आज लगण पर णी नथी, सुकलीणी गुणधाम ॥ २ ॥ जैनधर्म सम कित धरो, ढे कन्यानो तात ॥ तेणें करी करतो न थी, मिथ्यात्वी जामात ॥ ३ ॥ समकितधारी एह्वो, जो वर मलशे कोय ॥ तो ए तस परणावशे, दूधें पयतल धोय ॥ ४ ॥ तुमने अमने त्रेवडे, मिथ्यात्वीनुं रूप ॥ तो तस पुत्री उपरे, खोटी न करो चूंप ॥ ५ ॥ काम ए मुजथी नवि होये, रे सूरिजन महाराज ॥ लालच खोटी नहि दीउं, लाजें विणसे काज ॥ ६ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

नदी यमुनाके तीर, उडे दोय पंखीयां ॥ ए दे

शी ॥ रुद्रदत्तनी सुणी वाणी, तदा ठानो रह्यो ॥ पा छो अक्षर एक, फरीने नवि कह्यो ॥ आलोचे मन माँहि, उपाय कोइ करुं ॥ कपटें पण सार्थेश तणी पुत्री वरुं ॥ १ ॥ जो इण अवसर मादरी, बुद्धि न केळवुं ॥ तो पठे आवशे काम, कहे ठल खेलवुं ॥ मित्र थकी तो एह, कारज नवी उघडे ॥ तो निःस्वारथ कोण, पूंठे एहनी पडे ॥ २ ॥ हुं हवे माद री मेले, प्रपंच करुं वही ॥ पण ऋषिदत्ता एह, वरेवी में सही ॥ निर्गत जे गजदंत, फरी पेसे नहीं ॥ के की पीठ सुरंग, मटे नही लोकहिं ॥ ३ ॥ उद्यम वि ण ए काम, किसी परें सीजशे ॥ नारी होशे कंत ल, जेम जलें भींजशे ॥ रण धण कण गुणमाट, विलंब न कीजीये ॥ वासर नाखी वात, तेणे न पतीजीयें ॥ ४ ॥ ए जिनधर्म श्रावक, केरी बालिका ॥ एह ना जिननी वाणी, तणी प्रतिपालिका ॥ हूं तो श्राव क धर्मनो, मर्म जाणुं नहीं ॥ मन तो वरवा काज, रहुं ठे उम्महीं ॥ ५ ॥ तेमाटे हवे साधु, समीपें जाइने ॥ शीखूं गृहस्थ आचार, के उद्यम लाइने ॥ पठे ऋषिदत्ता तात, तणे संगें रहुं ॥ नोगवी कन्या तास, वरी वांठित लहुं ॥ ६ ॥ उच्यो करी आलोच,

रुद्रदत्त एहवे ॥ पहेरी वस्त्रने भूषण,जे अंगें फबे ॥
पहोतो पूछत पूछत, तेह उपासरे॥वंदी बेठो ताम,
के साधु उपाश्र रे ॥ ८ ॥ गुरु पूछे महानुभाव, क
हो कीहां रहो ॥ दीसो छो गृहस्थ विवेकी, भलो
विनय वहो ॥ सांभलो तो कांइ धर्म, कथा संभला
वियें ॥ एके अक्षर सांभलीये, जो इहां आवीयें ॥
तब बोल्यो रुद्रदत्त, हसी कपटें करी ॥ जी स्वामी
उपदेश, दीयो मुफहित धरी ॥ धर्म कथाने काज,
आव्यो हुं तुम कन्हे ॥ सीके जेहथी काज, आदे
शो ते मुने ॥ ए ॥ आरंभ्यो उपदेश, गुरु तस आ
गले ॥ ते पण कपटी नीचे, नयणे सांभले ॥ गुरु क
हे सघली वस्तु, अथिर करी जाणीयें ॥ स्वार्थभूत
संबंध, करीने प्रमाणीयें ॥ १० ॥ ए संसार असार
मां, कोइ कोइनुं नहीं ॥ साचो एक श्री जिनधर्म,
सखाइ छे सही ॥ जीव करे पाप, कुटुंबने पोष
वा ॥ पण भोगवनां पाप, न आवे संतोषवा ॥११॥
जलधि नीर तरंग, तिम्यो धनयौवनो ॥ बाजीगरना
[illegible] नो सम जाणवो ॥ ए धन नारी धाम, न कोइ
[illegible] ॥ जिहां लग पुन्यनी सांई, तिहां तेह
[illegible] ॥ १२ ॥ [illegible] [illegible] सुग

रीवडो ॥ तेम धन तृष्णा माटे, अटे ए जीवडो ॥ जेणे जिमणे हाथे, करी धन वापर्युं॥ तेणे सुरगति द्वार, सहि करी आचर्युं ॥ १३ ॥ दान थकीज गृहस्थ, करे शुचि आतमा ॥ दुष्कर तप तपि शुरू, हुये महातमा ॥ समकित रत्न अमूल, तणो खप कीजीयें ॥ वली उपशमरस स्वाद, करीने पीजीये ॥ १४ ॥ एम निसुणी उपदेश, कहे रुद्रदत्त हसी ॥ अहो गुरु समकितवात, हवे चित्तमां वसी ॥ पांचमी ढाल रसाल, आनंद उपजावती ॥ मोहन विजयें रंग, कही मन चावती ॥ १५ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

रुद्रदत्त कर जोडीने, चांखे गुरुने हेव ॥ सूधो श्रावक मुजकरो, दीन दयालु देव ॥ १ ॥ दिन एता भूलो भम्यो, पाम्यो हवे जिनधर्म ॥ शीखवो श्रावकनी क्रिया, दया करी गुरु हर्म ॥ २ ॥ मूर्छ्युं हवे मिथ्यात्वने, दीन पिता महाराज ॥ उदय थयो समकिततणो, अंतरंग दिनराज ॥ ३ ॥ सुगुरुये जाण्युं ए सुगुण, दिसे मानव कोय ॥ लाज वरुं श्रावक करी, जेम लहुं कर्मी होय ॥ ४ ॥ श्रावकधर्म तणी क्रिया, सयल शीखावी ताम ॥ रुद्रदत्त हरख्यो हि

ये, सफल हशे हवे काम ॥ ५ ॥ जेम करिवरें पी धी सुरा, जेम पाखर्यो मृगराज ॥ तेम कपटी ठाके चढ्यो, वरवाने ससमाज ॥ ६ ॥

॥ ढाल ठ्ही ॥

राजा जो मिले ॥ ए देशी ॥ रुद्रदत्त विषये थयो लीन, मांस पेशीथी जेहवोज मीन ॥ धिक् धिक् कामने ॥ जेणे धूत्यो अखिल संसार, धिक् धिक् कामने ॥ ए आंकणी॥ नर सुर असुर अपर पण जाण, कामें तास मनावी आण ॥धि०॥ १ ॥ कौशिक दिनकर वायस चंद, देखी न शके कहे कविवृंद ॥ धि० ॥ पण कामी जन रजनी दीस, पेखे नहिं नहिं ए जगदीश ॥ धि० ॥ २ ॥ पंचानन करिवर अहि थोक, जीते भुजबलथी बहु लोक ॥ धि० ॥ जे जरा जीत जीते धरी टेक, नर कोडीमां कोइक एक ॥धि०॥३॥ पराक्रम छेदे सूर सपराण, पण छेदे कोइ मनमथ बाण ॥ धि० ॥ कामे कुण कुण न कर्यां काम, कामे न गंज्या तास प्रणाम ॥ धि० ॥ ४ ॥ हवे रुद्रदत्त कुलिंग निवारि, हुवो कपट श्रावक तेणी वार ॥ धि० ॥ आव्यो जिनदत्त तणे गेह, मिलियो कपटी साथे नेह ॥धि०॥ ५ ॥ नीपट वणी कीधी मनुहार,

दीधुं आसन सार्थेशे तिवार ॥धि०॥ किहांथी आव्या जाशो किहां मित्र, नाम कहो तुम कवण पवित्र ॥ धि० ॥ ६ ॥ इण मंदिर करुणा करी केम, जांस्यो जेहथी जाणुं जेम ॥ धि० ॥ बोल्यो कपटी श्रावक तेय, अंबर ठेहडो मुहडे देय ॥ धि० ॥ ७ ॥ नयर अमारुं ए संसार, लाख चोराशी योनि आगार ॥ धि० ॥ जीव संसारी ठे ते मूऊ, तुम्ह ते शुं राखी यें गुऊ ॥ धि० ॥ ८ ॥ अनुक्रमें जैन नगरमें दीठ, चारित्रधर्म नृप भेटो ईठ ॥ धि० ॥ सद्बोधनामा तास प्रधान, दीधुं मुजने द्वादश व्रत दान ॥ धि० ॥ ए ॥ परणाववा मांडी दश बाल, पण में मन न कर्युं ततकाल ॥ धि० ॥ कीधो श्रावक मुऊने तेण, जिनभक्तियुत परम गुणेण ॥ धि० ॥ १० ॥ इम नीसुणी चिंते सार्थेश, पूरण ए श्रावक सुविशेष धि० ॥ अहो अहो जिनधर्मी वडजाग, परणीते परण्यो ठे कहेवो वैराग ॥ धि० ॥ ११ ॥ धन धन एहने सवि सुख होय, जव्य प्राणी दीसे ठे कोय धि० ॥ पुनरपि पूछे सार्थ एवाच,अहो धार्मिक तमें बोल्या साच ॥ धि० ॥ १२ ॥ ए पुर घर नृप मंत्री व्रात, ए तो तमे कही ज्ञाननी वात ॥ धि० ॥ पण

द्रव्यथी कह्यो नगरी नाम, सांभलियें श्रवणे गुण धाम ॥धि०॥१३॥ आग्रह सार्थेशकेरो जाणि, बोल्यो धूरत निगुण अयाण ॥ वसिये रूपचंद्रपुर गाम, श्रावक रुद्रदत्त माहरुं नाम ॥ धि०॥ १४ ॥ इहां हुं आव्यो हुं वाणिज्य काज, तुमने श्रावक सुण्या महाराज ॥ धि० ॥ साधर्मीनी सगाइ जाणि, आव्यो हुं मलवा इहां सुविहाण ॥ धि० ॥ १५ ॥ अमने मिथ्यात्वी नो न रुचे संग, जेम हंसने गमे न काककुरंग ॥धि०॥ हरख्यो वृषभसेन ततकाल, पण नवि जाणे माया जाल ॥ धि० ॥ १६ ॥ धोलुं ते जेतुं दीठुं दूध, धूर्तनी भक्ति विशेषें प्रतिबुद्ध ॥ धि०॥ पभणी रूडी छठी ढाल, मोहनविजयें थइ उजमाल ॥ १७ ॥ सर्वगाथा ॥

॥ दोहा ॥

रुद्रदत्त सार्थेशथी, करे धर्मनी वात ॥ कोइ जाणे जाणे नहीं, कपट गइमात्र ॥ १ ॥ वृषभसेन सार्थेश करे, व्रत पोसह पच्चक्खाण ॥ सामायिक खोटे मनें, ते धूरत महिराण ॥ २ ॥ साथे थइ सा धेंमाने, ते आवे गुरु पास ॥ जिन धूरो ने सुणे कथा, जेम ऋद्धि नाद विलास ॥ ३ ॥ जिम प्रभुजी स्वामी

तहत्त, धन साधू उच्चरंत ॥ मुख मीठो धीठो हिये, रुद्रदत्त कपट वहंत ॥ ४ ॥ पूछे वली वखाणमां, वारु गहन विचार ॥ म्हाह्यो थई वेसे वचें, जोजो कपट आचार ॥ ५ ॥ दंत्ती मुख वोले दूरसुं, हिये हलाहल होय ॥ पूवसहित फणिघृत प्रत्यें, शिखी गलंतो जोय ॥ ६ ॥ रुद्रदत्त हवे अनुक्रमें, कहे सार्थपने ताम, हवे देजो मुऊ आगना, तो पोहो चुं निज गाम ॥ ७ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

गढ बुंदीरा हाडा वहाला, चलण न देशुं ॥ ए देशी ॥ निसुणी सार्थेश रुद्रदत्त मुख वाणी, चालशे सयण सयाणो हो ॥ रूपचंद्रपुरवासी हो मित्रजी माहरा, चलण न देशुं ॥ ए आंकणी ॥ एह वो सनेही वाहलो किहांयकी मलशे, धर्मी सुजग सपराणो हो ॥ रू० ॥ १ ॥ एतो सनेही प्यारो मुऊघरे आव्यो, जेम आलसुघर गंगा हो ॥ रू० ॥ वीजा घणाए मलशे निगुण नहेजा, कुटिल उलंठ अनंगा हो ॥ रू० ॥ २ ॥ मिथ्यामतने एणे सुहणे न दीठो, केवली वयणे रातो हो ॥ रू० ॥ एहवो विचारी जगमांहि न कोई, केणे मिषें रहे ए जा

तो हो ॥ रू० ॥ ३ ॥ पुत्री जो माहरी एने परणा
वुं, जोईए तेहवो जमाई हो ॥ रू० ॥ नाव नदी जो
गें ए वर मलियो, पुत्रीनी पूर्ण कमाई हो ॥ रू० ॥
४ ॥ एहने मूकीने बीजा केहने परणावुं, तो सरे
काज प्रमाणे हो ॥ रू० ॥ ए ऋषिदत्ता वखतें आ
कर्यो, आव्यो वर इण टाणें हो ॥ रू०॥ ५ ॥ पूछुं
एहने जइ गोद बिठाई, जो मुज विनति माने हो
॥ रू० ॥ एहवुं आलोची रुद्रदत्त नाणी पूछे, सार्थप
जइने ठाने हो ॥ रू० ॥ ५ ॥ पुत्री अमारी साजन
तमें हवे परणो, ए छे अरज अम केरी हो ॥ रू० ॥
सेवा करुं साजन अमथी जे थाशे, ना न कहेजो
फेरी हो ॥ रू० ॥ ७ ॥ अमचा हियामां साजन तु
म गुण वसिया, तेणे करी कहीये छे ताणी हो ॥
रू० ॥ पुत्री अमारी साजन छे दृढधर्मी, जोडी ए
सरस समाणी हो ॥ रू० ॥ ८ ॥ एम सूणीने साज
न रुद्रदत्त हरख्यो, आपणा मनथी विचारे हो ॥
रू० ॥ जिण उद्देशे साजन कपट करुं हुं, कीधुं पा
धरं ते फिलाएं हो ॥ रू० ॥ ९ ॥ आज अमीरसें
जलधर वूठ्यो, मुंह माग्यो पड्यो पासो हो ॥ रू० ॥
काकतालीनो साजन न्याय थयो ए, हूवे कौतुक तमा

सो हो ॥ रू० ॥ १० ॥ ज्ञाणक विलँबी साजन क ऊदत्त बोल्यो, शाहजी अमें परदेशी हो ॥ रू० ॥ जाण्या विहूणा साजन पुत्री केम देशो, जूर्ठ हृदय गवेषी हो ॥ रू० ॥ ११ ॥ सार्थपति जांखे साजन तुमने पिछाण्या, जो साधर्मिक मोरा हो ॥ रू० ॥ रूप गुणे करी साजन जातिज जाणी, तेणेकरी क रीये छिए निहोरा हो ॥ रू० ॥ १२ ॥ कन्या वस्या विण तुमें किहां जाशो, भूलामणी नवि कीजे हो ॥ रू० ॥ कपटी पयंपें साजन वारु वरेशुं, केम तुम ने छुहवीजे हो ॥रू०॥ १३ ॥ हरख्यो सुणीने सार्थ प निज घरे आव्यो, कीधी सखर सजाई हो ॥ रू० ॥ लग्न लेवाये साजन चोरी वनाई, वहेंचें वीच वधाई हो ॥ रू० ॥१४॥ धवल मंगल साजन सखर सोहाये, सोहेलां सखरां गवाये हो ॥ रू० ॥ छाय वरघोडे साजन लीध जमाइ, तोरण मोतीडे वधा ई हो ॥रू०॥ १५ ॥ होम हवन साजन तव निरमा इ, हिजमुख वेद पढाई हो ॥ रू० ॥ चार मंगल साजन तिहां वरताई, अग्निगत फेरा फराई हो ॥ रू० ॥ १६ ॥ कपट श्रावक साजन साहस हेजे, ऋपिदत्ता परणाई हो ॥ रू० ॥ ढाल सुरंगी साजन

सातमी भांखी मोहन वचन सवाई हो ॥रू०॥१७॥

॥ दोहा ॥

परणी कपटी श्रावकें, ऋषिदत्ता तेणीवार ॥ उत्सव महोत्सव करी घणा, वरत्या जयजयकार ॥ ॥ १ ॥ धन बहु दीधुं दायजे, कापड भूषण कोडि ॥ रुद्रदत्त दंभी तणा, पहोंता सघला कोड ॥ २ ॥ दंभी सा कन्या वरी, गयो कुबेरदत्त पास ॥ वात कही सघली तिसे, आणी मन उल्लास ॥ ३ ॥ केह वि परणी कपटें करी, श्रावक पुत्री आज ॥ ठे मुजरो तुम मित्रने, अहो मित्र महाराज ॥ ४ ॥ कुबेर दत्त समरथ थइ, हस्यो करतल आस्फाल ॥ कहे धन्य धन्य तुऊ बुद्धिने, कपट सरोवर पाल ॥ ५ ॥ दिन केते कपटी हवे, हाथ करी निजदाम ॥ शीख ग्रहे ससराकने, विनय करीने ताम ॥ ६ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

मारे आंगणेहो राज, ठेला मारु वावडीजी ॥ ए देशी ॥ जो जो कपटी हो राज, कहे करजोडीने जी ॥ निज ससराने हसी तेह, गुणवंता जी ॥ मूज दीजें हो राज, सदन भणी शीखडी जी ॥ ए आंकणी ॥ इहां आव्यां हो राज, दिवस केइ थइ गया

जी ॥ तुम साथें थयो बहु नेह ॥ गु ॥ मू० ॥ १ ॥ माहरे मंदिर हो राज, जोतां हशे जे वाटडी जी ॥ वली आवशुं इण पुरमांहे ॥ गु० ॥ दिशि खाव्या हुं हो राज, इहां तुम शुं मलीजी ॥ घणुं जाणजो थोडा मांहि ॥ गु० ॥मू०॥२॥ अम लायक हो राज, होय कारिज जि कोजी ॥ लखी मोकलजो तुम्हे तेह ॥ गु० ॥ अमथी अंतरहो राज, तुमे मत रा खजो जी, थें तो नवल निवाहो नेह ॥ गु० ॥ मू० ॥ ॥ ३ ॥ तिहां रह्या पण हो राज, अमें हुं तमारडा जी, तुमे कीधा महोटा अम्म ॥ गु० ॥ माहरे नयरे हो राज, किवारे पधारशो जी, जो न आवो तो तुमने सम्म ॥ गु० ॥ मू० ॥ ४ ॥ एणी पुरमांहे हो राज, अम सुखीया थया जी, रखे मूको कदीरे वी सार ॥ गु० ॥ तुम जहेवा हो राज, धर्म सनेही नवि मीले जी, कुंण मलशे अमयी एवार ॥ गु० ॥ मू० ॥ ५ ॥ जिनयात्रा हो राज, समयें संभारशुं जी ॥ तुमे साह जी सुगुण विश्राम ॥ गु० ॥ एम कपटी हो राज, करे खटपट घणीजी ॥ सूणी वो ल्यो धृपजसेन ताम ॥ गु० ॥ मू० ॥ ६ ॥ किहां चा लशो हो राज, करी प्रीत एवडी जी ॥ मूखे कहो

ठो जी जाशुं हवे ॥ गु० ॥ अम उपरें हो राज, तद
जाउ सुखें जी ॥ पण चलण न देशुं हेव ॥ गु० ॥
मू० ॥ ७ ॥ फरी गोठडी हो राज, किहांथी तुमार
डीजी ॥ ए तो वनतां वनी गइ गोठ ॥ गु० ॥ अमे
कोइथी हो राज, नहीं तो करां प्रीतडी जी, जे पछ
ने न पडे कोठ ॥ गु० ॥ मू० ॥ ८ ॥ तुमे स्वामी हो
राज, अठौं अमीरस वोलता जी ॥ तेणें माहरुं हेलव्युं
हीर ॥ गु० ॥ नहिं तो कोइने हो राज, धीरुं केम
वांहडी जी ॥ अमें श्रावक धर्मी धीर ॥ गु० ॥ मू० ॥ ९ ॥
अमें तमने हो राज, दीधी एक पुत्रिका जी, कि
स्यो पडदो राख्यो नांहि ॥ गु० ॥ एम निःस्नेही हो
राज, तुमे पर देशीया जी ॥ थोठो हली मली छेह
दूसाह ॥ गु० ॥ मू० ॥ १० ॥ नली जाणी हो राज,
तुमारी प्रीतडी जी, हवे चालो ठो माया लाय ॥
गु० ॥ सुंदर मंदिर हो राज सवि, छे तुमारडां जी
तुमें रहो रहो महाराय ॥ गु० ॥ मू० ॥ ११ ॥ तव
कडडन हो राज, बोल्यो हसी माहनुं जी ॥ हव
केने नहीं छे काम ॥ गु० ॥ अमें सागर हो राज,
वेपारी वाणीया जी ॥ अठे काज बहुनां धाम
॥ गु० ॥ मू० ॥ १२ ॥ वली मिलशुं हो राज, जो

वें खरो नेहलो जी ॥ पण हवणां तो दीजें शीख ॥ गु० ॥ सत सखें हो राज पसरजो साहिवाजी, तुमें जीवजो कोडि वरीस ॥ गु० ॥ मू० ॥ १३ ॥ वेसी तव सार्थपें हो राज, सोंपी निज पुत्रिका जी ॥ तस शीखडी दीधी ताम ॥ गु० ॥ शुन शुकने हो राज, तदा संप्रेडिया जी, सहु साजन करे गुणग्राम ॥ गु० ॥ मू० ॥ १४ ॥ वेसी रथमें हो राज, रुद्रदत्त निजपुर चालियाजी ॥ कही आठमी हो राज, स सूंणी सोहामणी जी ॥ ए तो मोहनविजयें ढाल ॥ गु० ॥ मू० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

ऋपिदत्ता रुद्रदत्त विहु, पंथे वहे सोत्साहि ॥ अनुक्रमें पहोतां हेज नरी, रूपचंद्रपुरमांहि ॥ १ ॥ कुटुंव सयल हर्पित थयुं, रुद्रदत्त आव्यो जेण ॥ सार्थे ऋपिदत्ता निरखी, हरख्यो अतिहिं तेण ॥ २ ॥ सासूनेपाये पडी, सासू सुकुलिणी ताम ॥ वडां वडेरां आदिदें, सहुने कीध प्रणाम ॥ ३ ॥ वेठी मंदिर हेज नरी, कीधां नोजन सार ॥ रुद्रदत्त पण कपटगृह, जम्यो हस्यो तेणीवार ॥ ४ ॥ अतिप्रीतें पति प-

ज्ञिनी, जोगवे जोगप्रकाश ॥ दो गुंदक सुरनी परें, विलसे लब्धि विलास ॥ ५ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

गढडामांहे फूले सहीउं हाथणी ॥ ए देशी ॥ आचार घरना सा तव देखीने, मनडामां शोचे वारं वार ॥ माहरे प्रीतमीए नेसहि तो कैतव केलव्युं, हूंतो श्रावक केरी बालिका, एहोनो तो महेश्वर आचार ॥ मा० ॥ १ ॥ सहितो ए कपटी श्रावक हो यने परणीवाहीने एणे कूड ॥ मा० ॥ जली हूं रे जुलवाणी दीसुं एहथी, धुरथी में नवि जाण्युं कूड ॥ मा० ॥ २ ॥ धूतारे नाखी मुजने फंदमां, तेहनो हुं केहो करीश उपाय ॥ मा० ॥ माहरुने पिहर रह्युं वेगलुं, डुःखडुं ए जाइ केहने कहाय ॥ मा० ॥ ३ ॥ सुरतरु जाणी में वाथ जरी हती, थई नि वड्यो नाह बबुल ॥ मा० ॥ दीसे ठे वाहेर फररा फूटरा, जीतर सुरपति मदिरा मूल ॥ मा० ॥ ४ ॥ कर तो में होंशे करी घाल्यो हुतो, जाणीने लीली नागरवेल ॥ मा० ॥ पण तो ए निवडीयों कौञ्च वेलडी, खलहुंती आवी मलीयो खेल ॥ मा० ॥ ५ ॥ न मिटे क्यारें विधिना अक्षरा, पडयुं पानुं कपटी

हाथ ॥ महारो धर्म हुं केम परे करुं, अहो अहो श्री जिनवर जगनाथ ॥ मा० ॥ ६ ॥ केम करी रा खी शकीयें जावती, एकण म्यानमें बे करवाल ॥ मा० ॥ प्रीतम पहचे अवसर आवियो, नीरखी स चिंते ते सुकुमाल ॥ मा० ॥ केम तमें वनिता आ मण दूमणां, आवो ठो माहरे नयणें आज ॥मा०॥ कीधेजी निहेजें तुमने हूहव्यां, मुक जाणी तुमे दा खो तेह समाज ॥ मा० ॥ ८ ॥ आपणे स्वामी ठे कहो केहनी, पहेरीने नूपण नव नव रंग ॥ मा० ॥ कपूरकेरा तूमें करो कोगला, खेलो साहेली केरे सं ग ॥ मा० ॥ ९ ॥ हियडो मेलोरी पीहरतणो, म त तुमें आणो आतमराम ॥ मा० ॥ निवहो आपण लें करे लेश्ने, आपणा मंदिर केरुं काम ॥ मा० ॥ १० ॥ यौवनलटको दहाडा चारनो, अवसर केहो धर्मनो आज ॥ मा० ॥ आगलें सुख दुःख केणें दी ठडुं, केणे वली दीठो धर्मसमाज ॥ मा० ॥ ११ ॥ के म करी कीजे दोहिलो आतमा, पामीने मानवनो अवतार ॥ मा० ॥ मूरख जे कोई कांई लेहेता नथी, ते नव लेवे सरस आहार ॥ मा० ॥ १२ ॥ एहवा सांजलीने पीयुना वोलडा, हारीने वेठी धर्म रतन्न ॥

ततक्षण लागे संगति नीचनी, जो करी रहीयें को
डी यतन्न ॥ मा० ॥ १३ ॥ सवृक्षपुष्पसौरभ्य, दान
दानैकतत्परः ॥ शवेन मिलितो वायुर्दौर्गंध्यं किमु ना
श्नुते ॥ दुष्ट मिथ्यातणी पियुना प्रसंगथी, मानव जो
जो कर्मनां काम ॥ मा० ॥ पीयूष केरुं गरल थई
गयुं, ए ए मोह महाबलधाम ॥ मा० ॥ १४ ॥ आग
ल होशे सवि वातो नली, हर्षशुं निसुणो बाल गो
पाल ॥ मा० ॥ मोहनविजयें नांखी हेजशुं, अनि
नव नांखी नवमी ढाल ॥ मा० ॥ १५ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

सुख नोगवतां विविहपरें ऋषिदत्ताने एक, पुत्र
रत्न हूउ नलो, सुंदररूपविवेक ॥ १ ॥ कीधा उ
त्सव नवनवा. दीधां जाचक दान ॥ नात संतोषी
आपणी, वहेंच्यां फोफल पान ॥ २ ॥ नाम ठव्युं
वरमुहूरतें, तास महेश्वरदत्त ॥ रूपवंत विद्यानिलो
निरुपम गुणसंसक्त ॥ ३ ॥ हूउ तेह अनुक्रमें,
यौवनवय उन्मत्त ॥ सहू वखाणे नयरमें, धन्य महे
श्वरदत्त ॥ ४ ॥ नमया सुंदरीनो हवे, सांनलजो
अधिकार ॥ अति रसीली ठे कथा, शीलोपरि सु
विचार ॥ ५ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

नानो नाहलोरे ॥ ए देशी ॥ पीयर इभिदना नामे रे भाइ छे सहदेव, साजन सांजलो रे ॥ ए आंकणी ॥ तस दयिता छे सुंदरी रे, जेहवी सिंधुसुता ससमेव॥१॥ अनुक्रमें गर्ज धस्यो तिणे रे, सूचित सुपनाहार ॥ सा०॥ जेम जेम गर्ज वधे जलो रे तेम तेम हर्ष अपार ॥ सा० ॥ २ ॥ अति न हसे अति नवि सुवे रे, अति चपल न चाले चाल ॥ सा० ॥ अति वरकी बोले नहीं रे, अति घणुं न करे ख्याल ॥ सा० ॥ ३ ॥ वात जो पुंजे गर्जिणीरे सुत होय कुब्ज के अंध ॥ ॥ सा० ॥ कफवत जोजने पांकुरोरे, पीतवंत पांकु प्रबंध ॥ सा०॥ ४ ॥ अति लवणें ऊगबल हरे रे, अति शीतलें होय वाय ॥ सा० अति ऊनुं हरे वीर्यने रे, अतिकामें गर्ज हणाय ॥ सा० ॥ ५ ॥ दिवसे जो सूवे गर्जिणीरे, निज़ालु होय जात ॥ सा० ॥ नयनांजन थी चीपडो रे, रुदने गलित ऊगवात ॥ सा० ॥ ६ ॥ स्नान लेपन ऊःशीलियोरे, कुष्टि तेलायाम ॥ सा० ॥ हसवाथी रसना तालुं रे, दंतोष्ठादिक श्याम ॥ सा०॥ ७ ॥ चपलगतें चंचल हुवेरे, शुष्काहारें मूढ ॥ सा० ॥ होवे प्रलापें अतिवके रे, अति निसुणे नि

रे ॥ सूंढे ग्रहीने महीरुह आंछटे रे ॥ तव तिहां बीहती सुंदरी नारी, पीयुने करती बहु मनूहार, सुंदर तरुनी गायें रे, तुमें हूीप राखजो रे ॥ २ ॥ गजने पीयुडे आण्यो रे ते तरु हेठले रे ॥ लांबी सांकल रे, भूतल खलभले रे ॥ मदझर राख्यो तिहां झीझीकार, भामिनी भासे हो भरतार, करिवरियाने गांफो रे, जइ जल झीलीएं रे ॥ ३ ॥ प्रमदा पीयुडो बेहु रे, गजथकी उतस्यां रे ॥ नमया तटनी साहमां संचस्यां रे ॥ जिहां करे हंस मयूर टकोर, जाणीयें रण झण रणके जोर, नूपुरियां अति रुडां रे वहे तेह वजाडती रे ॥ ४ ॥ जलना पूरमां होवे रे बहुल पंपोटडा रे, सूर्यना दीधिति रे, फल हले रुअडा रे, एतो मानुं तटिनी कंठें हार, तेहनां दीपे हो नंग सार ॥ हरि हरियाली उंढी रे, जाणीयें उंढणी रे ॥ ५ ॥ मत्स्यना पुछथी उडे रे, जलना बिंडुवा रे ॥ झीणा झीणा श्रेणें जूजुआ रे, एतो मानुं साख्यां केशे केश, उज्ज्वल दधिसुत हो सुविशेष, सारसीआला पाले रे सारसुडा चूगे रे ॥ ६ ॥ नीरना पुरमें मानुं रे अंबुज उफण्यां रे, गुणथी लीना मधुकर रणझण्या रे ॥ एहवी सा न

दी सुंदरी देखि, पामी मनमां दृर्ष विशेष ॥ धसमसी ने ते पेठी रे, झीलवा कारणें रे ॥ ७ ॥ सजनी सा हेली संगें रे किन्नरी आंटती रे, मांहोमांह जल निर्मल छांटती रे ॥ के म्रहे करथी केरव कोप मुख, द्युतिये देती हो इंडुने दोष॥ काजलीयाली नेणे रे, नर्मदा हारथी रे ॥ ८ ॥ तरती आवडती पडती रे केश्क उगती रे, जाणीए पन्नगी जल अंगूठथी रे ॥ एम तिहां रमती रसजरी नारि ॥ त्रट त्रट त्रूटे मोतीहार, मोतीयडांने लोजें रे सफरी तरव रे रे ॥ ए ॥ रमत रमतां थाकीरे सघली सुंदरी रे, कांठे उन्नी जेहवी पुरंदरी रे ॥ सुंदरी नीचोवें तिहां वेण, फणिपति जीत्यो जाणीए जेण, रेसमीयाली पहेरी रे वीजी पटोलियो रे ॥१०॥ ठमके ठमके चाली रे प्रणमे नाहने रे, स्वामी पूरवो तमे ए उत्साहने रे ॥ पण वली होंश छे मुजने एक, पूरो तो कहियें हो सुविवेक ॥ तमने जो नवि जांखुं रे तो केहने कहुं रे ॥ ११ ॥ माहरो जोरो चाले रे पीयु तुम आगलें रे, जेणी रीतें वालुं तेम तेमही वले रे ॥ एम कही सुंदरी करी मनोहार ॥ तव तिहां बोल्यो हो जरतार, हियडलानी वातो रे, नारी मुज

ने कहो रे ॥ १२॥ पैसो खरचे थाशे रे तो होंश पू रशुं रे, बीजुं गुणवंती वल नहिं दूरशुं रे ॥ तेणे एम निसूणी पीयुनी वाणी, बोली सुंदरी हो जोडि पाणि ॥ नाहलीया एणे तीरे रे एक पूर वासीये रे ॥ १३ ॥ ऊंचा ऊंचा रूडा रे महोल बनावीये रे, रमवा अहोनिशि इण तटें आवीयें रे ॥ एवी इछा मुफ मनमांहि,पूरो पीयुडा हो सोत्साहि ॥ प्रीतमीए तिण वेला रे, आरंज आदर्यो रे ॥ १४ ॥ केटला दिनमां तेणें रे नयर वसावीयुं रे, रुडा रुडा लोकने वास वसावीयुं रे ॥ एतो कही सरस अग्यारमी ढाल, मोहनविजयें हो सुविशाल ॥ सरसाली अति मीठडी रे, आगल वातडी रे ॥ १५ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

वस्युं नर्मदापुर जलुं, नर्मदा तटने तीर ॥ उज्वल जिनमंदिर कर्यां, जिम क्षीराब्धि दंनीर ॥ १ ॥ जिन मूर्त्तिनी स्थापना, कीधी लाज निमित्त ॥ जाव सहित दंपती करे, नवली पूजा नित्त ॥ २ ॥ काशमीरज चंदन कुसुम, धूप दीप उपचार ॥ जक्ति विशेषे स्वारथ करे, ए श्रावक आचार ॥३॥ एम डोहद पूरण कर्या, नारीना जव रंग ॥ सहदेवें सु

परें किया, अधिकाधिक उछरंग ॥ ४ ॥ गहृवे र हेतां अनुक्रमें, गर्जतिथि थइ जाम ॥ सुंदर नारी एं प्रवर, पुत्री प्रसवी तांम ॥ ५ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

मोतीयारां हे कुमख कूमखां ॥ ए देशी ॥ अथवा घरे आवोजी आंबो मोरीयो ॥ ए देशी ॥ सहदेवने दीधी वधामणी, घरें प्रसवीजी पुत्री रतन्न ॥ सही हूवां ए रंग वधामणां, तव हरख्योजी शाह शिरोमणि, अति पुलकित हूउं तन्न ॥ स० ॥ १ ॥ मणि सोनुं रुपुं सामटुं, तस दासीने कीध पसाय ॥ स०॥ कस्यां उरण जाचक लोकने, जेम आतम शकतें देवाय ॥ स० ॥ २ ॥ कस्यो उत्सव पुत्रीनो अति नवो, जेम अंगज आवे कराय ॥ स० ॥ वली घर घर गुडी उछले, घर आंगणे गीत गवाय ॥ स० ॥ ३॥ डुर्वानां तोरण बांधीयां, वीच सुरतरुदल लहकंत ॥ स० ॥ कुंकुमना करतल दिधला, जला फूल फगर महकंत ॥स०॥४॥ मणि मोतीनां हो टोरें फूंबखां, गोखें चंदन चरीयां माट ॥ स० ॥ भेरी भुंगल तव हडहडे, डुडी गुंजाला गुंजे थाट ॥ स० ॥ ॥ ५ ॥ जन्ममहोत्सव पुत्रीतणो, सहदेवें कीधो वि

शेष ॥ स० ॥ जिन साजन सवि संतोषियां, दिन उचित उचित सुलेष ॥ स० ॥ ६ ॥ सहदेव कुटुं ब ज्ञणि कहे, तमें सांज्ञलो माहरी वात ॥ स० ॥ ज्यारे सुता एहनी मातने, हूंती गर्जें विमल विख्या त ॥ स० ॥ ७ ॥ त्यारें एहवो डोहलो उपन्यो, ए हेनी जननीने अहो वीर ॥ स० ॥ गयंवरने खंधें चढी करी, जइ खेलुं हो नर्मदा तीर ॥ स० ॥ ८ ॥ वली तेणें तटें नगर वसाविएं, अतिरूडुं नर्मदा नाम ॥ स० ॥ जो मनमां आवे सहु तणा, जोउं दोहद गुण अज्ञिराम ॥ स० ॥ ए ॥ हवे कहो तो ए पुत्री नुं दीजीयें, वर नर्मदासुंदरी नाम ॥ स० ॥ दोहद सघला में पूरिया, घरे प्रसवी पुत्री ताम ॥ स० ॥ १० ॥ कहे कुटुंब सयल हर्षं करी, एहनुं एहिज उ त्तम नाम ॥ स० ॥ नाम नर्मदासुंदरी स्थापिने, सहू पहोता निज निज धाम ॥ स० ॥ ११ ॥ सा सुंदरी पुत्री ज्ञणी, लेइ गोद रमाडेसुगेल ॥ स० ॥ सिंचे पय पाणी पानथी, जिम असीए सुरतरु वेल ॥ स० ॥ १२ ॥ आज्ञूषण दिव्य अंगें ठव्यां, फ रके टोपी जरकशी शीष ॥ स० ॥ वेउ पाये घूघरी घमघमे, देखी जननी पामे हीस ॥ स० ॥ १३ ॥

घर आंगणे दोडे घुंटणे, क्षण रोवे क्षण हसे तेह ॥ स० ॥ कहे मुखथी खमां खमां, मावडी करि क टि तटे आणी नेह ॥स०॥१४॥ वली निर्मल नीरें न वरावती, बुचकारती माय जे मयाल ॥स०॥ मोहन विजयें वर्णवी, ए कही बारमी ढाल ॥ स० ॥ १५ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

वाधे नमया सुंदरी, रुपरंग गुण प्रेम ॥ ए रज नीपति बीजनो, दिन दिन वाधे जेम ॥ १ ॥ जे णें बालपणायकी, जोया ग्रंथ अनेक ॥ लक्षण शा स्त्र तणी थई, वरदायी सुविवेक ॥ २ ॥ निर्विकार जस नयन युग, रसना सुधा सरीस ॥ हियडे विषय नी वांछना, सुपने नहिं सुजगीश ॥ ३ ॥ योवन जल क्युं देह उपरें, ऊंच्युं सुंदर रूप ॥ मुखपर निवसी अ रुणता, उचित पयद अनूप ॥ ४ ॥ हांसूं अधरें बीश मे, लज्जा लंगर पाय ॥ सा नमया योवन नणी, मि ली भुजयुग सुविभाय ॥५॥ हवे श्रोताजन सांभलो, भावी कथा विचार ॥ मन माने ते कीजीए, पण हो य ते होवणहार ॥ ६ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

सनेही वाला लागो नेह न तोडो ॥ ए देशी ॥
हवे ते ऋषिदत्तानारी, सुणी ते नमया सुंदरी सारी रे ॥ सनेही क्यारें मलशे मुज जिनधर्मी ॥ करे आलोच एम गुण वरमी रे ॥स०॥ में एहवुं एम शुं कीधुं, जे जैनधर्म तजी दीधूं रे ॥ स० ॥१॥ निज कुलमार गथी ए चूकी, जिनभक्ति में करवी मूकी रे ॥ स० ॥ वली नाहने वचने भूली, तजी कल्पमंजरी ग्रही मूली रे ॥ स० ॥ २ ॥ वर समकित रतन में खोयुं, जुउं मिथ्या काच वलोऊं रे ॥ स० ॥ तजी अमीय महामद पीधूं, वड ठेदी ओट्टीपण कीधूं रे ॥ स० ॥ ॥ ३ ॥ उन्मूली सूरतरु ओप्यो, तिण स्थानक विष तरु रोप्यो रे ॥ स० ॥ शुभकुंभि कुंभस्थल वेसी, थइ चरणचारी हवे एसी रे ॥ स० ॥ ४ ॥ तजी संगति हंस सुरंग। कर्यो काक कुटिल प्रसंग रे ॥ स० ॥ भखुं मानसरोवर गंभी। जल विहार क्रीडा सांभी रे ॥ स० ॥ ५ ॥ भलो मोतीनो हार निवारी, गले गुंजमाला दिलधारी रे ॥ स० ॥ सहि मृगमद पुंज विपोही, हवे अचिकर निकरें मोही रे ॥ स० ॥ ६ ॥ वर श्रावक कुलमें आवी, तो एसी कुबुद्धि

कमावी रे ॥ स० ॥ घणुं धर्मथी चाली आडी, निज कुलने लाज लगाडी रे ॥ स० ॥ ७ ॥ घर समकित रत्न में आएयुं, पण स्थिर राखी नवि जाएयुं रे ॥ ॥ स० ॥ एक मिथ्यात्वी समकितधारी, ए बेहु में छे अंतर भारी रे ॥ स० ॥ ८ ॥ कीहां मंदर सरसव दाणो, कीहां जलनिधिकूप अयाणो रे ॥स०॥ किहां नृपप्रमदाने दासी, किहां ग्रामीण किहां पुरवासी रे ॥ स० ॥ ९ ॥ किहां अलसिक ने अहि राजा, किहां ढक्का ने घन गाजा रे ॥ स० ॥ किहां मृगपतिने किहां शृगाल, किहां बावल सुरतरु डाल रे ॥ स० ॥ १० ॥ किहां वायस ने किहां केकी, किहां अविवेकी ने विवेकी रे ॥ स० ॥ किहां दिन करने किहां खजुर्ज, किहां आदर ने किहां दूर्ज रे॥ ॥ ११ ॥ किहां कृपण ने किहां धनदाता, किहां कष्ट अने किहां सुखशाता रे ॥ स० ॥ किहां रंक ने किहां पुरराव, किहां शोचना शुरू स्वभाव रे ॥ स० ॥ १२ ॥ किहां रजनी ने किहां दीस, किहां प्रेत ने किहां जगदीश रे ॥ स० ॥ किहां मणिरत्न ने किहां लघु चीडी, किहां कुंजर ने किहां कीडी रे ॥ स० ॥ १३ ॥ तिम जगमें समकित सरिखो,

कोइ वीजो पदारथ न नीरख्यो रे ॥ स० ॥ में अतिहीं कस्यो अविचास्यो, जे जैनधर्मने निवास्यो रे ॥ स० ॥ १४ ॥ मुझ माता पिता जो ए लहेशे, तो कांइनुं कांइ कहेशे रे ॥ स० ॥ नहीं रही होय वात ते छानी, थइ गइ होशे कांना कानी रे ॥ स० ॥ १५ ॥ सही नाखशे पितर ते वाढी, मूने पत्र सटितपरि काढीरे ॥ स० ॥ में रे कर्म कस्यां शां पहेलां रे, थइ धर्मथकी अलगी वहेला ॥ स० ॥ ॥ १६ ॥ गुणहीन कुटिल अटारी, मुझ सरिखी नहिं कोइ नारी रे ॥ स० ॥ ए तेरमी ढाल सवाइ, कहे मोहनविजय वनाइ रे ॥ स० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

ऋपिदत्ता करकमल पर, स्थापी वर मुखचंद ॥ नीर टवके नेणथी, जे पुराणे संद ॥ १ ॥ रुद्रदत्त दीठी एहवे, आव्यो नारी नजीक ॥ भांखे किम तुम भामिनी, भूतल वली हो लीक ॥ २ ॥ उंचुं जूओ अंगना, निरखो नीचूं केम ॥ दीसे छे मुख दा झडे, शशीकर उदयो जेम ॥ ३ ॥ तव वोली तरुणी तिसे, रे रे पिउ प्राणेश ॥ अंगज सुंदर आपणो, पाम्यो योवन वेश ॥ ४ ॥ मुझ मांधवने वालिका,

नमयासुंदरी नाम ॥ तेपण थइ नवयौवना, अप्सरा जेम अनिराम ॥ ५ ॥ आपण श्रावक होत तो, तो ते नमया श्राल ॥ परणावत पीयु आपणा, पुत्र नणी ततकाल ॥ ६ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥

गाढा मारुजीहो नजक छडे जाठी चगें, अम ली पीवे कलाल रे। गाढामारु अति उन्मादी माह रो साहिबो ॥ ए देशी ॥ मोरा पियुजी आपण मि थ्यात्वी वाणीया, ए सावय लोक रे ॥ मो० ॥ लेख लख्यो ते लाजीयें, एहमां-न को संदेह रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मोरा० ॥ पुत्रने ते पुत्रीनणी वरवानो नहिं योग रे ॥ मो० ॥ १ ॥ ते नमया आपण घरे, आवे तो पूरण नाग्य रे ॥ मो० ॥ हुं पण जाइ नवि शकुं, लाधतो कोइ नथी लाग रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥ २ ॥ तुमने तिहां जो मोकलुं, तो पण सरे नहिं काम रे ॥ मो० ॥ ते तुमने धारे नहीं, जाणो छो गुणधाम रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥ ३ ॥ तुमें छो माणस मोटिका, तुमची केही वात रे ॥ मो० ॥ तुम गुण जाणी बालिका, किम नवि परणे जात रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥ ४ ॥ तुम जेहवा धूरत तणो नाणे

केम विश्वास रे ॥ मो० ॥ शेकीने जे वावियें, लहि
जें केम कण तास रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥ ५ ॥
कीधा तस तुमें दोहिला, तेहनी हवे शी आशरे, दा
ज्यो जे पय पीवतां, ते फूंकी पीवे ठास रे ॥ मो० ॥
ले० ॥ मो० ॥ ६ ॥ वचन सुणी वनिता तणां, बोल्यो
रुद्रदत्त नाम रे ॥ मो० ॥ जे होणी ते हो गइ, तेह
नुं हवे शुं नाम रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥ ७ ॥ जे
तिथि गइ ते ब्राह्मणा, वांचे नहीं नियमेव रे ॥
मो० ॥ कीधुं ते नवि शोचीए, खरुं ते होशे ते हेव
रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥ ८ ॥ होशे नमया वाल
नो, आपणा सुतथी संबंध रे ॥ मो० ॥ तो अणचिं
त्युं हो थशे, पाणिग्रहण ससंध रे ॥ मो० ॥ ले०॥
मो० ॥ ए ॥ माणस हाथे न वातडी, हाथे विधाता
नाथ रे ॥ मो० ॥ जावीथी डाह्यो नहि को, न मटे
लेख लख्या जेह रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥ १० ॥
जो ते नमया सुंदरी, जो नहीं परणे जात रे ॥ मो०॥
तो शुं रहेशे कुंवारडो, एशी ठाली वात रे ॥ मो०
॥ ले० ॥ मो० ॥ ११ ॥ कहे रुषिदत्ता नाथने, ए स
हि साची वाच रे ॥ मो० ॥ दंत दे ते चाववा, दे ठे
ते साची वात रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥१२॥ एतो

प्रत्यक्ष पारखुं, जातीनो संसार रे ॥ मो० ॥ तमे मि थ्यात्वी हुं श्राविका, केम थयां स्त्री नरनार रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥ १३ ॥ जे लख्या विधियें अ क्षरा, ते कुण टाले कत्ति रे ॥ मो० ॥ गृहवे रमतो आवीयो, पुत्र महेश्वर दत्त रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥ १४ ॥ कर जोडी कहे तातने, करो छो केहो वि चार रे ॥ मो० ॥ केम सचिंती मुज मावडी, कहो मुजने एणी वार रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥ १५ ॥ केणे डुहवी एवडी, के केणे दीधी गाल रे ॥मो०॥ हव करी मांड्युं पूछवा, जननी डुमनी नीहाल रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥ १६ ॥ जाखशे रुद्रदत्त बोल डा, सांजल्य सुत सुकुमाल रे ॥ मो० ॥ जांखी मनो हर चौदमी, मोहनविजयें ढाल रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

रे वत्स मामो ताहरो, नाम जलो सहदेव ॥ तस घर पुत्री नर्मदा, अछे सयल गुण मेव ॥ १ ॥ काने निसूणी नर्मदा, तव माताए आज ॥ तेहने तुज प रणाववा, वांछे छे माताज ॥ २ ॥ हुं तिहां नवि जा ई शकुं, में तिहां कैतव कीध ॥ यह श्रावक तुज

मायने, परणी जग प्रसिद्ध ॥ ३ ॥ ते तो पुत्री तुझ
तणी, कहो सुत सोंपे केम ॥ तुज जननी ते शोकमें,
चिंतातुर छे एम ॥ ४ ॥ पुत्र कहे हुं तिहां जइ, प
रणीश करी प्रपंच ॥ अम कुल एहिज रीत छे, तेह
मां शी खलखंच ॥५॥ शकट भरी बहु वस्तुथी, तुरत
महेश्वरदत्त ॥ चाल्यो आव्यो अनुक्रमे, वर्द्धमान
पुर छत्त ॥ ६ ॥ मामाने दीधी खबर, जे आव्यो भा
णेज ॥ ते निसुणी घर तेडियो, ईषत आणी हेज॥७॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

आव्य धूतारा नंदनारे, तें धूत्युं गोकुल गाम ॥ ए
देशी ॥ हिये आलिंगीने मळ्या जी, मामो ने भाणे
ज ॥ केम कृपा करी पत्तन एणे, जी भांखो आंणी
हेज ॥ १ ॥ आव्य धूतारा रुद्रना रे, तुं कुशल कहे
वात ॥ एक वेला ताहरे तातें, देखाड्या पराक्रम ॥
तुमें पण जे गेहे पधाऱ्या, शुंजी करशो तेम ॥ २ ॥
अमे एकज वार धूताणा, हवे धूताशुं केम ॥ जाण्यो
ग्रह पीछे नहिं क्यारे, छे ऊखाणो एम ॥ ३ ॥ आ०॥
चक उपरे काठनी हांडी, चढे एकज वार, तारक
वे हंस भोलाणो, मोती न चूगे फेर ॥ आ०॥ ४ ॥
हमणां तो आपणे छे सगाइ, मया करो महाराज ॥

एक सदन शाकिनी पण ठोडे, आणी संबंधनी ला
ज ॥ आ० ॥ ५ ॥ चक्री पण तेम चक्र न मूके, बांध
वताने जेम ॥ पोतानुं वली पारकुं प्रीछे, पशुउं पण
ए तेम ॥ आ० ॥ ६ ॥ तुमें जे पुरमांहि वसो छो
साचुं कहो ससनेह, छे सघलां ए लोक धूतारां, के
तुमारुं गेह ॥ आ० ॥ जुंगाउं प्राप्ति अन्य व्यापि
रे, शुं कांइ नवि थाय ॥ जे एम मूसे लोक पराया,
केम ए आवे दाय ॥ आ० ॥ ॥ ७ ॥ नीचे आननें
सांजली बोल्यो, मामाजी महाराज ॥ ए उवेखो
कांइ अलेखे, आंगण आव्या आज ॥ आ० ॥
॥ ए ॥ एक झूंडे शुं सघलां झूंडां, जाणो छो देव
दयाल ॥ आंगुलि पांचे होवे न सरखी, कोइ मोटी
कोइ बाल ॥ आ० ॥ तात सरीखो जात न जाणो,
केइ धनी केइ रंक ॥ रावण मंदिर पुंजतो वायु,
हनुए लीधी लंक ॥ आ० ॥ ११ ॥ वसुदेवने कंस
नरेशे, राख्यो कारागार ॥ काढ्यो तिहांथी पुत्र
मुकुंदे, मातुल दीध प्रहार ॥ आ० ॥ १२ ॥ न
होवे पुत्रमें ताततणा गुण, मानी ल्यो निर्धार ॥ दो
जीहो विपधी जन पीडे, कीधो मणि उपकार ॥ आ०
॥ १३ ॥ खारो पयोनिधि मानव जाणे, पुत्र शशी

सुधाकंद ॥ जो सघलाए होवे सरखा, तो जगे केम दिणंद ॥ आ० ॥ १४ ॥ मामा तुमथी माहरे तातें, खाव्या दीसे दोष ॥ पण तुमने थावुं घटे जारी, आणीजे नहिं रोष ॥ आ० ॥ १५ ॥ जंघ उघा डतां पोता केरी, पोताने आवे लाज ॥ हूश ते हूश पण हवे मोसुं, माफ करो महाराज ॥ आ० ॥ १६ ॥ तात अमारो हुंतो मिथ्यात्वी, पण तुम वेहेन प्रसं ग ॥ बीजा धंधा मूकीने हवे, जैन धरमथीरंग ॥ १७ ॥ हरख्यो मामो ते निसुणीने, उलस्यो अंगो अंग ॥ मातुल मलीयो जाणेजथी त्यारे, कोमल दीयुं आलिंग ॥ आ० ॥ १७ ॥ वस्तु वखारे आणी उ तारी, सुंदर जोजन कीध ॥ वेंची साटी तेह वसा णुं, दाम सवाया लीध ॥ आ० ॥ १ए ॥ मामाथी म ल्यो एकंगो, जाणेजो धूतधमाल ॥ मोहनविजयें रु डी जांखी, पन्नरमी ए ढाल ॥ आ० ॥२०॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

रंज्यो तस गुण देखिने, मातुल चित्त अनंत ॥ पूछे निज जाणेजने, तेडीने एकंत ॥ १ ॥ रे वत्स तुजने जे रुचे, मागी ले तुं तेह ॥ संकोचाइश मा सुजग, ए छे ताहरुं गेह ॥ २ ॥ इम निसुणी वोले

तुरत, हुती महेश्वरदत्त ॥ स्वामी तुम्म पसायथी, सघली ते संपत्त ॥ ३ ॥ जो करुणा पूरण करो, इत्रि त जो थो मूझ ॥ तो ए नमया सुंदरी, परणावो कहुं गूझ ॥ ४ ॥ एहज अर्थेहुं इहां, आव्योतुं महारा ज ॥ हवे जेम जाणो तेम करो, बांहि ग्रह्यानी लाज ॥ ५ ॥

॥ ढाल सोलमी ॥

गइती पीयरीएने आविती रीसाइ ॥ ए देशी ॥ वाणी सुणीने बोल्यो तिहां सहदेव, तुंतो मिथ्यात्वी अमें श्रावक सुसेव ॥ महारा जाणेजा हो राज ए हेवुं म बोल ॥ १ ॥ तुझजनक गयो अमने नोलाय, ते उपरें पुत्री केम देवराय ॥ म० ॥ एक वेला दा झयो डुधथी जेह, छास जणी फुकी पीये तेह ॥मा०॥ विषधरथी जे बीहिनो कोय, दोरडीये कर घाले जोय ॥ मा० ॥ २ ॥ विलखे वदने तव कहे जाणेज, एम एकाएक केम तजो हेज ॥ म० ॥ तुम जगिनी तुं पयोधर खीर, में पीधुं थइने धीर ॥ म० ॥ ३ ॥ ते केम होइश मिछादीठ, पछें तो तुमे छो सु गुण गरिठ ॥ म० ॥ तुमे जाणो जे खरुं अहो हित चान, गज केम आवे झाल्यो कान ॥ म० ॥ ४ ॥ मा

तुलें नाणेजसुं चारु ठांह, नर्मदासुंदरीनो कीधो वि वाह ॥ म० ॥ परण्यो सयल मनोरथ सिद्ध, काचित दीवसें सीखडी लीध ॥ म० ॥ ५ ॥ नर्मदासुंदरी लेइ संग, अनुक्रमे आव्यो निजपुर खंग ॥ म० ॥ मात पिताना प्रणम्या पाय, पगे लगाडी सा हित लाय ॥ म० ॥ ५ ॥ रुषिदत्ताए नमया बाल, दीठी सुपरें नयणें निहाल ॥ म० ॥ कुशलप्रश्न पूछ्या तेणी वार, सज थइ कह्यो सयल विचार ॥ म० ॥ ७ ॥ नर्मदासुंदरी महेश्वरदत्त, नोगवे नोग विविध बहु नत्त ॥ म० ॥ दंपती प्रीति परस्पर लीन, जेहवी प्रीति होवे जल मीन ॥ म० ॥ ७ ॥ एकदा नर्मदा विनवे शाह, स्वामी जैनधर्म वाह वाह ॥ मोरा सहे जाहो नाह, कुमति निवार ॥ ए आंकणी ॥ जिनवर नक्ति करे निशदीव, दीठे मूरती सुप्रसन्न होय जीव ॥ म० ॥ ए ॥ जिननी नक्ति रावण ऐकंत, तीर्थंकर पद आप्युं कहंत ॥ म० ॥ जिनदरिसणथी हूये उद्धार, देश अनारजें आर्द्रकुमार ॥ म० ॥१० जिनपूजा फल अधिक अनंत, शिवसुख साधन छे ॥ म० ॥ जेणे जिननक्ति न कीधी सार, तो तस मानव अवतार ॥ म० ॥ ११ ॥ तरण ता

रण प्रभु कहेवाय, सेवे सुर नर जेहना पाय ॥म०॥ जिन दरिसण छे शिव सोपान, जिनथी बीजा केहो मान ॥ म० ॥ १२ ॥ कुण ब्रह्मा कुण विष्णु महेश, वीतरागथी नहिं ते विशेष ॥ म० ॥ तुलसी पीपल पूजे लोक, खोटा प्रयास नियामक फोक ॥म०॥१३ जे देवताने प्रमदाथी प्रेम, केम ते तरशे वली ता रशे केम ॥ म० ॥ क्रोधादिक वर्जित महाभाग, ते तो एक अछे वीतराग ॥ म० ॥ १४ ॥ निसुणी न मंदासुंदरीनी वाण, कर्त्तं जिनधर्म कीध प्रमाण ॥ म० ॥ ऋपिदत्तादिक कुटुंब सकोय, जिनभक्तितें वेगं होय ॥ म० १५ ॥ स्थापी जिनप्रतिमा सहु गेह, पूजे प्रतिदिन आणी नेह ॥ म० ॥ टल्युं मिथ्यात्वने प्रकाश्युं समकित, श्रावक हुओ महेश्वरदत्त ॥ म० ॥ १६ ॥ करणी उत्तम करतां दिन जाय, धर्म थकी नित्य रुडुं थाय ॥ म० ॥ मोहनविजये थइ उजमाल, भांखी सुंदर शोलमी ढाल ॥ म० ॥१७॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

एकदिन नमया सुंदरी, सोल सजी शणगार ॥
बेठी निज वातायने, थइ आभाआगार ॥ १ ॥

दर्पण लेई करकमल, निज आनन निरखंत ॥ सहि
यर पण तस रूपने, पेखी अति पुलकंत ॥ २ ॥ तं
बोलेकरी मुख जख्युं, अति सुशोभित अंग ॥ वि
भ्रम चारु विलासथी, बेठी धरी उमंग ॥ ३ ॥ ए
हवे रवि मंरूल गयण, मध्ये आव्यो जाम ॥ मास
खमण पारण मुनि, गोचरी पहोतो ताम ॥ ४ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी ॥ ए देशी ॥
पावक जेहवो रे आतप परजले, पूहवी देवाय न
पायोरे ॥ बादरकायारे तापें पराभव्यो, ठायाए ते
जायो रे ॥ १ ॥ गति कोइ अभिनवी, जगमें क
र्मनी ॥ सवि चितहमें जाणेरे ॥ विणभोगवियां रे
छूटे नहीं, कवियणे एम वखाणे रे ॥ ग० ॥ २ ॥
तेणे अवसरें पुरमें परवस्या, व्रतधर सुंदर एह रे ॥
खूला पयतल उन्ही वालुका, तो पण निश्चल नेह
रे ॥ ग० ॥ ३ ॥ जस शकटपरे अस्थि खडहडे, क्षाम
उदर हग नीचे रे ॥ जयणायें करी हलूए पय ठवे, प
रसेवे भूंइ सिंचे रे ॥ ग० ॥ ४ ॥ धन्य धन्य एहवारे
जगमें मुनिवर, जे परने हित वांछे रे, निज काया
ने रे जाणे कारिमी, तप तापें तनु तीछे रे ॥ ग० ॥

॥ ५ ॥ जिणे अवसर सुखीया जीवडा, वेसी शीतल ठामे रे ॥ तिणे अवसरें विचरे संयमि, तो न्यायें शिव पामे रे ॥ ग० ॥ ६ ॥ ते मुनि घर घर भिक्षा कारणे, खप करे तप जप पूरो रे ॥ गुणमणि रोह ण साधु शिरोमणि, नहि कोइ वाते अधूरोरे ॥ ग० ॥ ७ ॥ दुःसह तडके रे साधु पराजव्यो, निर्बल थके श्रम कीधो रे ॥ नर्मदामंदिर गोखने ठायडे, विसामो क्षण लीधो रे ॥ ग० ॥ ८ ॥ नमयासुंदरी साधु अजाणती, नाख्युं मूखयकी पीक रे ॥ ला ग्यो ततक्षण मुनिने भालंतरें, तिलक परे थयुं ठी क रे ॥ ग० ॥ ९ ॥ लागत वांता रे मुनि तिहां चम कियो, शुं आकस्मिक एह रे ॥ केणे नाख्युं रे मुज शिर उपरे, निरखे ऊरध तेह रे ॥ ग० ॥ १० ॥ दी ठी गोखे रे नमयासुंदरी, थयो आक्रोश मुनीशोरे ॥ रे रे अधमे रे ए ते शुं कर्युं, अशुचि कयुं ए शीषो रे ॥ ग० ॥ ११ ॥ ए किहां पातक तूटिश वापडी, ए शो गारव तूऊरे, न करे कोइ मुनिने आशातना, तेह करी ते अनूऊरे ॥ ग० ॥ १२ ॥ ताहरी उपर दीसे कंततनुं, मान तेणे घणुं माची रे ॥ तो तुं होजे रे ना थ वियोगिनी, वाच थई अम साचीरे ॥ ग० ॥ १३ ॥

मुनिनी वाणी रे सुणी जणकारे, गोखतले तब जोयुं रे ॥ तब तिहां दीठो रे मुनि कोपांतरु, शाप दीयुं तो पलीयुं रे ॥ ग० ॥ १४ ॥ भूंडुं कीधुं रे में मुनि दुहव्यो, कीधी अवज्ञा भारीरे ॥ फल कडवां रे जो गवनां हुइ, हुं निगुणी कोइ नारी रे ॥ ग० ॥ १५ ॥ नाह वियोगणी होजो जे कह्युं, ते केम फरशे वाचा रे ॥ वाचा खोटी खोटा जनतणी, ए तो मुनिजन साचा रे ॥ग०॥१६॥ जइ खमावुं रे मुज अपराधने, विनवुं विनति विशाल रे ॥ मोहनविजये रे भांखी हेतथी, सुंदर सत्तरमी ढाल रे॥ग०॥१७॥सर्व गाथा

॥ दोहा ॥

मेडीथी जे ऊतरी, आवी साधु समीप ॥ विधिशुं वांदीने कहे, अहो भवसायर द्वीप ॥ १ ॥ हुं जिन धर्मी श्राविका, मुनि उपरे अति प्रेम ॥ रोष नहीं मुनिरायनी, शापो तो मुज केम ॥ २ ॥ जीहांथी बहार जोइए, तिहांथी आवे धाम ॥ दीजे दोष ते केहने, जो फल कहो थाय ॥ ३ ॥ ए संसार असार छे, सहीए जन आधार ॥ ते जो सिकजे बांधीयो, किम छूटे निरधार ॥ ४ ॥ हुं तमथी जेहनी कहे,

अण समजे अविचार ॥ पातुं तेमहीज तुम्हे करो, तो शुं अंतरचार ॥ ५ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥

हांजी वारा वजारमां, हांजी मुने जेहक दे व लाय, तोरे संग चालुं रे, लालमल जोगीया ॥ ए देशी ॥ हांजी हूं निर्भागिणी मानवी, हांजी तमें छो गिरुआ साध,तोरी बलिहारी रे मुनिवर माहरा ॥ हांजी तुमने में कीधी आशातना, हांजी खमजो ते निरावाध ॥ तो० ॥ १ ॥ हांजी तुमे छो करुणा सायरु, हांजी कहुं छुं गोद विछाय, ॥ तो० ॥ हांजी शाप न दीजें मुफने, हांजी मुफथी केम सहाय ॥ तो० ॥ २ ॥ शत्रु प्रत्ये कोपे नहिं, हांजी बांधवथी न मुफाय ॥ हांजी शाप न दे तनु पीडतां, हांजी मुनिवर तेह कहाय ॥ तो० ॥ ३ ॥ हांजी चंदनने जो पीडीयें, तो दीये सामी सुवास ॥ तो० ॥ हांजी यंत्रमें पीलीयें शेलडी, हांजी तो पण द्ये रस खास ॥ तो० ॥ ४ ॥ हांजी रंभा खंभ जो छेदीयें, हांजी तो पण फल दे भूरि, ॥ तो० ॥ ए गीरुआइ साधुनी हांजी शास्त्रमें कही ससनूर ॥ तो० ॥ ५ ॥ हांजी लागे नहीं नाखी थकी, सूरज साहामी खेह ॥ तो०

हांजी शी कटकी कीडी परें, हांजी राखो धर्मसने ह ॥ तो० ॥ ६ ॥ हांजी में तुमने वेद्या नहीं, हांजी लागो हश्ये पीक ॥ तो० ॥ हांजी माहरा अवगुण साहमुं, हांजी न जूर्ज समता नीक ॥ तो० ॥ ७ ॥ हांजी वचन सूणीने एहवां, हांजी बोल्यो मुनिवर तेह ॥ तो० ॥ हांजी रे वत्से रे नावुके, हांजी सां नव्य वाणी एह ॥ तो० ॥ ८ ॥ हांजी साधु न दीये पीडियो, हांजी कोईने डुःसह शाप ॥ तो० ॥ हांजी तेहना जो मुखथी नीकले, हांजी साधुने नहीं तोय पाप ॥ तो० ॥ ए ॥ हांजी जे में नाख्युं विजो गणी, हांजी तुमने आणी रोष ॥ तो० ॥ हांजी ते तुऊ पूरव जन्मना, हांजी दीसे सबला दोष ॥तो० ॥ १० ॥ हांजी ताहरी नावीयें मुऊने, हांजी एह वो बोलाव्यो बोल ॥ तो० ॥ हांजी नहिं तो माहरा वक्त्रथी, हांजी नीसरे केम अतोल ॥ तो० ॥ ११ ॥ हांजी तेमाटे तुं ताहरा, हांजी नोगव्य पूरव कर्म ॥तो०॥ हांजी नोगव्य तुं ताहरां कस्यां,हांजी क्षण एक कुण दीये शर्म ॥ तो० ॥ १२ ॥ हांजी नोग वीश तुं ताहरूं कस्युं, हांजी तेहमां कां दिलगीर ॥ तो० ॥ हांजी नोगवाये कृत्य पारकूं, हांजी तो

हांजी तेहनी पीर ॥ तो० ॥ १३ ॥ हांजी सलीनें जेहवुं वाविए, हांजी तेहनो किहो विचार ॥ तो०॥ हांजी छूटे नहीं विण जोगव्यां, हांजी जिन कहुं, सूत्र मफार ॥ तो० ॥ १४ ॥ हांजी धरियें धीरज चित्तमें, हांजी होशे ते परमानंद ॥ तो० ॥ हांजी एम कहीने तस गेहथी, हांजी विचस्या अन्यत्र मुनींद ॥ तो० ॥ १५ ॥ हांजी मुनिना पयरुह अनुसरी, हांजी नमया आवी गेह ॥ तो० ॥ हांजी ढाल कही ए अढारमी, हांजी मोहनविजयें एह१६

॥ दोहा ॥

एहवे नमया सुंदरी, चिंते चित्त मफार, हवे शुं थाशे आगले, हे हे सरजनहार ॥ १ ॥ में एहवुं शुं पूरवें, कीधुं कर्म अनंत ॥ जे अणचिंत्यां मूजने, शापी गयो मुनि संत ॥ २ ॥ जे जल जलणने उप शमे, ते जल दे गयो दाह॥ कोपे नहीं क्यारें मुनि, ते कोप्यो निर्वाह ॥ ३ ॥ कां बेठी हती गोखडे,कां चांव्यां तंबोल, जे अनुकूल सहुतणो, ते मुनि थयो प्रतिकूल ॥ ४ ॥ कीस्युं ललाटे लिख्युं हशे, आगल जावी जाव ॥ जे जिन जाणे ते खरुं, न मटे सहज स्वजाव (पाठांतर, कहेवा हवे विलाव) ॥ ५ ॥

॥ ढाल उंगणीशमी ॥

लीनो रे मन मोहन जिनसें ॥ ली० ॥ ए देशी ॥

जाणे रे कोइ मननी जाणे ॥ जा० ॥ हुं बेठी हती गोखें सुखमें, आव्या किहांथी ए मुनि टाणे ॥ जा० ॥ केणी सहीयें पण न जणाव्युं, जे मुनि उन्ना छे एण गाणे ॥ जा० ॥ १ ॥ अमें तो न जाण्युं सहीउ ज्ञांखे, तें न जाण्युं तो कुण जाणे ॥ जा० ॥ कीधो तें अपराध सखीरी, नाहक ज्ञेलां शुं अमने ताणे ॥ जा० ॥ २ ॥ एहवां सजनीनां वयण सुणीने, बोली नमया आली उखाणे ॥ जा० ॥ क्यां तमने वहेनी उ कहुं बुं, बींकतां दंभें कां अप्रमाणें ॥ जा० ॥ ३ ॥ दाऊथा उपर खार न दीयो, आवो रीसाउं मां वेसो विछाणे ॥ जा० ॥ ज्ञोगवी लेइश कां तुमे वीहो, मा हरा लखीया लेख प्रमाणे ॥ जा० ॥ ४ ॥ एम कहे तां नयणेथी बूटे, आंसुधारा मेघ समाणे ॥ जा० ॥ जेम जेम मुनिनां वयण संज्ञारे, तेम तेम डुःखडुं हियडामां आणे ॥ जा० ॥ ५ ॥ लोटे धरणी अब ला वाली, देइ सजनी वांह सराणे ॥ जा० ॥ शाप संज्ञारे आकुल थाइ, नाके जिण विध आवे दाणे ॥ जा० ॥ ६ ॥ गती वले ने ताती होवे, जेम कोइ

तीसमें घाती घाणे ॥ जा० ॥ म म कर ग्ववडुं सही छे जांखे, छाज वडेरानी क्यां नाणे ॥ जा० ॥ ७ ॥ ताहरुं डुःख अमें सही नथी शकतां, आलि तुं अमने जे आवे लाणे ॥ जा० ॥ जावी तादृरी नली छे घ देनी, सुख छे वली सुख होशे विहाणे ॥ जा० ॥ ७ ॥ आव्यो एहवे महेश्वर पीयुडो, नारी डुःखणी देखी पूछे ॥ जा० ॥ दयिता डुःखिणी कांतुं दीसे, कहे मुजने तुज डुःखडुं शुं छे ॥ जा० ॥ ए ॥ वात कही निज पीयुडा आगे, जाण्युं डुःखनुं कारण ना हें ॥ जा० ॥ दयिताने तव दीधो दिलासो, तेडी आणी मंदिर मांहे ॥ जा० ॥ १० ॥ ते दिनथी आ रंजी नमया, पालंती जिननी आणा रुडे. ॥ जा० ॥ महासती सुखमें निगमे दीहा, पूरव कर्म कस्यां ते सूडे ॥ जा० ॥११॥ पोपे पात्र संतोपे मनमें, अवि नय करतां हैयुं धूजे ॥ जा० ॥ जव जव संचित पाप निवारे, एहवा देव जणी नित पूजे ॥जा०॥ १२ ॥ पुण्य करे जिन पंथे चाले, तेहथी जव डुःख जाये विलयें ॥ जा० ॥ सुंदर ठंगणीशमी ए जांखी, श्रोता सुणजो माहेनविजयें ॥ जा० ॥ १३ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

एक दिन नमया नारीने, कहे महेश्वरदत्त ॥ पर द्वीपें जाशुं प्रिये, हवे धन हेतें ऊत्त ॥ १ ॥ तिहां जइ द्रव्य कमावशुं, आवशुं तुरत गेह ॥ साचवजो तुमें इहां रही, जैन धर्म ससनेह ॥ २ ॥ कोइ वातें मनथी तुमें, डुःखी न होजो नारि ॥ मिलशुं तुम ने हेज त्रणी, जो करशे किरतार ॥ ३ ॥ परदेशें ज इए अठें, करशुं तिहां व्यापार ॥ तिहांथी बहु धन आणशुं, राखशुं इहां व्यवहार ॥ ४ ॥ ते माटे तरु णी तुमें, हसी दीयो आदेश ॥ जेम प्रवहण सज कीजीयें, लेइयें वस्तु अशेष ॥ ५ ॥ कंत वचन नि सुणी करी, बोली नमया बाल ॥ केम परदेशे पधा रशो, अहो नाह सुविशाल ॥ ६ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥

अम्मां मोरी अम्मां हे, अम्मां मोरी झीलण गइती तलाव हे ॥ हे मारुंडे मेंवासी केरा ताणीया हे ॥ ए देशी ॥ पियुडा मोरा पियुडा रे, पीयुडा मो रा जो तुमें चालो परदेश हे ॥ हे सुजने त्रलावो केहने डलवे हे ॥ पि० ॥ पि० ॥ काया जिहां तिहां ठांह हे, हे तेम प्यारो ने प्यारी जोगवे हे ॥

रे० ॥ पि० ॥ १ ॥ हुं पण आवीश साथ हे, हे
टेने करेशुं वाला चाकरी ॥ पि० ॥ पि० ॥ पि० ॥
तुम विण केम गमे दीह हे, हे माछलडी होवी
युं जल विण आतूर हे ॥ पि० ॥ पि० ॥ २ ॥ घडी
छ मास थाय जेह हे, हे नाह रहो जो अलगा न
यनथी हे ॥ पि० ॥ पि० ॥ तुम विरह न सहाय
हे, हे केतुं जांखुं करीने वेणथी हे ॥ पि० ॥ पि०॥
॥ ३ ॥ साधूए कह्युं ठे जे मुजने एम हे, हे यश्श
वत्से कंतवियोगिणी ॥ पि० ॥ पि० ॥ तेहवा कथ
नथी केम हे, हे अलगी रहुं तमने अवगुणी हे ॥
पि० ॥ पि० ॥ ४ ॥ मुजने तुमचो आधार हे, हे
विगर आधारे इहां केम रहुं ॥ पि० ॥ पि० ॥ देखी
पेखीने काय हे, हे विरह वन्हियी कहोने कां द
हुं ॥ पि० ॥ पि० ॥ ५ ॥ जो नहीं तेडो साथ हे, हे
कहेशे नहीं कोइ तुमने रूअडा॥पि०॥पि०॥नारी नरा
खवी दूर हे, हेजे कहीए ठे पंथी सूअडा हे॥पि०॥पि०॥
मनडुं लेइ जशो संग हे, पींजरीउं ने रहेशे थाक
मजी इहां ॥ पि० ॥ पि० ॥ रढ करी रही सहु जोर
हे, हे तो तुमें मूकीने जाशो किहां ॥ पि० ॥ पि०
॥ ७ ॥ नार कहे अहो नारी हे, हे काम दोहेलुं

अलगा पंथनुं ॥ पि० ॥ पि० ॥ कंते कही घणी वात हे, हे तोही न माने कांई अंगना ॥ पि० ॥ पि० ॥ ॥ ७ ॥ वनितानो आग्रह जाणी हे, हे संगें तेड्यानी कंते हा नणी ॥ पि० ॥ पि० ॥ नर्मदासुंदरी ताम हे, हे उल्लसित हुइ मनमांहे घणी ॥ पि० ॥ पि० ॥ ॥ ए ॥ तत्क्षण महेश्वरदत्तें हे, नरीने करीयाणुं प्रवहण सज कस्यां ॥ पि० ॥ पि ० ॥ पडहो वजायो पुर मांहि हे, हे वचन सुरंगां ए एहवां उचस्यां हे ॥ पि० ॥ पि० ॥ १०॥ शा महेश्वरदत्त हे, हे यवनद्वीपें काले चालशे हे ॥ पि० ॥ पि० ॥ जे कोइ आवणहार हे, हे होय ते वेगा होजो अनालसें, ॥ पि० पि० ॥ ॥ ११ ॥ पडह सुणीने लोक हे, हे यवनद्वीपें जावा संमुह्यां ॥ हूवो जाम प्रनात हे, हे लोक सायरनो तट घेरी रह्यां ॥ पि० पि० ॥ १२ ॥ एहवे महेश्वरदत्त हे, हे जिनवरपूजा करे कुसुम पांखडी ॥ सुंदर नोजन कीध हे, हे मात पितानी लेइ शीखडी ॥ पि० ॥ पि० ॥ १३ ॥ नर्मदासुंदरी साथ हे, हे महेश्वरदत्त आव्यो प्रवहण ठे जिहां ॥ पि० ॥ पि०॥ साथें सयण अनेक हे, हे आव्या संप्रेषणे नेहव शे तिहां ॥ पि०॥ पि० ॥ १४ ॥ परजन कहे सुख एम

हे, हे होजो मंगल माल हे, ॥ पि० पि० ॥ मोहन विजयें एम हे, हे पन्नणी सलुणी वीशमीढाल हे ॥ पि० ॥ पि० ॥ १५ ॥ सर्वगाथा ॥

॥ दोहा ॥

शीख लही साजन तणी, परिकर रूडा प्रसंग ॥ चाल्यो जलवट ऊपरे, महेश्वरदत्त सुरंग ॥ १ ॥ यान हकार्यां जलधिमां, खेंच्या सढ ने दोर ॥ मागें मालमी मालम करे, कूवा थंभा जोर ॥ २ ॥ परव्यां पोत पयोधिमें, गति अति चंचल धीर ॥ ताणो जेम कोदंडथी, छूटे जेहवो तीर ॥ ३ ॥ नीरमय दीसे धरा, ऊपर तो आकाश ॥ गिरिवर तरुवर नगरवर, ते तो प्रवहण वास ॥ ४ ॥ अह्नो उप्रर कारणें, जल मध्ये पविसंत ॥ पारत्रिलोकी पतिवसु, पण जय नवि निवहंत ॥ ५ ॥ पेट अधम जगमां प्रसिद्ध, पेट वडो पतहीन ॥ जल थल गिरि उलंघवे, मुख जंपावे दीन ॥ ६ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥

दिल लगा रे वादल वरणी ॥ ए देशी ॥ चाल्यां रे वाहण वाये हंकार्यां, दोडे जेम मन चाले ॥ हवे जोजोरे कौतुक थाशे, सांजलतां शुं जाशे ॥ ह० ॥

॥ दोहा ॥

नमया लक्षण दक्षिणा, जाणे नेद अनंत ॥
मुझचतुराइयें करुं सहेजो कंत ॥ १ ॥ कहे न
निज नाहने, जे ए गावे गीत ॥ विण दीठे कहो
कहुं, रूप रंग गति रीत ॥ २ ॥ कंत कहे का
कहो, कांइ करो ठो जोर ॥ चतुराई जे अंगमें
दाखो एकवार ॥३॥ बोलीनमयासुंदरी, रे पीयु
क एह ॥ श्यामरंग शोना सुनग, कुब्जरूप ठे
॥४॥ स्थूल हस्त गुढे मशाक, रक्त नेत्र ससनेह ।
रुण वर्ष द्वात्रिंशनो, चिन्ह सयल ठे एह ॥५॥ व
सुणी वनिता तणां, ताम महेश्वरदत्त ॥ चित्त
चिंते इस्युं, थइ तरुणीथी विरत्त ॥ ६ ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥

चंदन राखो ठोजी राज, मीठडा मेवा ठो ।
देशी ॥ वाणी सुणी नमया तणीरे, शोचे महे-
दत्त ॥ सहितो ए गायकथकी, कांइ नारी ठे सं
॥१॥ माहरी मानिनी हो राज, सही तो धूतारी
चंदन शी बोले ठे राज पण विष तोलें ठे, ए
कहाणी ठे राज, ते हवे जाणी ठे ॥ ए आंकर्ण

छला सुधाणी खरी, कांय करी कुळथी प्रीत ॥ मा० ॥ २ ॥ एहने तो हुं जाणतो रे, सुकुलीणी शिरदार ॥ पण ए कुलटा निवडी कांइ, निःस्नेही अवतार ॥ मा० ॥ ३ ॥ महासती करी जाणतो रे, पण फेरव्युं सत एह ॥ जेम वखाणी खीचडी कांइ, दांतें वलगी तेह ॥ मा० ॥ ४ ॥ थई गोधूम भ्रम हियडे रे, पेठी प्रमदा सार ॥ पण मांडो थइ निसरी कांइ, ऐ ऐ सर्जनहार ॥ मा० ॥ ५ ॥ जो जो एहनी कपटता रे, तृणसम गणीयो मुज ॥ चोरी दृष्टि सहू तणी, कांइ गायकथी करी गुझ ॥ मा० ॥ ६ ॥ सगुणी पांखें नीगुणी जली रे, राखी हुती निजहित लाय ॥ लाख जतन करी राखीए, काइ जाति स्वभाव न जाय, मा० ॥ ७ ॥ धोइए दूधें कागडीरे, पण हंसली नवि थाय ॥ कुंदन खोले रासभी कांइ, न होय पयल गाय ॥ मा० ॥ ८ ॥ वेसाडीए सेजे शूनीरे, नहिं सुरकन्या होय ॥ मीठी न होये लींबडी कांइ, साकर सींचे कोय ॥ मा० ॥ ९ ॥ ए नारीने शुं करुं रे, नाखुं पयोधिमांहि ॥ के करुं चूर्ण खडगथी कांइ, के परिहरियें क्यांहि ॥ मा० ॥ १० ॥ तेह सोनुं शुं कीजीए रे,जेहथी त्रूटें कान ॥ पेटें कांच

ननी वुरी कांइ, थोंचे कोण नादान ॥ मा० ॥ ११ ॥ नारीने न जणावीयुं रे,निज हियडानुं श्रहेज ॥ प्रीत थयो गायन मिल्युं कांइ, दीठुं चिन्ह समेत ॥मा०॥ ॥१२॥ मनमें सही निश्चे थयुं रे, ए कुलटा शिरताज ॥ पण एहने न जणाववुं कांइ, मुष्टि नली वत्सराज, मा० ॥ १३ ॥ एहवे कूवा थंनथी रे, वोल्यो मालिम ताम ॥ राखो रे नियामको कांइ, प्रवहण एणे ठाम मा० ॥ १४ ॥ नांगर नाख्युं नीरमें रे, वाहण राख्यां द्वीप ॥ सढ दोरा संकेलजो कांई, श्राव्यो राक्स द्वीप ॥ मा० ॥ १५ ॥ मीठलजल नरो प्रवहणे रे, सहू को थाउ सज्ज ॥ वचन सुणीनें ठीपीया कांई, पहोता महादेधि मज्ज ॥ मा० ॥ १६ ॥ तेहीज द्वीप तणे तटें रे, श्राव्यां वाल गोपाल ॥ मोहनविजयें निर्ममी कांइ, ए बावीशमी ढाल ॥ मा० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

राक्स द्वीपतणे तटे, उत्तरीया सवि लोक ॥ ज लईंधणने कारणें, बूटा थोका थोक ॥ १ ॥ प्रवहण मांहे ततक्ण, नरीयुं निर्मल नीर ॥ समिधादिक पण संग्रह्यां, सज्ज थया वर वीर ॥ २ ॥ नोजनहे

तें परवस्या, लोक सयण तिण ठाम ॥ एहवे उस लाध्यो जलो, महेश्वरदत्तने ताम ॥ ३ ॥ कहे न मयाने हे प्रिये, जइयें वनह मकार ॥ तुरत फरी ने श्रावशुं, होशे जमण तैयार ॥ ४ ॥ देखशुं कि हां ए द्वीपने, फरी फरी नयणे तेह, जीव्याथी जो युं जलूं, मान वचन धरी नेह ॥ ५ ॥ अति जोली नमया सती, कपट न जाणे तास ॥ साथें थइ प्राणे शने, आवी वनह निवास ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥

देशी विंदलीनी ॥ करथी कर ग्रही आडे, निज त्रियने वनह देखाडे हो ॥ कंत महाकपटी ॥ रे प्र मदा तुमें देखो, ए सायरतट सुविशेषो हो ॥ कं० ॥ १ ॥ हे तरु केहवा ऊंचा, जेम वासगमणीना ए पे खो पहोंचा हो ॥ कं० ॥ तरुथी वेलि वीटाणी, जे म अहिंसाधर्मथी जाणी हो ॥ कं० ॥ २ ॥ ए सुर तरु मन मोहे, जगतीशिरछत्र ज्युं सोहे हो ॥ कं० ॥ केहवुं हे वन ए दीठुं, मुजने लाग्युं मीठुं हो ॥ कं० ॥ ३ ॥ चालो तमें आगल नारी, तीहां होशे कौतु क जारी ॥ कं० ॥ दंपती आघां चाल्यां, वर कदली वनमें माल्यां हो ॥ कं० ॥ ४ ॥ रंजा पवनें जोले,

तस दीरघदल बहु डोले हो ॥ कं० ॥ लुंबी झूंबं
रहीयां, फल मोटां रस महमहियां हो ॥ कं० ॥५॥
महोटुं सर जले जे जरीयुं, जेम नानकडो ए दरीयं
॥ कं० ॥ शीतल जूमी जे सूहावे, पंखीपण रमव
आवे हो ॥ कं० ॥ ६ ॥ ते सरपाले वेठां, पियु
मदा बीहु एकेठां हो ॥ कं० ॥ पीयुडे मांडी माया
पण कांइए न जाणे जाया हो ॥ कं० ॥ ७ ॥ गू
कपट कुण जाणे, ब्रह्मापण नविहुं पीठाणे हो
कं० ॥ पछें प्रमदा पजणे, पियु पोढो जागीस ह
खांणे हो ॥ कं० ॥ ८ ॥ कहे पीयु पोढो नारी, इह
बेठो हुं धीरज धारी हो ॥ कं० ॥ पोढी नाह जर
सें, तेणे सुखनिद्रा ग्रही होंशे हो ॥ कं० ॥ ए ॥ व
निता सूती जाणी, चिंते पियु कपटनो खाणी हो ॥
कं० ॥ जो हणुं एहने तेगें, तो पातक लागशे वेगे
हो ॥ कं० ॥ १० ॥ एह सूती ठे नारी, जो मुकुं तो
होये सारी हो ॥ कं० ॥ एहने इहां परिहरवी, इहां
ढील न कांइ करवी हो ॥ कं० ॥ ११ ॥ कर्म कहो
केम चूके, जुउ प्रमदा प्रीतम मूके हो ॥ कं० ॥ जु
जंगनी जांते वाला, जूउ नाह तजे सुकुमाला हो ॥
कं० ॥ १२ ॥ वनिता मूकी वनमें, कांइ करुणा ना

शी मनमें हो ॥ कं० ॥ दोड्यो बांधी मूठी, फरी न करे नजर अपूठी हो ॥ कं० ॥ १३ ॥ नारी उवेखी नाखी, जेम घृतमांथी मांखी हो ॥ कं० ॥ प्रवहणे दोड्यो आवे, जूउं केहवी बुद्धि उपावे हो ॥ कं० ॥ १४ ॥ घोल्यो श्वासे जराणो, हलफलतो मांड खेदा णो हो ॥ कं० ॥ रे लोको सज थाउं, एणे प्रवहणे दोडी जाउं हो ॥ कं० ॥ १५ ॥ ताणो पट शुं विचा रो, जलनिधिमां पोत हंकारो हो ॥ कं० ॥ जोज न वहाणमां करशुं, पण जड् इहांयकी वलशुं हो ॥ कं० ॥ १६ ॥ ढील करो छो कांइ, सज थाउं वहे ला जाइ हो ॥ कं० ॥ एह त्रेवीशमी ढाल, कही मोहनविजयें रसाल हो ॥ कं० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

पडतो भूजंतो थको, कहे महेश्वरदत्त ॥ जूउं ए आवे अठे, रजनीचर केइ फत्त ॥ १ ॥ दंतुर वली दीरघ अधर, कर आयुध विकराल ॥ केश विलूटे कांवरे, उं आवे ऊंघाल ॥ २ ॥ उं उडे रज अंबरे, चरणे धमके नूर ॥ आवे छे उतावलो, जेम पयो निधि पूर ॥ ३ ॥ शुं बल कीजें एहथी, एह पुलिंद प्रचंम ॥ मुफ वनिताने पापीए, कीधी खंडो खंड ॥

॥ ४ ॥ नाठो आव्यो तुम कन्हे, कहुं वुं न करो वा र ॥ प्रवहणमां वेसी तुरत, जो वंछो हित सार ॥५॥ बीहिना लोक इस्युं सुणी,वेठा प्रवहणमांहि॥ कपटी पण वेठो तुरत, सयण वच्चे सोत्साहि ॥ ६ ॥ वाहण चाल्यां जलधिमां, मूक्यो तेहज द्वीप ॥ ज न वनिता दुःख वारवा, आव्या तास समीप ॥७॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥

उग्रसेन नृपनी तनुजाशुं रंगें राज, तथा नरवर साजी॥एदेशी॥ते महेश्वरदत्त धूतारो राज, मांड्या फंद प्रचारारे॥किहां गइ सा नारी रे ॥ ए आंकणी ॥ सयण आगल ते रुदन करतो, राज छोडे आंसु धारा रे ॥ कि० ॥ १ ॥ कूटे छाती धरणीए लोटे रा ज, मूखथी कहे प्रिया प्रिया रे ॥ कि० ॥ लीधी व निता कांइ जदाली राज, ए शुं कस्युं दइया रे ॥ कि० ॥ २ ॥ हमणां हुंती मुख आगल रुडी राज, एम ए किहां गइ नाशी ॥ कि० ॥ हमणां कां नथी बोलती मोसुं राज, थइ कां वेठी मेवासी रे ॥ कि० ॥ ३ ॥ तें शुं माहरो मोह न आण्यो राज, एका ए क गइ छोडी रे ॥ कि० ॥ हियडामां तुं खटकीश ... ंते राज, जिम रही भाली जंडी रे ॥ कि० ॥४॥

एम दुःख कारीमुं मांमी वेठो राज, शोक सयल प्रति मूके रे ॥ कि० ॥ शुं दुःख एवडुं मनमां व होवो राज, माहरा श्रागम सुके रे ॥ कि० ॥ ५ ॥ जेह गयो ते पाठो नावे, तो दुःख केहनुं कीजें रे ॥ कि० ॥ दैव थकी बल नांही कोइनुं, होवे तो व हेंची लीजें रे ॥ कि० ॥ ६ ॥ जिन चक्री हरिबल बलिराजा, केइ गया एणी वाटें रे ॥ कि० ॥ ते तु म दुखडुं कांइ न जाणे, तो शुं होवे उचाटे रे ॥ कि० ॥ ७ ॥ जाणता हूंता ज्ञान लहंता, एम श्र जाण कां हूउं रे ॥ कि० ॥ मानो वचन श्रम फि कर निवारो, लेइ जल मूखडुं धूउं रे ॥ कि० ॥ ८ ॥ शीप सलामत पाघ घणेरी, जाणता नथी ए उ खाणो रे ॥ कि० ॥ वचन सुणीने निर्दयी राज, हुं उं सहेज सपराणो रे ॥ कि० ॥ ए ॥ कीधुं चोज न मनमांहे सुहातुं राज, मूकी नारी विसारी रे ॥ कि० ॥ जे निःस्नेही तस माया न होये राज, स स्नेही मायाधारी रे ॥ कि० ॥ १० ॥ जे विश्वासी घात उपावे राज, धिक धिक तास जमारो रे ॥ कि० ॥ इह परत्नव पापें पीडाये, ते सहु सहि श्रवधारो रे ॥ कि० ॥ ११ ॥ श्रनुक्रमें प्रवहण तरतां पहो

तां, यवन द्वीपने तीरें रे ॥ कि० ॥ उतस्यां सहु ज
न सायर कंठे, आव्या नरपति नीरें रे ॥ कि० ॥
१२ ॥ महेश्वरदत्तें जेटणुं मेल्युं राज, नृप आगल
अग्निनवेरुं रे ॥ कि० ॥ रीझ्यो महिपति दीधो दि
लासो राज, करो व्यवसाय घणेरो रे ॥ कि० ॥१३॥
नृप आदेशे महेश तिवारें, पुरमां वेच्यां वसाणां रे ॥
कि० ॥ कीधा गांठे दाम डुणा राज, परखी परखः
नाणां रे ॥ कि० ॥ १४ ॥ निगम्या केताएक दिवस
तीहां राज, प्रवहण वली सज कीधां रे ॥ कि० ॥
खेड्यां प्रवहण महोदधिमांहे, निजपुर साहामां
सीधां रे ॥ कि० ॥ १५ ॥ जर दरिये जव प्रवहण
आव्यां राज, पूरे पवनें प्रेस्यां रे ॥ कि० ॥ दैवग
तेथी पोत सविहु, गिरि कुंडलमां घेस्यां रे ॥ कि०
॥ १६ ॥ प्रवहण पर्वत परें स्थिर रहीयां, फरहरे पं
चरंग नेजा रे ॥ कि० ॥ ढाल चोवीशमी मोहनें
जांखी, सहु हुंसे निसूणी सहेजा रे ॥ कि० ॥१७॥

॥ दोहा ॥

वहाण रुंधाई रह्यां, न होय वायु प्रसंग ॥ ना
विक सवि झांखा थया, डीप्या सयल सलंग ॥ १ ॥
प्रवहण जन आतुर हुआं, उद्यम न चढ्यो हाथ ॥

चिंतातुर चिंते सहू, शुं करशुं जगनाथ ॥ २ ॥ ना
वथी उतस्यो एकलो, तेह महेश्वरदत्त ॥ ततक्षण
गिरि उपरें चढ्यो, कौतुक देखण-जत्त ॥३॥ तिहां
एक दीठुं देहरुं, उंची धज लहकंत ॥ दोय नगारां
देहरे, अति आगल दीपंत ॥ ४ ॥ दीठां तेह महे
श्वरें, लीधी गेडी हाथ ॥ नीशाणे दीधी तिहां, ग
रज्यो भूधर नाथ ॥ ५ ॥ झबक्यो निपट गुहाथ
की, उड्यो विहंग भारंड ॥ पसस्यो पंखतणो पव
न, अति उंचो ब्रह्मंड ॥ ६ ॥

॥ ढाल पचीशमी ॥

नंद सलूणा माहरा नंदना रे लो ॥ ए देशी ॥ भा
रंड पंखीना वायसूं रे लो, तेणें हीलोल्यो सायरु रे
लो ॥ गिरिकुंडलथी नीकल्या रे लो, प्रवहण पंथ
दिशा चल्यां रे लो ॥१॥ कहे जन वहाण तो वह्यां रे
लो, शेठ तो गिरि उपरें रह्या रे लो ॥ कीहांयी ए
मेलो होयशे रे लो, वाट एहनी घरे जोइशे रे
लो ॥२॥ वाहण पण नवि फरे फरी रे लो, कोश ब
हु रहियो गिरि रे लो ॥ अनुक्रमे प्रवहण चालीयां रे
लो, रूपचंद्रपुर आवियां रे लो ॥३॥ खबर हूई रुद्र
दत्तने रें लो, प्रवहण आव्यां पत्तने रे लो ॥ लोक स

बोली वनमां एम ॥ छाना जे रह्यो छो छूपी, ढूंढी का ढीश तेम ॥ ४ ॥ एम कही कदलीवनविषे, पेठी नमया नारी ॥ आलें कहे में दीठडा, छे जन्ना नी धीर ॥ ५ ॥ कपट न जाएयुं कंतनुं, बोली नमया नाम ॥ ऋहवुं ए कंतारमें, करी गयो छे काम ॥ ५ ॥

॥ ढाल छवीशमी ॥

चंदलीया धूतारडा रे ॥ ए देशी ॥ नाहलीया निःस्नेही एम कां छूपी रह्यो रे, नारीयें धीर न धराय रे ॥ रामतनी वेलाए रामत कीजीए रे, विण अवसर केम थाय रे ॥ ना० ॥ १ ॥ अबलानी धीर जनुं शुं जूउं पारखुं रे, अबला बल कुण मात्र रे ॥ आवोने वालमीया तुमची वाटडी रे, जोतां हशे संयात्र रे ॥ ना० ॥ २ ॥ हांसीथी वीखासी प्रीत मजी हूवे रे, मानो प्राण आधार रे ॥ इण वनमें हांसीनी वेला शी अछे रे, हांसी एहवी निवार रे ॥ ना० ॥ ३ ॥ एम करतां तिहां पीयुडो केमही वोल्यो नहींरे, चिंते नमया नारी रे ॥ सहीतो वन मांहें छेह देइ गयो रे, ए कपटी भरतार रे॥ना०॥४ वालमना पाय जोती सायरने तटें रे, आवी जोवे जामरे ॥ एके कोइ नावडलूं तिहां दीठुं नहीं रे, यह

पिताजुर ताम रे ॥ ना० ॥५॥ धिक धिक रे निःस्नेही निर्गुण नाहला रे, धिक धिक मुज अवतार रे ॥ उतारी कूपमां मूकी दोरडी रे, कापे एहवो कवण गमार रे ॥ ना० ॥ ६ ॥ में तो शुं कांइ तुजने कहीए दूहव्यो रे, शुं तुज उकल्युं एह रे ॥ करुणा ए शुं नावी तुज हियडे रे, एह शो कारिमो नेह रे ॥ ना० ॥७॥ नदीए छे तुज गती वज्र सरीखडीरे, दोस्यो जे घरणी मूकीरे ॥ परिहरतां केम चाल्युं मनडुं ताहरुंरे, दीठी शी मुजमां चूक रे ॥ ना० ॥ ८ ॥ नेहड लो न शक्यो नाहलीया नीवाहिने रे, दीधो अर्चित्यो छेह रे ॥ रे रे किम विधाता हाथे घडे रे, एहवा नर निःस्नेह रे ॥ ना० ॥ ९ ॥ एहवी जो न करे तो तारीरे, उंडी कला नवि थाय रे ॥ तुं पण दीसे छे निर्दय हियडे रे, एहवुं तुज न सुहाय रे ॥ ना० ॥१०॥ मांखुं हुं कर जोडी देव में ताहरो, केहो उंलव्यो आस रे॥मुजने जे तें मेल्यो एहवो नाहलो रे, ए तुजने शाबासरे ॥ ना० ॥११॥ धुरथी जो वालमीया कूड हुं जाणती रे, तो कांइ नावत साथ रे ॥ रेहती हुं मंदिरमें दुःख नवि देखती, नित्य पूजत जगनाथ रे ॥ ना०॥१२॥ पेहलां तो जल पीधुं पछे घर पूछीयं-

रे, हुवुं जेवुं लखीयुं ललाट रे ॥ मुनिवरनुं जे नाख्युं तेह खरुं थयुं रे, जल वही आव्युं वाट रे ॥ ना० ॥ १३ ॥ दैवे जो पांखडली दीधी होत जो रे, तो जइ मलती कंत रे ॥ केम जइने मलीयें आडो सायरु रे, सायरु तेम तदंत रे ॥ ना० ॥ १४ ॥ पियुडाने ठलूंडी आवे मनमें रे, नारी निगमे केम दीह रे ॥ उपाडी नाखी विरहपयोधिमां रे, मीठुं बोलतो केम जीह रे ॥ ना० ॥ १५ ॥ थानारुं ए लख्युं एहवुं जाग्यमां रे, वालिम ताहरो विजोगरे ॥ इहां कोइ कोइनो वांक कोइ नहीं रे, पूर्व कर्मनो जोग रे ॥ ना० ॥ १६ ॥ जंगलमें पण मंगलमाला होयशे रे, शील थकी सुविशाल रे ॥ पन्नणी ए मनमानी ढवीशमी रे, मोहनविजयें रसाल रे ॥ना०॥१७॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

नमया छेह देइ गयो, नाह महेसरदत्त ॥ अबला कूरे एकली, सायर तट संसत्त ॥ १ ॥ विरह म होजो केहने, विरह उस्सह दीठ ॥ धरणी पण शत खंड हुवे, जल विरहे उकिठ ॥ २ ॥ वल्लह विरह अथाह जल, थाह न लप्पे कोय ॥ कां न हुवुं ताहरुं मिलण, जंगल जेटण होय ॥ ३ ॥ जिहां विरहानल प

रजले, तिहां नर केहो नूर ॥ दघे दावानल जिहां, तिहां केम होय अंकूर ॥ ४ ॥ मानव कवण सही श के, विरह भुयंगम डङ्ख ॥ जाली उंडी नीकले, पण न सहुं विरहासल्ल ॥ ५ ॥ विरह वज्र चंचे कवण, विरह दुःख न सहाय ॥ द्राख लताथी वीछडे, तेम तेम दुर्बल थाय ॥ ६ ॥

॥ ढाल सत्यावीशमी ॥

शुक देव कहे रे उपाय, तुमें सांभलो परीक्ष त राय ॥ ए देशी ॥ हवे नमया सुंदरी नार, मूके नयणथी आंसूधार ॥ पडी शोचना सरित मझार, विरहें थइ व्याकुली रे ॥ कुण जाणे पराइ पीर ॥ जस वीचे ते सहेज शरीर, विरहीनो विरह गहीर ॥ वि० ॥ १ ॥ फिरे वनमां मृगली जेम, जिहां विरह तिहां धीरज केम ॥ जीहां प्रीत तिहां गति एम ॥ वि० ॥ २ ॥ करी प्रीति निवाहे कोय, करी एकं गो ताणे लोय ॥ पछी तेहनी एह गति होय ॥ वि० ॥ ॥ ३ ॥ एकंगो पतंगने नेह, थई रसीयो झंपावे देह ॥ पण दीपक न गणे तेह ॥ वि० ॥ ४ ॥ करी प्रीत निवाहे कोय, तेतो विरलो कोइक होय ॥ तस पीजें पयतल धोय ॥ वि० ॥ ५ ॥ जे उत्तम जननी

प्रीति, तेहनी तो जगमांय प्रतीति, खलनी तो वि
परीत रीति ॥ वि० ॥ ६ ॥ दे एम ठेह करी विश्वा
स, वह्यो न्हार जननीयें तास ॥ ते तो एमही उदरे
दशमास ॥ वि० ॥ ७ ॥ एम रटती फीरे वनमांही,
तास संग सखी नहि पाहि ॥ पडतां रहे वृक्ष संवा
हि ॥ वि०॥ ८ ॥ कहे हृदयने रे चंड, कांइ न होय
विरहे शतखंड ॥ केम वहीश तुं डुःख करंड ॥ वि०॥
ए ॥ अयि प्राण कहुं छुं तुम्म, नहिं वालम निकट
निस्सम्म ॥ कहेवाशो केहना इम्म ॥ वि० ॥ १० ॥
कांइ सरजी एणे संसार, निर्भागिणी एहवी नारि ॥ जे
ह तजी एम न्हरतार ॥ वि० ॥ ११ ॥ रे धरणी न दे
कां माग, पियुविरह वाई गयो खाग ॥ जूउं कपटी
ए लाध्यो शो लाग ॥ वि० ॥ १२ ॥ ए वनमां कव
ण आधार, पीयर केइ कोष हजार ॥ गति केइ करि
श किरतार ॥ वि० ॥ १३ ॥ पुरुषें पण नाण्यो प्रेम,
गयो वालिम मूकी एम ॥ तस रूंधी न राख्यो केम
॥ वि० ॥ १४ ॥ थइ वैरण निंद डुरंत, जेणे राख्यो
उंलवी कंत ॥ एम कही नमया विलपंत ॥ वि० ॥
१५ ॥ पूरवे में कीधां पाप, होशे दीधा कोइने शा
प ॥ तेह प्रकट्या आपो आप ॥ वि० ॥ १६ ॥ दीधा

होशे श्रावे दोप, पीधा होशे अलें कोश ॥ तो जो गवतां केहो शोप ॥ वि० ॥ १७ ॥ कस्या हशे कान नदाह, मृग मास्या हशे फंदमांह, विल पूस्या हो शे नीरप्रवाह ॥ वि० ॥ १८ ॥ कस्या घालक मात विछोह, वेच्यां होशे आयुध लोह, कस्या होशे सा धु कोह ॥ वि०॥ १९ ॥ सूची अणीये अनंता जीव, कस्या चूरण कंद दहेव ॥ कीधा होशे आहार सदे व ॥ वि० ॥ २० ॥ गो कन्या भूमि अलीक, होशे वोल्यां नवातरे ठीक ॥ फल तेहनां एह नजीक वि० ॥ २१ ॥ करी उद्यम करुं धनजाल, थई वेठो हुईश रखवाल ॥ लीधुं होश्ये में ते उदाल॥वि०॥२२॥ वावस्यां होशे अणगल नीर,ग्रही घाल्या पंजर की र ॥ रंग्यां होशे रातां हीर ॥ वि०॥ २३ धरणीनुं वि दास्युं पेट, शरसंधि रमीयां खेट॥कस्यां शातनपातन पेट ॥ वि० ॥ २४ ॥ परदारा संगति कीध, रस रंजी वारुणी पीध ॥ सेव्यां होशे व्यसन प्रसिद्ध ॥ वि० ॥ २५ ॥ तिथिपर्व जाणी कस्यां जंग, करी होशे के ली अनंग ॥ वली मिथ्या वादि प्रसंग ॥ वि०॥२६॥ जिनमतथी कस्यो विपवाद, गुरुजनना कस्या अप वाद ॥ हूउं होशे संतविपाद ॥ वि० ॥ २७ ॥ एम

निंदे पुरातन कर्म, दृढ धारे जिनवरधर्म ॥ लहियें
हथी संपत्ति शर्म ॥ वि० ॥ २८ ॥ ए सत्यावीशम
ढाल, कही मोहनविजयें विशाल ॥ कहुं आगल व
त रसाल ॥ वि० ॥ २९ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

चार प्रहर दिन वन भमी, पियु विण विण सावि
त्य ॥ महासती दुःख देखीने, आथमियो आदित्य
॥१॥ थई रजनी उदयो शशी, विहंग करे विश्राम
पसरी दशदिश चंद्रिका, उज्ज्वल शीतल द
म ॥ २ ॥ लता गुह्रमांहे वसी, नमया सुंदरी त
म ॥ नयणे नावे नींदडी, मध्यरयणी थइ जाम ॥३
पियुविरहे तलपे घणुं, जलविण जेहवुं मीन ॥ जिम
जिम नेही सांभरे, तेम तेम जंपे दीन ॥४॥ रे रे च
द कलंकीया, लाज न आवे तुऊ ॥ अबला जाणी
कली, शुं संतापे मुऊ ॥ ५ ॥ जो पीयुमेलो तुं करे
तो तुऊमानुं पाड ॥ नित देउं आशीष तुज, करी र
खुं मनचाड ॥ ६ ॥

॥ ढाल अठ्यावीशमी ॥

गोकुल गामने गोंदरे रे, आ शी लूंटा लूंट
मारा वाहला रे ॥ ए देशी ॥ एकलडी सायरतटे

रे, नमणा माळम रात ॥ मारा वाला रे, इंदुने
दीये ठबकडा रे, मीठडी मीठडी वात ॥ मा० ॥
॥ १ ॥ चांदलिया धूतारडा रे, निर्दय निठोर कठोर
मा० ॥ विरहीया विरह जगाडतो रे, चंचल चितडा
चोर ॥ मा० ॥ चां० ॥ २ ॥ लोक कहे तुजमें सुधा
रे, ते तो सुधा में दीठ ॥ मा० ॥ जाणुं तुं हुं मुज
जाणतो रे, तुजमां छे गरल गरिठ ॥ मा० ॥चां०॥
॥ ३ ॥ सायर पुत्र तो तुं नहीं रे, तुं वडवानलनी
जाति ॥ मा० ॥ ताहरुं नाम दोषाकरुं रे, तेहज
साची विख्यात ॥ मा० ॥ चां० ॥ ४ ॥ हियडे तुं
रखे फूलतो रे, जे मुज माने छे ईश ॥ मा० ॥ मणुं
विष पीयुषने तज्युं रे, शंकर तो छे बालिश ॥ मा० ॥
चां० ॥ ५ ॥ ताहरेज जाग्यें ए राहुने रे, देवें न
दीधुं पेट ॥ मा० ॥ नहीं तो होत तुं पाधरो रे,
एम दुःख देत न नेट ॥ मा० ॥ चां० ॥ ६ ॥ क्यारे
कदीय तुं ऊगमे रे, दिनयर केरी सेज ॥ मा० ॥
जाय छे किहां माटीपणुं रे, कां नथी करतो तेज ॥
मा० ॥ चां० ॥ ७ ॥ एहवो जोरावर जो थडे रे,
रवि शशि संगम रात ॥ मा० ॥ त्यारे कां नथी ऊ
गतो रे, जाणी में ताहरी वात ॥ मा० ॥ चां० ॥ ८ ॥

दीसे छे शीतल दीसतो रे, पण पावकथी डुरंत ॥
मा० ॥ मोळुं दही जेम पीवतां रे, जेम होय शीत
लदंत ॥ मा० ॥ चां० ॥ ए ॥ कांइक करुणता राखी
यें रे, कठिण न थइए मामूर ॥ मा० ॥ तो जग
दीश नलूं करे रे, साहिव हाजरा हजूर ॥ मा० ॥
चां०॥ १० ॥ कांइक कीजे संनारणुं रे, कांइक कीजे
उपकार ॥ मा० ॥ दीजे जइने ठलंनडो रे, जिहां
होय मुफ नरतार ॥ मा० ॥ चां० ॥ ११ ॥ नूंडा
तुं अंवर संचरे रे, तुजने शी लागे वार ॥ मा० ॥
नाह कठोर मेहली गयोरे, जो तुं नयण उघाड ॥
मा० ॥ चां० ॥ १२ ॥ जे कोय वेरी करे नहीं रे,
तेम करी नाठो कंत ॥ मा० ॥ जो तुं मेलावो मे
लवे रे, तुं मुफ वीर महंत ॥ मा० ॥ चां० ॥ १३ ॥
एम विलपे ते व्याकुली रे, तेहवे विहाणी रातरे ॥
मा० ॥ चंद वूप्यो रवि ऊगम्यो रे, सुंदर हूउं प्रना
त ॥ मा० ॥ चां० ॥ १४ ॥ वल्ली गुहथी नीकली रे,
आवी महोदधि तीर ॥ मा० ॥ निसासो नरती थ
कीरे, त्यां कुण जाणे पीर ॥ मा० ॥ चां० ॥ १५ ॥
पियु पियु करी नमया रडे रे, नाह मलो एक वार
॥ मा० ॥ वली चित्तडाथी चिंतवे रे, किहां मले व

नह मझार ॥ मा० ॥ चां० ॥ १६ ॥ जेह हाथेथी महेली गयो रे, त्रेवडी हुंसांतुंस ॥ मा० ॥ ते पियु केम आवी मले रे, म करय मुधा मनहुंस ॥ मा०॥ चां० ॥ १७ ॥ डुखडुं इहां कोण सांजले रे, रोये न लाजे राज ॥ मा० ॥ मोह तेणे नाणीउ रे, श्यो ठे तेहथी काज ॥ मा० ॥ चां० ॥ १८ ॥ जीहां ती हां शील सखाइउ रे, शीलथी मंगलमाल ॥ मा०॥ मोहनविजयें जली कही रे, अठ्यावीशमी ढाल ॥ मा० ॥ चां० ॥ १९ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

हवे तो नमया सुंदरी, मनमां धीरय दिरू ॥ हवणां मलशे वालमो, प्रेम विलुरू प्रसिरू ॥ १ ॥ जे ते कम्म उवचियो, तेहना जोगव्य जोग ॥ ठे गति ए संसारनी, क्षण वियोग क्षण योग ॥ २ ॥ जोगव्य तुं ताहरां कस्यां, कां तुं धरे विषाद ॥ जे जेहवुं फल वावियें, तेहवो तास सवाद ॥ ३ ॥ जो तें वावी कोदरी, शाल तुं केम लणेश ॥ पामीश क मल किहां थकी, पठर जो तुं खणेश ॥ ४ ॥ मुजने मुनियें कह्युं हतुं, कंत विठोहो जेह ॥ पूरव कर्म तणे वशे, उदये आव्यो तेह ॥ ५ ॥ प्रेम करी पलटे

नहीं, ते विरलो संसार ॥ पण इहां प्रेम किशो करे, जीहां कृतकर्म प्रसार ॥ ६ ॥

॥ ढाल उंगणत्रीशमी ॥

कोई आण मेलावे साजनां ॥ ए देशी ॥ हो उठी नमया सुंदरी, सायर तटथी एह हो ॥ आवी कदली वन्नमां, दीठुं सरोवर तेह हो ॥ १ ॥ शील सखाइ होइशे, एहने वनह मझार हो ॥ मलशे वाहलां मानवी, होशे जयजयकार हो ॥शी०॥ २ ॥ बेठी सरोवरने तटे, हियडे खटके शाल हो ॥ इहां पर हरीगयो पियुडो, आण्युं कांइ न वाल हो ॥शी०॥३॥ एह कदलीना गेहमां, रहेता लागे बीक हो ॥ उपहेली गिरिकंदरी, दीसे छे नजीक हो ॥शी०॥४॥ तजी सरवर ग्रही कंदरा, पेसी लीधो विश्राम हो ॥ निर्मल जलें भरी नानडी, मुख पखाल्युं ताम हो ॥ शी० ॥ ५ ॥ जे वनफल भूंई पड्यां, ते लेइ कीध आहार हो ॥ पवित्रपणे शुद्ध चित्तथी, ध्यान धरे नवकार हो ॥ शी० ॥ ६ ॥ एहज मंत्र प्रभावथी, अहि थयो फूलनी माल हो ॥ कुष्ट गयो जपतां थकां, पाम्यो सुख श्रीपाल हो ॥ शी० ॥ ७ ॥ शिवकुमारें ए मंत्रथी, जटिलनो पुरिसो कीध हो ॥ जिनदासें

महावज्रथी, बीजपूरक फल लीध हो ॥ शी० ॥ ८ ॥ पाम्यां भिल्लने भीलडी, मंत्रथी सुरना जोग हो ॥ गगनें उडती कोसली, एहज मंत्रने योग हो ॥ शी० ॥ ए ॥ हवे ते नमया नारीने, पीउ विण दीरघ दीह हो ॥ वरस जीसी थाये घडी, उपनी एहवी एह हो ॥ शी० ॥ १० ॥ निशि वासर नेही विना, होवे अति प्रलंब हो ॥ पूजूं जिन जेम सांजले, इहां कोइ जो लाजे बिंब हो ॥ शी० ॥ ११ ॥ गिरिवरमें नमया जमे, घणीए कीधी तलास हो ॥ तोही पण जिनराजनी, मूरत न मली तास हो ॥ शी० ॥ १२ ॥ फिरि पाठी गइ कंदरा, माटी जल लेइ हाथ हो ॥ मन मानीतो तेहनो, निपायो जगनाथ हो ॥ माटी तणो निपजावियो, नानकडो प्रासाद हो ॥ तेहमां प्रजु पधराविया, गाती सुकंठें नाद हो ॥शी०॥१३॥ स्थाप्युं नाम युगादिनुं, हरखी घणुं मनमांह हो ॥ वनफल वनमां फूलडां, ढोके नित्य सोत्साह हो ॥ शी० ॥ १४ ॥ जावें जावे जावना, कहे हो जिन अनुकूल हो ॥ माहरा नाह तणी परें, रखे होता प्रतिकूल हो ॥ शी० ॥ १५ ॥ जो ठे करुणा तादृशी, तो ठे मंगल माल हो ॥ मोहनविजयें जली कही, ...

त्रीशमी ढाल हो ॥ शी० ॥ १६ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

वीतरागने विनवे, देव शिरोमणि देव ॥ ए वनमां पामूं किहां, तुम पद पंकज सेव ॥ १ ॥ मीठी कूई कर चढी, खारा दरीया मद्य ॥ ए वेलाए तुं मव्यो, परम सनेही मुद्य ॥ २ ॥ मात पिता बांधव स्वसा, ससरो सासू कंत ॥ दुःखमांहि होय वेगलां, एक तुं सखाइ ज्ञगवंत ॥ ३ ॥ तुं करुणानिधि तुं विबुध,तु ज गुण अपरंपार ॥ ज्ञव सायरमां बूडतां, तुज पद पद्म आधार ॥ ४ ॥ एम जन्म सुकियारथो, करती नमया नित्य ॥ जूथी लही वनफल जमे, धरती ता पस वृत्ति ॥५॥ वस्त्र तणी वांधी धजा, दरी उर्द्ध बहु वान ॥ काननमें नमयासुंदरी, एम करे गुजरान ॥६॥

॥ ढाल त्रीशमी ॥

देशी वीछीयानी ॥ हांरे लाल नमया सुंदरीनो पिता, निज नयरथी चढीयो जहाजरे लाल ॥ सिंहल द्वीपनी साह्मो, सुंदर व्यवसायनें काज रे लाल ॥१॥ हुं बलिहारी रे शीलनी, नहि शीलसमो जग कोय रे लाल ॥ जेह थकी वनमें रह्यां, मनमेलु मेलो होय रे लाल ॥ हुं० ॥ २ ॥ हां० ॥ प्रवहण तरतां नीरमें,

ते पाम्यां निशाचर द्वीप रे लाल ॥ नमया तातें रे पोतने, सायर तटे राख्यां द्वीप रे लाल ॥ हुं० ॥ ३ ॥ हां० ॥ प्रवहण हुंती उतस्यां, जल इंधण लेवा लोक रे लाल ॥ सायरतटे नमया पिता, बेठो तिहां विटाइ लोक रे लाल ॥ हुं० ॥ ४ ॥ हां० ॥ दीठुं कदलीवन तिहां, अलगाथी नयणे तेण रे लाल ॥ जोवा कारण संचस्यो, एकलो न जाणे कोण रे लाल ॥हुं०॥५॥हां०॥ दीठां तेणें धरणी तलें, वनितानां पगलां गोण रे लाल ॥ चिंते इहां ए वनमां, रहेती हशे नारी कोण रे लाल ॥ हुं० ॥६॥ हां० ॥ दीसे ठे पगलां तुरतनां, हमणां गइ दीसे ठे नारी रे लाल ॥ होशे कोइक वियोगिणी, अथवा किन्नरी अनुहार रे लाल ॥ हुं० ॥७॥हां०॥ एम चिंती उतावलो, चाल्यो नमयानो तात रे लाल ॥ कदलीवन मूकी करी, गयो डुंगर निकट विख्यात रे लाल ॥हुं०॥८॥हां०॥ तिहां एक तेणे दीठी धजा, फरहरती पवन प्रकाश रे लाल ॥ जाणुं सही इहां कोइनो, रहेवानो दीसे ठे वासरे लाल ॥हुं०॥ए॥हां०॥ विण जाण्ये केम कोइना, मंदिरमांहे दीजे पाय रे लाल ॥ माह्यानी एह रीत ठे, विणतेडे कीमही न जवाय रे

लाल ॥ हुं० ॥ १० ॥ हां० ॥ संकोचाईने रह्यो, ए कलो कंदरा बार रे लाल ॥ कान देइने रे सांभले, तिहां वयणतणा भणकार रे लाल ॥ हुं० ॥ ११ ॥ हां० ॥ कोइक भूल्युं छे मानवी, इहां वसियुं दीसे छे तेह रे लाल ॥ लोकदिशा ऊभी ए ध्वजा, फर हरती कंदरा गेह रे लाल ॥ हुं० ॥ १२ ॥ हां० ॥ कान देइ वली सांभल्युं, नर किंवा नारी एह रे लाल ॥ हलुवे जेम तिहां सांभले, तेम साद ऊंल खीयो तेह रे लाल ॥ हुं० ॥ १३ ॥ हां० ॥ मूऊ पुत्री जे नर्मदा, ते सरखो दीसे छे साद रे लाल ॥ ते केम संभवियें इहां, एम मनथी करे विसंवाद रे लाल ॥ १४ ॥ हां० ॥ होय किंवा नहिं होय, मुऊ पुत्री नमया एह रे लाल ॥ बीजी कुण काही असी, एम बोले मीठी जेह रे लाल ॥हुं०॥१५॥ हां०॥ पेठो कंदरीमांहे धसि, दीठी निज पुत्री नेण रे लाल ॥ तातें बोलावी बालिका, अति मीठे मनोहर वयण रे लाल ॥ हुं० ॥ १६ ॥ हां० ॥ नमया जो जो बोलशे, निज तातथी वेण रसालरे लाल ॥ रंग रली ए त्रीशमी कही मोहनविजयें ढालरे ॥ लाल ॥ हुं० ॥ १७ ॥ सर्वगाथा

॥ दोहा ॥

नमयाए दीठो पिता, हर्षित मनमां जोर ॥ घा
राधर देखी जिस्यो, तांडव मांडे मोर ॥ १ ॥ इणे
क करी आलोचना, ए सुहणुं के साच ॥ कीहांथी
ए वनमें पिता, ए शो दीसे साच ॥ २ ॥ के कोई
वनदेवता, प्रगट्यो गुफा मझार ॥ दीसंतो दीसे पि
ता, पण केम करुं जुहार ॥ ३ ॥ बोल्यो तात सुता
प्रत्यें,रे वत्से सुण वात ॥ चित्तथी शी करे शोचना,
हुं तुं ताहरो तात ॥ ४ ॥ शुं तुं ओलखती नथी, हुं
तुज जनक सहदेव ॥ ताहरो साद सुणी इहां, सि
तवा आव्यो हेव ॥ निश्चय जाणी नर्मदा, ऊठी प्र
णम्या पाय ॥ आलिंगीने जनक पण, मल्यो हेज
न समाय ॥ ६ ॥

॥ ढाल एकत्रीशमी ॥

तुम चरणे मेरो चित्त लीनो ॥ ए देशी ॥ नमया
सुंदरी तातने कंठे, लागी छाती जराणी उत्कंठें ॥
प्रज्ञु जे करे ते मानी लीजें ॥ नयन थकी झरे आंसु
धार, जाणे त्रूटो मोती हार ॥ प्र० ॥ १ ॥ गदगद
कंठथी बोली न शके, हियडुं डुःख ते केम करहि
शके ॥ प्र० ॥ तव तेहने तातें बुचकारी, एवडुं

डुःख केम करे विचारी ॥ प्र० ॥ २ ॥ इण द्वीपें
इण वनमें तुं केम छे, कहे मुजने जेहवुं जेम छे ॥
॥प्र०॥ पासे नहीं कोइ संग सहेली, किहां गयो वा
लम तुझ महेली ॥ प्र० ॥ ३ ॥ में तुज उत्तमने
परणाइ, तिहांथी तुं इहां किण विध आइ ॥ प्र० ॥
कहे तव नमया तातने वाणी, केती कहुं हुं कर्म क
हाणी ॥ प्र० ॥ ४ ॥ जव हुं परणी पीयु गुण जोती,
राखतो तव पीयु अंबर धोती ॥ प्र० ॥ ते इहां छेह
देइ गयो वनमें, करुणा किमपि न आणी मनमें ॥
प्र० ॥ ५ ॥ में एम पीयुडानुं कूड न जाण्युं, जोले जा
वें साचुं पिछाण्युं ॥ प्र० ॥ इहां एकलडी दिहडा
गालुं, वनफलथी ए पिंझने पालुं ॥ प्र० ॥ ६ ॥ तमे
शुं करो वली शुं करे पीयुडो, पूर्व कीधां जोगवे
जीवडो ॥ प्र० ॥ जालमें जेह लख्युं ते लहीए, अंत
गंतनी केहने कहीए ॥ प्र० ॥ तुमे जाण्युं हशे मा
हरी वाला, परण्या पछे सुख लहेशे ते वाला ॥प्र०॥
पण जो माहरा वखतमें न लिखियो, वांक नहीं में
कोइनो परखियो ॥ प्र० ॥ ७ ॥ तातें निसूणी पुत्री
वाणी, सांजलतां तिहां छाती जराणी ॥ प्र० ॥ ऐ
ऐ महारी पुत्री एवां, डुःख जोगवे छे वनमांहे

केर्रा ॥ प्र० ॥ ए ॥ में विण आणे करी मूमाइ, जे एहवा कपटीने परणाइ ॥ प्र० ॥ एम कही हियडे लगाडी बाला, रखे दुःख धरती हवे गुणमाला ॥ प्र० ॥ १० ॥ नमयाने तव आणंद हुओ, दुखडाने तत दीधो हुओ ॥ प्र० ॥ मनमेलु मले एहवे टाणे, ते सुख विहु मन के जिन जाणे ॥ प्र० ॥ ११ ॥ ताढी लहेरी जेम सायर केरी, वुठा जलधर पवनें फेरी ॥ प्र० ॥ तेहथी अति टाढो वाहला मेलो, ते साचुं रखे जूठमें भेलो ॥ प्र० ॥ १२ ॥ तातजी तुमे इहां जिनवर भेटो, जव जव दुःखडां दीणेकमां मेटो ॥ प्र० ॥ तात कहे इहां जिनवर किहांथी, क हे पुत्री प्रगट्या छे इहांथी ॥ प्र० ॥ १३ ॥ ततक्षण ते प्रतिमा दरसाइ, इंगुल तेलनो दीप बनाई ॥प्र०॥ चैत्यवंदन चित्त चोखे कीधूं, दरिसणपीयूष नयणे पीधूं ॥ प्र० ॥ १४ ॥ तारण तरण तुं जिन कहेवाये, स्वामी कीसी जो तुं प्रसन्न थायें ॥ प्र० ॥ स्वामी नि रंजन निपट नीरागी, तुम चरणथी अम प्रीतडी लागी ॥ प्र० ॥ १५ ॥ आप तर्या तिम अमने ता रो, तुं शिववनिता देवणहारो ॥ प्र० ॥ जगमांहे न हि कोइ तुम सम दाता, तुं जले जायो धन धन

तुम माता ॥ प्र० ॥ १६ ॥ नमया तातें जिनस्तुति कीधी, समकित सुखडी रूडी लीधी ॥ प्र० ॥ मोह नविजयें मन स्थिर राखी, ढाल नली एकत्रीशमी नांखी ॥ प्र० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

नमयातातें जिनस्तवन, कीधूं रूडी रीत ॥ पुत्रीने एवुं कहे, अंतरंग धरि प्रीत ॥ १ ॥ जो तुऊ पियुडे परहरी, एहवा वनह मऊार ॥ तुं ते उपरे प्रीतडी, नाणीश कोईवार ॥ २ ॥ आपणने चाहे घणुं, क्षण क्षण में सो वार ॥ आपण तेहने चाहीयें, मान्य सुता निर्धार ॥ ३ ॥ हाथ नमे जो कोइने, वहेंत नमे तो कोय ॥ दिलनर दिल वे जिहां तिहां, एम नांखे सहु लोय ॥ ४ ॥ जावा दे जो ते गयो, म करिश फिकर लगार ॥ आव्य संघाते माहरे, वेडी परो कंतार ॥ ५ ॥ सिंहल द्वीप थई पढे, पहोचशुं आपणे गेह ॥ तिहां बेठी तुं पालजे, शील धर्म ससनेह ॥ ६ ॥ जो मेलो लीख्यो हशे, तो तुऊ मलशे कंत ॥ नहिं तो बेठी मंदिरें, नजजे जिन नगवंत ॥ ७ ॥

॥ ढाल बत्रीशमी ॥

आठ टकारो कंकण रे, नणदल वणक रह्यो मो

री बांह ॥ कंकण मोल लीउं ॥ ए देशी ॥ तात व
चनथी नर्मदा रे, सूरिजन हर्षित थइ मनमांहि ॥
गोरडी गुणवंती, जेहने ठे शीयल सन्नाह ॥ गो० ॥
(जेहनेठे शील सहाय पागंतरे) तात संघातें ते
संचरी रे ॥ सू० ॥ आवी प्रवहण ज्यांहि रे ॥ गो०
॥ जे० ॥ १ ॥ परिहखुं वन जिम तद नवें रे ॥सू०॥
उत्कट स्वर्गावास ॥ गो० ॥ वेठी तेह विछोहमें
रे ॥ सू० ॥ तात संघातें उल्लास ॥ गो० ॥ जे० ॥
॥ २ ॥ नोजन कीधां नावतां रे ॥सू०॥ पहेख्यो नौ
तन वेष ॥ गो० ॥ जो सन्माने ठोरडुं रे ॥ सू० ॥
तेहमां केहो विशेष ॥ गो० ॥ जे० ॥ ३ ॥ वेगां स
घलां मानवी रे ॥ सू० ॥ प्रवहणमांहे जे वार
॥ गो० ॥ मूक्यो पोत खलासीयें रे ॥ सू० ॥ महो
दधि मध्य ते वार ॥ गो० ॥ जे० ॥ ४ ॥ जेहवो वेग
उतावलो रे ॥ सू० ॥ त्रूटे तंती तार ॥ गो० ॥ अ
धिके वेगे तेहथी रे ॥ सू० ॥ प्रवहण करे रे प्रचार
॥ गो० ॥ जे० ॥ ५ ॥ सिंहलद्वीपें जातां थकां रे
॥ सू० ॥ पवन थयो प्रतिकूल ॥ गो० ॥ पवने प्रेख्यां
आवियां रे, अनुक्रमें बब्बर कूल ॥ गो० जे० ॥ ६ ॥
देखी बब्बर कूलने ॥ सू० ॥ ठीप्यां प्रवहण तुंग

॥ गो० ॥ भेरा सायरने तटें रे ॥ सू० ॥ ताण्या वर पंचरंग ॥ गो० ॥ जे० ॥ ७ ॥ सहित सुता नमया पिता रे ॥ सू० ॥ आव्यो भेरा मांह ॥ गो० ॥ वे सारी नमया भणी रे ॥ सू० ॥ एकांते सोत्साह ॥ गो० ॥ जे० ॥ ८ ॥ भोजन प्रमुख भलां कर्यां रे, नमयादिकें तेणी वार ॥ गो० ॥ प्रहर दिवस जब पाछलो रे ॥ सू० ॥ शोचे शाह तेवार ॥ गो० ॥ जे० ॥ ९ ॥ नमयाने मूकी इहां रे ॥ सू० ॥ भेटुं बब्बर भूप ॥ गो० ॥ पुरमे वली रोजगारनुं रे ॥ सू० ॥ दीसे छे केहवुं स्वरूप ॥ गो० ॥ ॥ जे० ॥ ॥ १० ॥ अंबर पहेर्यां सुंदर रे, पहेर्या नर शृंगार ॥ गो० ॥ लीधूं अमूलक भेटणुं रे ॥ सू० ॥ साथें सवि परिवार ॥ गो० ॥ जे० ॥ ११ ॥ पुत्रीने कहे पेखजो रे ॥ सू० ॥ पट मंडप मनुहार ॥ गो० ॥ आवीश हुं हमणां फरी रे ॥ सू० ॥ जाउंछुं नयर मझार ॥ गो० ॥ जे० ॥ १२ ॥ एम कही नमयानो पिता रे ॥ सू० ॥ परिवर्यो परिकर साथ रे ॥गो०॥ एम पहोंतो दरबारमें रे ॥ सू० ॥ जिहां बेठो नृप नाथ ॥ गो०॥ जे०॥ १३ ॥ बत्रीश राजकुली सजी रे ॥ सू० ॥ बत्ते मकरध्वज राय ॥ गो० ॥ नमया तार

पाधरा रे ॥ सू० ॥ प्रणम्या पुरपति पाय ॥ गो० जे० ॥ १४ ॥ परदेशी व्यापारियो रे ॥ सू० ॥ जा णी नृप दे मान ॥ गो० ॥ आदरथी मशुं जेटणुं रे ॥ सू० ॥ नृपें दीधां पान ॥ गो० ॥ जे० ॥१५॥ कुशला लाप परस्परें रे ॥ सू० ॥ पूछे आणी प्रेम ॥ गो० ॥ पुरमांहे व्यापारनी रे ॥ सू० ॥ मागी आणा तेम ॥ गो० ॥ जे० ॥ १६ ॥ प्रणमी नृप नमयापिता रे ॥ सू० ॥ आव्यो आपणे गम ॥ गो० ॥ ढाल कही बत्रीशमी रे ॥ सू० ॥ मोहने एह अभिराम ॥ गो० ॥ जे० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

वेच्यां नमयाने पिता, करियाणां पुरमांहि ॥ दाम कस्या गांठें चला, परखी पारखमांहि ॥ १ ॥ पुर मांहे कीरति थई, नमया जनकनी जोर ॥ एहवो कोण अपत्य छे, जे होये गुण चोर ॥ २ ॥ सुपुरुष जिहां जाये तिहां, पामे आदर मान ॥ नागरवल्ली मान लहे, जाते तो छे पान ॥ ३ ॥ तृणचर नाभि यकी थई, मृगमदनी शी ज्ञाति ॥ पण जो गुण छे तेहमें, तो छे जग विख्याति ॥ ४ ॥ नमया तात नि रंतरें, आवे नृप दरबार ॥ बब्बरमांहे दिन थया,

वहुला हेज भंकार ॥ ५ ॥ समया केरामां रहे, ता त करे संभाल ॥ वालमने संभारती, निगमे दिवस विशाल ॥ ६ ॥

॥ ढाल तेत्रीशमी ॥

सलूणी जोगण रूडी वे ॥ ए देशी ॥ वब्बर कूलमांहिं वसे ठे,हारिणी गणिका एक ॥ जेहथी पुरंदर अप्सरा,रही हारी तेहथी विवेक ॥ कर्मनी गति न्यारी ठे, अरे हां जूठ विचारी वे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ हारिणी जन मन हारिणी साची, कारिणी मोह प्रपंच ॥ प्रगट कपटनी तेह सारिणी, वधारिणी प्रीति रोमंच ॥ क० ॥ २ ॥ मधुर वयण वली नयण अनोपम, सयण करे क्षणमांहि ॥ प्रगटी मयणतणी भली, ए तो रयणि ज्योत विभाहि ॥ क० ॥ ३ ॥ गणिका रयण तणी ठे कणिका, ला वण्य अणिका समान ॥ अमृतनी ठे वेलडी, स्नेह यंत्रनी कणिका निदान ॥ क० ॥ ४ ॥ नारी नृत्यकारीयो भारी, एहवी अटारी तेह ॥ विषय कटारी विभावरी, शील शूरने कंपावे तेह ॥ क० ॥५॥ कामि जनने मनमें लागी, विषय जननी संसार ॥ एहवी गणिका रूवडी, जस हाथे वडो किरतार

॥ क० ॥ ६ ॥ बब्बर रायें तेहथी दींधी, नव भारिनी सेव ॥ धरणीधव माने घणुं, एह विषयी जननी देव ॥ क० ॥ ७ ॥ एक दिन नृप कहे ते गणिकाने, माग्य कांइक मुझ पास ॥ तुझ गुणें रीज्यो हुं घणो, हुं पूरुं ताहरी आश ॥ क० ॥ ८ ॥ गणिका कहे सुणो नयर नरेश्वर, जो छे करुणा तुझ ॥ तो उणती छे केहनी, महाराज मंदिरें मूझ ॥ क० ॥ ए ॥ पण एक मागुं पसाय तुमारो, सारो मोरुं काम ॥ जे सारथवाह आपणे, इहां घडवा आवे दास ॥ क० ॥ १० ॥ तेह अठोत्तर सहस सोवनना, आपे मुझ दीनार ॥ आवे मंदिर माहरे, सुख जोगवे जेह सार ॥ क० ॥ ११ ॥ ते मुझ मंदिर जो नवि आवे, तो देवुं तस अपमान ॥ जो मुझने माग्युं दीयो, तो देउ एह दिवान ॥ क ॥ १२ ॥ नृप कहे जोली ए शुं मागे, जो मागे ते प्रमाण ॥ जे कह्युं ते लेजें सुखे, कुंण रंक अने कुंण राण ॥ क० ॥ १३ ॥ नृपना वयणथकी ते गणिका, आवे जे सारथवाह ॥ लेवे धन ते पासथी करे, केलि अनंत उत्साह ॥ क० ॥ १४ ॥ हारिणी गणिकायें आव्यो जाणी, नर्मदासुंदरी तात ॥ जे किरतारें नला क

स्या, तस ग्नानी केम रहे वात ॥ क० ॥ १५ ॥
णिका मिलवा आतुर हूइ, तेम वली धननो लोज
जो जो एह संसारमां, नथी दीसतो लोजनो थो
॥ क० ॥ १६ ॥ लोज ऊंमो ते गुहिर महोद
कोइक लाजे पार ॥ ढाल कही तेत्रीशमी, ए
हनविजयें सार ॥ क० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

हवे ते गणिका हारिणी, आलोचे स्वयमेव ॥
टी गुण पेटी जली, ते तेटी ततखेव ॥ १ ॥ रे चे
सायर तटें, पटकुल ताण्यो जेण ॥ तेहने जेम ते
जोलवी, मंदिर आणो तेण ॥ २ ॥ जो ते नाका
कहे, तो तुं कहेजे एम ॥ अम मंदिर आव्या विन
रे नर जाइश केम ॥ ३ ॥ मुड्रा अष्टोत्तर सह
हेमतणी अम देह ॥ अम स्वामिनी मळ्या पछ
जे जाणे ते करेह ॥ ४ ॥ चेटीने एम शीखवी, मू
तेणें विख्यात ॥ ते पण आवी पाधरी, ज्यां छे
मयातात ॥५॥ करीप्रणाम जजी रही, दासी करे
रदास॥अहो सार्थ गणिका तिणें, मूकी छे तुम पा
॥६॥ जे दिन तुमने सांजळ्या, ते दिन हूंती तेह
मिलवा मन तरसे घणुं, निपट बंधाणो नेह ॥ ७

॥ ढाल चोत्रीशमी ॥

छेडो नांजी ॥ एदेशी ॥ नमया तात ते दासी वयणें, घणुं अचणुं ए खेदोणो, परदारानी संगति निसुणी, हियडे अति शरमाणो ॥१॥ अलगी रहेने हांरे कहेनी छे तुं दासी, अ० ॥ हांरे शी मांडी कू डनी फांसी ॥ अ० ॥ हांरे तुं दिसती नथी विश्वासी अ० ॥ए आंकणी॥ अरे दूती किहां तुं हुंती, यइ धूती जे आवी ॥ जारे अवूती देश्श जूती, चढशे जूति साची ॥ अ० ॥ २ ॥ अमें व्यवहारी किम परनारी, सेवुं जोय विचारी ॥ खारी विषथी विषय कटारी, मतवारी धूतारी ॥ अ० ॥ ३ ॥ अमें संतोषी हुं निज दारा, केम सेवुं परदारा ॥ जोगवतां निर्धारा सारा, एहनां फल छे खारां ॥ अ० ॥ ४ ॥ पररामाना जे इने जामा, जन्म्या तेह निकामा ॥ मुख सामा जोई नवि पाम्या, धन्य जे एम तजे वामा ॥ अ० ॥ ५ ॥ अमें श्रावक आगम जावक, नावक मिथ्या अराति॥ परदारा पावकमां पगलां, देतां केम वहे गाती ॥ अ० ॥ ६ ॥ दानवराय अटंका वंका, शूर पण धरता शंका ॥ दाशरथीयें देई कंका, लंका कीधी पंका ॥ ॥ ७ ॥ पदमोत्तर जस अविचल उत्तर, सायर उत्तर

माहारा राज ॥ निपट न लोभी थाउं ॥ए आकणी॥ कहेजो स्वामी मया करो मोसुं, मंदिर करो गज गाह ॥ मा० ॥ १ ॥ तुमथी भला भला सारथवाह, आंगण अमचे आया ॥मा०॥ दीसो छो तेहथी चतुर घणेरा, फोगट शी करो माया ॥ मा० ॥ २ ॥ हूकम अछे मूझ नरवर केरो, लेउंछुं तिण दीनार ॥ मा०॥ नहीं तो अमारे घेर कोण आवे, अमे गणिका अव तार ॥ मा० ॥ ३ ॥ जो तमे माहरे गेह न आवो, तो किम लेउ दीनार॥मा०॥ मन माने तो करजो क्रीडा, पण आवो एक वार ॥मा०॥४॥ वयणथी न होवे मेलो, तस धनें केम मन माने ॥ मा० ॥ रे रे दासी खासी माहरी, एम तुं कहेजे छाने ॥ मा० ॥५॥ आवी दासी तरत उजाणी, जिहां छे चीवरगेह ॥ मा० अहो सार थपति विनति मानो अमथी आणो नेह ॥ मा० ॥६॥ मूझ ठकुराणी घणुं लुब्धाणी, तुमहुंती निर्धार ॥ मा० ॥ मंदिरसुधी तो करो करुणा, सायं लेइ दी नार ॥ मा० ॥ ७ ॥ वातडीए तो एम मत वाहो, एम केम मूके कोय ॥ मा० ॥ हे प्रिय प्रेम एम वली आवे, वाते वडां नवि होय ॥ मा० ॥ ८ ॥ जो मन माने तो तिहां रहेजो, पराणे न होवे प्री

त ॥ मा० ॥ गाम वसे नहिं वोल्ये कणबी, जिहां तिहां एह छे रीत ॥ मा० ॥ ९ ॥ जो तुमें नहीं आवो तो तुमने, चालवा नहिं दे राय ॥ मा० ॥ नानें महोटे तुमची आगल, शी कहुं वात बनाय ॥मा० ॥ १० ॥ शाहें आलोचीने जोयुं, एतो गणिका जाति ॥ मा० ॥ नर सुर असुर ते पार न पामे, जे एहना अवदात ॥ मा० ॥ ११ ॥ जे कोइ नारी थकी हठ ताणे, ते सम मूढ न कोय ॥मा०॥ अपर वली तस गायुं गाये, ते पण तेहवो होय ॥ मा० ॥ १२॥ करीए आपणा मननुं जाएयुं, ताणीयें नहिं कोइ साथे ॥ मा० ॥ शुं करे कामिनी जो होय आपणुं, मनडुं आपणे हाथे ॥ मा० ॥ १३ ॥ दासी वयणें जनक नमयानो, लेइ तुरत दीनार ॥ मा० ॥ आव्यो दासी साथे सुंदर, गणिकाने आगार ॥ मा० ॥ ॥ १४ ॥ गणिकायें आसन वेसण दीधुं, घणी करी मनुहार ॥ मा० ॥ भले तुमें स्वामी महेल पधार्या, मोहोटी करी किरतार ॥मा०॥१५॥ एवडी शी करी खांचा ताणी, कनडीथी महाराज ॥ मा० ॥ नृपनो हुकुम अने हुं चाहुं, तो तुमने शी लाज ॥ मा० ॥ ॥ १६ ॥ साकर घोले मुखथी गणिका, सारथवाह

निहाले ॥ मा० ॥ मोहनविजये रूडी जांखी, पांत्री शमी ए ढाले ॥ मा० ॥ १७ ॥ सर्वगाथा

॥ दोहा ॥

गणिकाए मांरुया घणा, हाव जाव धरी वाच ॥ पण जोलववा शाहने, सा नवि लाजे दाव ॥ १ ॥ शाह तिहां मन दृढ करी, बेठो चित्र समान ॥ वचन सुणी गणिका तणां, एकरंगे दीये कान ॥ २ ॥ जिहां शीलसन्नाह वर, तिहां कुसुमायुध वाण, किमपि न जोरो करिशके, मन माने तेम ताण ॥ ३ ॥ नमयातात कहे तहां, रे गणिका अवधार ॥ लटपट जावा दे परी, ए ल्यो तुम दीनार ॥ ४ ॥ अमे श्रावक जिन रायना, परदारा परिहार ॥ देखी पेखी अम थकी, केम होये एह आचार ॥५॥ मान्य कह्युं तुं माहरुं, अमे आव्या आगार ॥ जलुं थयुं तुमने मल्या, सोप्यां तुम दीनार ॥ ६ ॥

॥ ढाल ठत्रीशमी ॥

अमे मही आरु आदि जुगादि, तुं कीहांनो ठेदाणी रे ॥ ए देशी ॥ कहे दासी हारिणी गणिकाने, रही श्रवणमां पेसी रे ॥ एहने फेरे कामिनी रूडी, मनोहर नानडे वेशें राज ॥ १ ॥ हुं तो एह

मे मटके मोहीरे ॥ देही कुंकुमने वान, जेही रे अप्सराने मान ॥ हुं० ॥ ए आंकणी ॥ नयण देइने घडी धातायें, कहेतां नावे लासे रे ॥ आज तो व धती दीठी आजा, काले कीहां ते जासे राज ॥हुं० ॥ २ ॥ नागकुमारी देवकुमारी, तेम ए मानवनी कु मारीरे ॥ अहो ठकुराणी वाला उपरें, नाखुं तेह उ वारी राज ॥ हुं० ॥ ३ ॥ शुं जाणुं एहनी छे पुत्री किंवा एहनी नारी रे ॥ में तो जोले जावें दीठी, पण नावे ते निरधारी राज ॥ हुं० ॥ ४ ॥ ते कन्या जेम तेम करतां, आपण मंदिरें आवे रे ॥ कल्पल ता सम इछित दाता, दीठेहीज सुहावे राज ॥ हुं० ॥ ५ ॥ ए हरिणाक्षी इंडु अमृतथी, नीसरी दीसे आखी रे ॥ जो एहमां कांइ कूडुं जाखुं, तो सरजण हार छे साखी राज ॥ हुं० ॥ ६ ॥ एमही पण ए सारथवाहो, आपणे वश नवि होशे रे ॥ तो तमे कांये जूलो ठकुराणी, नारी न ल्यो कां खोंची राज हुं० ॥ ७ ॥ काम सरे वली मान वधे तेम, लोकें नवि होय हांसी रे ॥ अने वली सारथवाह न जा णे, तो तमने शाबासी राज, ॥ हुं० ॥ ८ ॥ गणिका दासी वयण सुणीने, रही क्षण एक तिहां ठानी रे,

मीठी मीठी वातो मांडी, शाह थकी अभिमानी राज ॥ हुं० ॥ ए ॥ स्वामी किण नयरें वसो छो, शी खबरो तुम केरी रे ॥ दीसो छो दृढधर्मी सारा, कीर्ति तुम अभिनेरी राज ॥ हुं० ॥ १० ॥ मुद्री केणें एह घडी छे, कुंदन पण छे सारो रे ॥ मणा न थी कारीगरमांहे, धन्य एहनो घडनारो राज ॥ ॥ हुं० ॥ ११ ॥ सोवनकार इंहाना मूरख, एहवी न घडे कोई रे ॥ काढी आलो मुजने जोवा, तत क्षण देइश जोई राज ॥ हुं० ॥ १२ ॥ जो कारीगर एहवो होये, तो एहवी घडावुं रे ॥ चोयफेर मूद्रिने चूनी, ठेल ठेले जडावुं राज ॥ हुं० ॥ १३ ॥ नमया तातें ते गणिकाने, दीधी मुद्रिका काढीरे ॥ क्षण एक तो रसनायें वखाणी, आंगलीए करी गाढी राज ॥हुं०॥१४॥ दासीने गणिकायें तेडी, ए मुद्री तुं लेजे रे ॥ जाजे सीधी एहने केरे, तेह नारीने देजे राज ॥ हुं० ॥ १५ ॥ कहेजे सार्थप तुजने तेडे, आ मेली सहिनाणी रे ॥ जूलवणीमां नांखी तेहने, आण जे ईहां सपराणी राज ॥ हुं० ॥ १६ ॥ दासी पहोती केरा सांमी, कर ग्रही मूद्री राखी रे ॥ ए

त्रीशमी ढाल सोहाती, मोहनविजयें जोली राज॥ हुं० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा

॥ दोहा ॥

गणिका तो वेठी करे, मीठी मीठी वात ॥ कपट नजांणे तेहनुं, नमयाकेरो तात ॥१॥ नमया सुंदरी नेकने, दासी आवी तेह ॥ करी प्रणाम ऊनी रही, जांखे एम धरी नेह ॥ २ ॥ सारथ वाह तुमारडे, शुं थाये कहो मूऊ ॥ नमया कहे माहरो पिता, ए संबंध अगुद्य ॥ ३ ॥ दासी कहे धन्य तुमपिता, तुं ठे पुत्री जास ॥ उदधितणी पुत्री रमा, तेहवो तुऊ आवास ॥ ४ ॥ अमघर तात तुमारडो, वेठो मांऊी गुद्य ॥ तिहांथी तुमने तेडवा, एम मूकी ठे मुऊ ॥ ५ ॥ ते रखे जूतुं मानती, व्यो सहीनाणी एह ॥ तात हाथनी मुद्रिका, एम कही दीधी तेह ॥ ६ ॥

॥ ढाल साडत्रीशमी ॥

सखीरी आयो वसंत अटारडो ॥ ए देशी ॥ सखीरी दासी कहे नमया जणी नमया जणी उगो होय असूर ॥ सुगुण जनमोहना ॥ स० ॥ तात जोता हशे वाटडी ॥ वा० ॥ मंदिर पण ठे दूर ॥

सु० ॥ स० ॥ १ ॥ नहिं आवो हमणां तुमे ॥ ह०॥
तातजी करशे रीश ॥ सु० ॥ स० ॥ वीजो फेरो मू
कने ॥ मू० ॥ विशवावीश ॥ सु० ॥ स० ॥ २ ॥ अ
म ठकुराणीने पुत्रिका ॥ पु० ॥ छे अति म्हाही तेह
सु० ॥ स० ॥ तातें तस देखी करी ॥ दे० ॥ तुमने
संजाख्यां एह ॥ सु० ॥ स० ॥ ३ ॥ तात कहे मुज
बालिका॥बा०॥ अति म्हाही गुणवंत॥सु०॥स०॥अम ठ
कुराणी पण कहे॥प०॥मुज पुत्री अति संत॥सु०स०॥४॥
पुत्रीमाटें परस्परें ॥ प० ॥ परठी तेणे होड ॥ सु० ॥
स० ॥ हूकम तेणें बीहु मेलव्यो ॥ मे० ॥ केहमां
दीजें खोड ॥ सु० ॥ स० ॥ ५ ॥ तातें तेणे कारणें ॥
का० ॥ मूद्री दीधी मुज ॥ सु० ॥ स० ॥ तत्क्षण मूकी
तेडवा ॥ ते० ॥ अहो नमया कहुं तुज ॥ सु० ॥
स० ॥ ६ ॥ जोउ निहाली मुद्रिका, ॥ मु० ॥ छे तुम
तातनुं नाम ॥ सु० ॥ स० ॥ कूड अमें केम जांखीए
जां० ॥ सोने न लागे श्याम ॥ सु० ॥ स० ॥ ७ ॥ जो
जूठ करी त्रेवडो ॥ त्रे० ॥ तो कांइ न उलखे एह ॥
सु० ॥ स० ॥ कर कंकण शी आरशी ॥ आ० ॥ जोवी
पडे छे जेह ॥ सु० ॥ स० ॥ ८ ॥ नमया सुंदरी मुद्रि
का ॥ मु० ॥ देखी वांच्युं नाम ॥ सु० ॥ स० ॥ तात

तथा करनी खरी ॥ क० ॥ मैं ठलवी अभिराम ॥ सु० ॥ स० ॥ ए ॥ तात वचन केम लोपियें ॥ लो० ॥ एम कह्यो मनथी विचार ॥ सु० ॥ स० ॥ गणिका कूड न जाणियुं ॥ न० ॥ नमयायें तेणी वार ॥ सु० ॥ स० ॥ १० ॥ दासी साथे संचरी ॥ सं० ॥ नमया सुंदरी तेह ॥ सु० ॥ स० ॥ जेम कोइ नर जाणे नहीं ॥ जा० ॥ तिण विधे आणी गेह ॥ सु० ॥ स० ॥ ११ ॥ वेसारी प्रछन्न ठेरडे ॥ ठं० ॥ नमयाने सोत्साह ॥ सु० ॥ स० ॥ खबर करी गणिका भणी ॥ ग० ॥ दासीयें समस्यामांहि ॥ सु० ॥ स० ॥ १२ ॥ नमया पासेंथी मुड्रिका ॥ मु० ॥ लीधी करीने प्रपंच ॥ सु० ॥ स० ॥ दीधी गणिकाने दासीयें ॥ दा० ॥ जूठं कपटीना संच ॥ सु० ॥ स० ॥ १३ ॥ सोंपी नमया तातने ॥ ता० ॥ पाठी मुड्रिका तेह ॥ सु० ॥ स० ॥ मलशे कारीगर एहवो ॥ ए० ॥ तोजी मगावशुं एह ॥ सु० ॥ स० ॥ १४ ॥ मेरे पधारो साहिबा ॥ सा० ॥ करवो हशे रोजगार ॥ सु० ॥ स० ॥ राखजो अम ऊपर मया ॥ ऊ० ॥ सोंपो अमने दीनार ॥ सु० ॥ स० ॥ १५ ॥ गणिका वयणें हरखियो ॥ ह० ॥ नमया केरो तात ॥ सु० ॥ स० ॥ सूंपी दीनार ऊठ्यो तदा ॥ ऊ० ॥ देई

आशिष विख्यात ॥ सु० ॥ स० ॥ १५ ॥ आव्यो शा
ह उतावलो ॥ उ० ॥ फेरे थई उजमाल ॥ सु० ॥
स० ॥ ए कही साडत्रीशमी ॥ सा० ॥ मोहनविजयें
ढाल ॥ सु० ॥ स० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

आव्यो नमयानो पिता, फेरामांहि जेवार ॥ न
मया सुंदरी पुत्रिका, दीठी नहीं तेवार ॥ १ ॥ अर
ही परही अंगजा, जोइ घणुं ए तेण ॥ पण नमया
लाभे नहीं, खबर न जाणी केण ॥ २ ॥ शाह करे
आलोचना, कुण अपहरी गयो एह ॥ एम अण चिं
ति किहां गई, हूंती पुत्री जेह ॥ ३ ॥ बब्बर कूलें घर
घरे, जोई नमया तात ॥ पण नमयानी सोहणे, को
इ न जाणे वात ॥ ४ ॥ सेवकने उलंभडा, देवे नमया
तात ॥ फेराथी मुझ अंगजा, किणें अपहरी कहो
वात ॥ ५ ॥ शुं जाणुं सेवक कहे, अमने न थइ व्य
क्ति ॥ मानव तो कुण अपहरे, थइ कोइ दैवी शक्ति ॥ ६ ॥

॥ ढाल आडत्रीशमी ॥

झूलडी काजल सारे राज, देखो नमर नजारा
कामारे राज ॥ मृग नयणी नागरी झूली ॥ ए देशी
॥ नमया तात विचारे राज, क्षण क्षणमें पुत्री संभा

रे राज, केम विसारे कह्यो ॥ गुणवंती ॥ ए आंक
णी ॥ कर्म कठिन धीय केरां ॥ रा० ॥ केह्वी करेछे
फेरां ॥ रा० ॥ कि० ॥ १ ॥ एक तो पीयुडे मूकी ॥
रा० ॥ वनमाहीथी विगर सलूकी ॥ रा० कि० ॥ हुं
तिहांथी लइ आव्यो॥रा०॥तो ते सूतो सिंह जगाव्यो
॥ रा० ॥ कि० ॥ २ ॥ अपहरी जे लेइ गयो कोइ
॥ रा० ॥ पुरमांहिंतो घणुंए जोइ ॥ रा० ॥ कि० ॥
पुत्री गइ वली हासो ॥ रा० ॥ एतो कोइक हुर्ड त
मासो ॥ रा० ॥ कि० ॥ ३ ॥ दुःख धरतो ते व्यव
हारी ॥ रा० ॥ तिहां तेड्या ताम वेपारी ॥ रा० ॥
कि० ॥ वेची करीयाणां सीधां ॥ रा० ॥ मुह माग्या
पेसा लीधा ॥ रा० ॥ कि० ॥ ४ ॥ प्रवहण सवि स
ज कीधां ॥ रा० ॥ सवि साथ वेसारी लीधां ॥ रा०
॥ कि० ॥ बब्बर कूल निवारी ॥ रा० ॥ प्रवहण ते
मेल्यां हकारी ॥ रा० ॥ कि० ॥ ५ ॥ अनुक्रमें त्तरु
अच्च आव्या ॥ रा० ॥ सायर तटें पोत ठीपाव्यां
॥ रा० ॥ कि० ॥ भृगुकछमांही धर्मधारी ॥ रा० ॥
जिनदास अछे व्यवहारी ॥ रा० ॥ कि० ॥ ६ ॥ न
मया तातनो तेही ॥ रा० ॥ परिपूरण अछेय स
नेही ॥ रा० ॥ कि० ॥ वाहणने आव्यां जाणी,

॥ रा० ॥ ते सांह्मो आव्यो सपराणी ॥ रा० ॥ कि० ॥ ७ ॥ हियडे हियडुं ज्नेली ॥ रा० ॥ तीहां मिलिया बेहु मन मेली ॥ रा० ॥ कि० ॥ नमया तात उल्लासें ॥ रा० ॥ घर तेडाव्या जिनदासें ॥ रा० ॥ कि० ॥ ८ ॥ सुज्नग रसोइ कीधी ॥ रा० ॥ जीमवाने थाली दीधी ॥रा०॥ कि० ॥ ज्नोजन करीने उव्या ॥ रा० ॥ फोफल पण उपर घूव्यां ॥ रा० ॥ कि० ॥ ए ॥ बिहु मित्र बेठा एकांते ॥ रा० ॥ अन्योन्य हूआ उच्यांते ॥ रा० ॥ कीम नमया सुंदरी केरी ॥ रा० ॥ कही वातो अति अज्निनेरी ॥ रा० कि० ॥ १० ॥ नमया पुत्री माहारी ॥रा०॥ अहो मित्र ज्नत्रीजी ताहरी ॥ रा० ॥ कि० ॥ बब्बरकूल कलोइ ॥ रा० ॥ तिहां अपहरी लेइ गयो कोइ ॥ रा० कि० ॥ ११ ॥ ढुंढी आपणें साथें ॥ रा० ॥ पण पुत्री न आवी हाथे ॥ रा० ॥ एक तिहां गणिका कहावे ॥ रा० ॥ मुऊ तास ज्नरुंसो आवे ॥रा०॥कि०॥ १२ ॥ मानी ठे तास राजाए ॥ रा० ॥ होवे तो केम कहाये ॥ रा० ॥ कि० ॥ जो तमे तिणी पुर जावो ॥ रा० ॥ तो मुऊ पुत्रीनी खबर लेइ आवो ॥ रा० ॥ कि० ॥ १३ ॥ मानीश पाड तुमारो ॥ रा० ॥ इहां

कीजें काज मारो ॥ रा० ॥ कि० ॥ पुत्री दुःख केम सहीयें ॥ रा० ॥ अंतर गतिनी केहने कहीयें ॥ रा० ॥ १४ ॥ कही जिनदास सनेही ॥ रा० ॥ अमे कारज करशुं एही ॥ रा० ॥ कि० ॥ एम शुं वेण वढावो ॥ रा० ॥ फोगट शुं पाड चढावो ॥रा०॥ कि० ॥ १५ ॥ जाइश बब्बर कूलें ॥ रा० ॥ तिहां रहीश वेष अनुकूलें ॥ रा० ॥ कि० ॥ उलवी नमया जिहांथी ॥रा०॥ लेइ आवीश तेहने तिहांथी ॥रा० ॥ कि० ॥ १६ ॥ जो नमया लेई आवुं ॥ रा० ॥ तो मित्रनो मुजरो पावुं ॥ रा० ॥ कि० ॥ मोहने मन स्थिर राखी ॥ रा० ॥ आडत्रीशमी ढाल ए चाखी ॥ रा० ॥ कि० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

नमया तातें मित्रने, एम कही संदेश ॥ निज प्रवहण सज्ज कर्यां, पाम्यो आप निवेश ॥ १ ॥ सयल कुटुंब मिल्यां तिहां, नमया जनकें ताम ॥ बब्बर कूलतणी कही, वीतक वातो ताम ॥ २ ॥ कहे कुटुंब न करो कीसी, फीकर तुमे मनमांह ॥ जलूं हशे मिलशे सुता, करो हेज सोठांहि ॥ ३ ॥ एह वे भरुयच नयरथी, पोत भरी सुविलास ॥ बब्बर

कूल दिशाजणी, चाल्यो ते जिनदास ॥ ४ ॥ सायर लहर ऊकोलथी, चाले प्रवहण अनुकूल ॥ ते अनुक्रमें आवीया, तरतां बब्बर कूल ॥ ५ ॥ जिनदास लेई नेटणुं, नेट्यो बब्बर राय ॥ पाम्यो मान महोत्सवें, तिम पंचांग पसाय ॥ ६ ॥

॥ ढाल उंगणचालीशमी ॥

हरीयामन लाग्यो, ए देशी ॥ नृप आदेशें नगरमां, वणिज करे जिनदास रे॥नेही केम वीसरे ॥ वचन संजाख्युं मित्रनुं, हियडामां सुविलास रे ॥ ने०॥ १ ॥ सहदेवें मूऊने इहां, पुत्री जोवा काज रे ने० ॥ मूक्यो पोतानो गणी, हेतुउं जाणी आज ॥ ने० ॥ २ ॥ में पण मित्रने कह्युं अछे, आणीश पुत्री तूऊरे ॥ ने० ॥ ते तोहुं जूली गयो, मांड्यो व्यापार अबूऊ रे ॥ ने० ॥ ३ ॥ जाणतो हशे मित्र माहरो, जे एह मुऊ जिनदास रे ॥ ने० ॥ बब्बरमां करतो हशे, मुऊ पुत्रीनी तलास रे ॥ ने० ॥ ४ ॥ ते मुऊने नवि सांजरे, गाजे छे रोहिण मांहिरे, ॥ ने० ॥ ए मुऊने जुगतुं नहिं, केलवुं प्रपंच कांई रे ॥ ने० ॥ ५ ॥ जिहां मनमेलो आपणो तेहथी केम हुवे कूड, रे ॥ ने० ॥ लोक उखाणो एम कहे,

जिहांकूड तिहां धूड रे ॥ ने० ॥ ६ ॥ उतारे कूप कविने जो सुरिजन सिरदार रे ॥ ने० ॥ नेह वि लुधां मानवी, ते केम करे नाकार रे ॥ ने० ॥ ७ ॥ नेह महाधन जगतमां, जो करी जाणे कोय रे ॥ ने० ॥ फोगटीयांनो नेहलो, निर्वाहो नवि होय रे ॥ ने० ॥ ८ ॥ हिये जूदा होठे जूदा, तेहथी केम पति आयरे ॥ ने० ॥ साचा स्नेहि सजन तणी, ले ठे लोक वलाइ रे ॥ ने०॥ ९ ॥ शापुरुषनी प्रीतडी, जेहवी पहाणे रेह रे ॥ ने० ॥ ओठा प्रीतडी जे हवी, पावशें जीरण गेहरे ॥ ने० ॥ १० ॥ करिय नरुंसो आपणो, खोले दीधुं शीपरे ॥ ने० ॥ कूड जो करीयें तेहथी, तो केम सहे जगदीशरे ॥ ने० ॥ ११ ॥ नेह तणें वशें हलधरे, कंधे राख्यो मुकुंद रे ॥ ने० ॥ नाद तणे नेहकरी, हरिण पडे ठे फं दरे ॥ ने० ॥ १२ ॥ कहेवायें न एकना, फरीयें जे गेह गेह रे, ॥ ने० ॥ ते जूठा माणसथकी, केम निवहाये, नेह रे ॥ ने० ॥ १३ ॥ चंच पडे पीडाय बहु, गयणे जो उमहे नहि मेह रे, ॥ ने० ॥ गंगा जल नवि पीये, जूवो चातकनो नेह रे ॥ ने०॥ १४ ॥ जो पंकज नवि संपजे; जिहां सरवर अवतंसरे ॥

ने० ॥ अवर कुक्कुटनी परें, न खणे ते कहियें हंस रे ॥ने०॥ १५ ॥ तेमाटे संसारमां, नेह अनोपम वस्तु रे ॥ ने० ॥ जे नेही हो आपणा, अहोनिश कुशला अस्तु रे ॥ १६ ॥ नेहीनी जे पुत्रिका, जोउं नयर मकार रे ॥ ने० ॥ ढाल ए उंगणचालीशमी, कही मोहनें शिरदार रे ॥ ने० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा॥

॥ दोहा ॥

बब्बरकूलें घरोघरे, जोयुं ते जिनदास ॥ पण ते नमया सुंदरी, नावी मूक तलास ॥ १ ॥ सूरिजन आगल हुं खरो, केम थाईश हेव ॥ उरग ढबुं दरीनो इहां, न्याय मिल्यो जगदेव ॥ २ ॥ तो पण उद्यम कीजीये, उद्यम वडो संसार ॥ विण धेनु उद्यम थकी, पय पीवे मांजार ॥ ३ ॥ ते जिनदास अहोनिशें, जोवे नगरागार ॥ हवे श्रोताजन सांभलो, नमयानो अधिकार ॥ ४ ॥ जे दिन नमयानो पिता, चाल्यो आपण देश ॥ ते दिनथी हर्षित थई, गणिका चित्त विशेष ॥ ५ ॥ अति धूतारी ठे हारिणी, चिंते चित्तमकार ॥ मुक आयत्तें ए निश्चें, हुइ हवे ए नार ॥ ६ ॥

॥ ढाल चालीशमी ॥

वीण मा वाईशरे, विठ्ठल वारुं तुजने ॥ ए देशी॥
पेखो निगुणीरे केहवुं करेछे गणिका ॥ गंजारो
ऊघाडी काढी, बाहिर नमया वणिका ॥ पे० ॥ ए
आंकणी ॥ हियडाथी गाढी आलिंगी, सिंहासन बे
साडी, हारिणीए नमयानी आगल, कारमि माया
देखाडी ॥ पे० ॥ २ ॥ ताहरे तातें माहरे मंदिर,
पुत्री तुजने वेची ॥ ते तुजने कांई न जणाव्युं,
जनक वडो तुज पेची ॥ पे० ॥ ३ ॥ रे पुत्री तुं
जोय विचारी, ताल संबंध तें दीठो ॥ रे भोली
एणे संसारे, स्वारथ सहुने मीठो ॥ पे० ॥ ४ ॥
तुज सरखी पुत्री वेचंतां, एहनुं मन केम चाल्युं ॥
अमे दयालु परोपकारी, मुह माग्युं धन आल्युं
॥ पे० ॥ ५ ॥ देख लूचाइ ताहरा तातनी, नाम
न पूछां फेरी ॥ तातें कीधूं जहेवुं तुजने, तहेवुं न
करे वैरी ॥ ६ ॥ एहेवो कुण छे वेचे परघर, जे
आपणडां छोरु ॥ मायायें नवि छोडे अलगां, वाछरु
आंने ढोरु ॥ पे० ॥७॥ अमें तो तेहने घणुंए वार्यो,
पण तेणे न कर्युं वार्युं ॥ ताहरे तातें धनने अरथें,
कीधूं अति अविचार्युं ॥ पे० ॥ ८ ॥ निज बालक

प्रतिपालवा माटें, हरणी सिंहथी घाये ॥ तेहथी पण तुऊ तात नीपावट, घणुंय कह्यो शुं थाये ॥ पे० ॥ ए ॥ एतो त्नलुं जे माहरे मंदिर, वेची मद त्नर माती ॥ जो बीजे वेचत तो ताहरी,कहे ने शी गति थाती ॥ पे० ॥ १० ॥ एहवुं जरुर पड्युं हतुं केवुं, जे तुऊ वेची तातें ॥ हुंतो राखीश पुत्री करीने, माहरे तो आव्युं धातें ॥ पे० ॥ ११ ॥ तुं मूऊ पुत्री हुं तुऊ माता, ए सघलुं ठे ताहरुं ॥ तुं माहरें हुं बुं ताहरे, एहवुं मन ठे महारुं ॥ पे० ॥ ॥ १२ ॥ माहरे तूऊ उपरें नथी कोई, तुं घरनी ठकुराणी ॥ जे तुं देइश ते हुं लेइश, में एकतारी आणी ॥ पे० ॥ १३ ॥ प्राण तणी परें तुऊने राखीश, दोहिली न करुं क्यारें ॥ साकर घोली दूध ज्युं पाइश, पाणी मागीश ज्यारें ॥ पे० ॥ १४ ॥ हथेलीनीं ठायामांहे, अहोनिश राखीश तुऊने ॥ जे कोइ वातें डुःख तुं पामे, देजे ठलंत्ना मुऊने ॥ पे० ॥ १५ ॥ दासीयो ताहरी खिजमत करशे, हुकम हुकममें रहेशे॥ जे तुं कहीश ते निर्वहेशे सघलुं, ताहरुं खुंद्युं खमशे ॥ पे० ॥ १६ ॥ हुं पण बुं राजा सरखी, रखे कांइ प्रीठती बीजी ॥ मुऊ पुत्री जाणीने तुऊने,

सहुको करजो जीजी ॥ पे० ॥ १७ ॥ जोडुं तुफथी अंतर राखुं, तो परमेश्वर साखी ॥ ए चालीशमी ढाल सनूरी, मोहनविजयें जांखी ॥ पे० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

वचन सुणी गणिकातणां, नमया थइ निसनेह ॥ चित्तथी करे विचारणा, एम शुं कहे ठे एह ॥ १ ॥ धन शुं थोडुं ठे घरें, जे एम वेचे तात ॥ हिये छपावी एहवी, केम मनाये वात ॥ २ ॥ दासी मूकी एणीए, मूजने राखी गेह ॥ तात जणी विप्रता रियो, एहनुं कारण एह ॥ ३ ॥ अनुमानें जोतां थकां, दीसे गणिका एह ॥ मायायें करी मुफ थकी, मांडे फूगे नेह ॥ ४ ॥ गणिकायें नमया जणी, लही उदासी जाम ॥ मीठे वचनें चड वडी, मुखथी बोले ताम ॥ ५ ॥ रे पुत्री चिंता तजो, हसो रमो हित आणि ॥ परिकर निकर हे पद्मिनी, पोतानो करि जाणि ॥ ६ ॥

॥ ढाल एकतालीशमी ॥

देशी हमीरियानी ॥ कहे गणिका नमया जणी, सांजल माहरी वात ॥ सुरंगी ॥ खोटी शीकरे शोचना, जूंनी केहनो तात ॥ सु० ॥ १ ॥ मान वचन

तुं माहरुं, जोगव्य सुंदर जोग ॥ सु० ॥ ए टाणुं रखे चूकती, करीश सनेही संयोग ॥ सु० मा० ॥२॥ वनना कुसुमतणीपरें, जोबन एलेम खोय ॥ ए अव सर कुण निर्गमे, एहवो छे. मूरख कोय ॥ सु० ॥ मा० ॥ ३ ॥ एक जोबनने प्राहूणो, केतादिन विलं बाय ॥ सु० ॥ एह कपूरतणी परे, क्षणमें उडीजाय ॥सु०॥ मा० ॥ ४ ॥ चंपक वरणी देहडी, फरी फरी किहां पामीश ॥ सु० ॥ ले लाहो जोबनतणो, जो बुद्धि दे जगदीश ॥ सु० ॥ मा० ॥ ५ ॥ जोबन एह गया पछी, कहे मुझने तुं शुं करीश ॥ सु० ॥ तुंतो मांखीनी परें, बेठी हाथ घसीश ॥ सु० ॥ मा० ॥६॥ चतुराइ तुझ जेहवी, तेहवोज पुरुष अमूल ॥ सु० ॥ गणिकाकुल मारगतणां, कारज करय तु कबूल ॥सु०॥ मा० ॥ ७ ॥ आशा अमें तुझ ऊपरे, राखी छे मेरु समान ॥ सु० ॥ आशाए इंडां अनल तणां, महोटां होवे निदान ॥ सु० ॥ मा० ॥ ८ ॥ आशा प्रथम देई करी, जे तो करे निराश ॥ सु० ॥ धिक धिक जीवित तेहनुं, जे नवि पूरे आश ॥ सु० ॥ मा० ॥ ॥ ए ॥ जे अमें लीधी तुझने, ते तो एहज माट ॥ नाकारो जो कहिश तुं, केम पोसाशे घाट ॥ सु० ॥

मा० ॥ १० ॥ मुखने पूठी जोजन करो, तनुने पू
ठीने पहेर ॥ सु० ॥ जाय तु रथमें बेसीने, वन उ-
पवनने शहेर ॥ सु० ॥ मा० ॥ ११ ॥ तेल फूलेलने
अगरजा, तेहमां रह्यो गरकाव ॥ सु० ॥ नवनवरंगें
हसो रमो, पान सोपारी चाव ॥ सु० ॥ मा० ॥१२॥
वचन सुणी गणिकातणां, बोली नमया ताम ॥सु०॥
बाई तुमें अण बोल्यां रह्यो, ए तुमचुं नहीं काम ॥
सु० ॥ मा० ॥ १३ ॥ हुं व्यवहारीनी पुत्रिका, तुमे
तो गणिका निदान ॥ सु० ॥ ए अणघटतुं कां करो,
कांइक राखो शान ॥ सु० ॥ मा० ॥ १४ ॥ जावा
घो जोलामणी, अमें तुक वाल गोपाल ॥ सु० ॥
जोजंतुं कुल साहमुं, नहितर देइश गाल ॥ सु० ॥
मा० ॥ १५ ॥ वाड जो गलशे चीजडां, तो रखवा
लशे कोण ॥ सु० ॥ कहिये एहवुं वरे पडे, जेवुं आ
टे लूण ॥ सु० ॥ मा० ॥ १६ ॥ नीचे वाहनें केम च
डे, जे चढिया सुंढाल ॥ सु० ॥ मोहनविजयें जली
कही, एकतालीशमी ढाल ॥ सु० ॥ मा० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

नमयाने गणिका कहे, पुत्री निसुण जगीश ॥
आकुं आकुं बोलतां, एम केम तुं रूटीश ॥ १ ॥ जे

केड्ये लाग्यां खरां, ते तुझ तजशो केम ॥ विगर दि
लासायें अली, अमने तुं मत छेड ॥ २ ॥ जेह पड्युं
मादल गले, देवतणुं तुं जोय ॥ विणवाये केम छूटीये,
एम भांखे सहु कोय ॥ ३ ॥ जास वशे जे को पड्या,
छेड्या हीज छुटाय ॥ ते जे कहे ते कीजीयें, एम
कीधें शुं थाय ॥ ४ ॥ अंगीकार करो तुमे, आ मंदि
र आचार ॥ जेह कहो ते भगरे, मानो एह मनुहार
॥५॥ नसया तव विलखी थई, मुख मेहले निःश्वास ॥
दुःखभर दाझी विरहिणी, ऐ ऐ करे विपास ॥ ६ ॥

॥ ढाल बहेंतालीशमी ॥

घेरी घेरी पण घेरी रे, मोकुं या विरहाने घेरी ॥
ए देशी ॥ घेरी घेरी पण घेरी रे, मुने ए गणिकाए
घेरी ॥ मु० ॥ एक तो म्हारे कंते मुझने, वनमां की
धी अनेरी ॥ तास संदेशो न आव्यो मुझने, कोण न
कह्यो फेरी रे ॥ मु० ॥ १ ॥ मात पिता पण दूं
रहीयां. केही विध होशे मोरीरे ॥ मु०॥ ... नां
... केरे मूकी चेरी रे ॥ मु० ॥ २ ॥ ...
की एणे ...नेरी, ...
कांइ देवनी कीधी दीसे, मोटी चोरी ... रे ॥ ...
... कहुं हुं ..., ... केरी रे ॥मु०
॥३॥ ... ... करीने, कीधी दीसे ...

रे ॥मु०॥ नाहवियोगे हियडामांहि, खटके खरी खरेरी रे ॥मु०॥ ४ ॥ ए गणिकाने वशे हुं आवी, निसरी न शकुं अवेरी रे ॥मु०॥ जेहथी शील रतन रहे माहरुं, केही बुद्धि अनेरी रे ॥ मु० ॥ ५ ॥ जिहां गये रहे शील सलूणुं, कोण देखाडे ते शेरी रे ॥ मु० ॥ दैव अटारो शीयल उदालण, गणिका किहांथी उदेरी रे ॥ मु० ॥ ६ ॥ खारो जंमो नीम नवो दधि, शीलता मीठी वेरी रे ॥ मु०॥ नमया विलपे जेम मृग विलपे, देखी दूर आहेरी रे ॥ मु० ॥ ७ ॥ ए तो माहरुं कह्युं न माने, मांमी बेठी वखेडी रे ॥ मु० ॥ जे कोइ नारी धूतारी जगमां, तेहमां एह वडेरी रे ॥ मु० ॥ ॥ ८ ॥ नांखे नमया सांजल गणिका, मुजथी रहेजे परेरी रे ॥ तहारुं कीधुं तुहीज पामीश, आवीश जो तुं आरेरीरे ॥ ए ॥ शीलरतन राखवा कारण, नाखी तास नीठेरी रे ॥मु०॥ निसूणी गणिका घणुंए कूदी, कही जेहवी वठेरी रे ॥ मु० ॥ १० ॥ बोली गणिका रे रे बाला, तुं शुं अमथी नखेरी रे ॥ मु० ॥ तुं जो घननुं फल शुं जाणे, ठे तुं हजीअ अखेरी रे ॥मु०॥ ॥ ११ ॥ फूल गुलाबनी शी गति जाणे, दीठी जेणे कणेरी ॥ मु० ॥ दोहिली आवे तनुचतुराइ, मूढमति

जो घणेरी रे ॥ मु० ॥ १२ ॥ कूपक मेरूक सायर
केरी, जाणे शुं ते लहेरी रे ॥ मु० ॥ देव कुसुमनो
स्वाद शुं जाणे, चाखी जेणें वहेरी रे ॥ मु० ॥ १३ ॥
लारु लखावी लारुकवाही, मायें तुऊने उछेरी रे
मु० ॥ त्यारे बोले छे एम तुं त्रटकी, होये जीन
छेरी रे ॥ मु० ॥ १४ ॥ जो जो नमया बुद्धि उपा
राखशे शील अप्रकंपी रे ॥ मु० ॥ मोहनविजयें
ल अनोपम, बहेंतालीशमी जंपी रे ॥ मु० ॥ १५

॥ दोहा ॥

कहे नमया गणिका जणी, म म कर ऊठी वात
तुछ वचन केम जंपियें, केम करीयें परतात ॥ १
तें ताहरां कीधां करम, जोगव्य तुं मतिमंद ॥
बीजाने शावती, पाडे एहवे फंद ॥२॥ तीन पंचा
ताहरे, जीववुं दीसे तुछ ॥ दीये छे जे कारणे, ए
खामण मुछ ॥३॥ वरसे शशी अंगारडा, पयोधि छ
मर्याद ॥ नासे सिंह शियालथी, सुधा नि
स्वाद ॥ ४ ॥ जो ते सघलां नीपजे, ते सांजल अव
ल ॥ परनरथी परवश हुई, सतियो न मूके शील ॥
ते माटे तुऊने किशुं, कहुं घणुं हित लाय ॥ तुं रं
थकी, ग गोद ॥

॥ अथ पैंतालीसमी ॥

हुं मुक थाउं कान जावा दे तुं मूरखी॥ हुं मुक थाउं गणिका जावा दे, माहरो मनेडी बापुडी क्यों छे दूर रे ॥ मूक मारो केडलोने, वही हुं हजुर रे ॥ मुने जावा दे ॥ हुं०॥ कां नवि जाणे मूंडी. कारिमो संसारने, रे रे तुं दाकेलाने कां दीये मार ॥ मू० ॥ हुं० ॥ १ ॥ तेहने मूछायें तेहने जांलीयें एह रे, मूणी एहवी वातडीने कंपे देह ॥ मू० ॥ गणिकायें विचार्युं पनो सीधी नवि जोय रे, एहने देखाडुं नीति तो यश होय ॥ मू० ॥ हुं० ॥ २ ॥ चांडनी जेम लागे प्रासुए तेह रे, तिसने पीलाविना नव वे सनेह ॥ मू० ॥ सीधी आंगलीए क्यारें, नवि नीकले घीर रे॥ इहां कोण छोडावाने आवे छे वीर ॥ मू० ॥ हुं० ॥ ॥ ३ ॥ माहरे वशें आवी तें किहां जाय रे, एक वार पूछुं एहने वातडी बनाय ॥ मू० ॥ पेट पकुंसी शाने शूल उपाय रे ॥ कडुउं महोरुं जोतुं अतिमधुं थाय रे ॥मू०॥हुं०॥४॥ जी जी करतां तुंतो थायछे शेर रे, कांइ हठ एवडो तुं ताणे छे फेर ॥मू०॥ नहिंतो हुंए तुने चावकानी छोर रे, घाली एणी कोटडीमां कूटीश जोर ॥ मू० ॥ हुं० ॥ ५ ॥ एहवे गणिकानी कूखें

सुंदर छे एहवी त्रिया, तेडी आणो तेह ॥ १ ॥ हा
रिणी सरसी जोइ ए, तो ते तेहने ठाम ॥ आपण
तेहने राखियें, दीजे छत्री काम ॥२॥ सजिव नृपति
आदेशथी, आव्यो गणिका गेह ॥ दीठी नमया
सुंदरी, मनोहर गौरी देह ॥ ३ ॥ कहे सचिव न
मया प्रत्ये, रे सुकुलिणी नार ॥ तूठो परिपूरण
खरो, तुज ऊपर किरतार ॥ ४ ॥ बब्बरकूल नरेश
नी, करय उलग मनरंग ॥ प्राणतणीपरें राखशे,
रहेजो सदा अनुपंग ॥ ५ ॥ धण कण कंचन वसन
गृह, छे गणिकाने गेह ॥ ते सवि तुजने सोंपशे,
मान्य वचन मुज एह ॥ ६ ॥

॥ ढाल चुम्मालीशमी ॥

काली ने पीली वादली ॥ ए देशी ॥ नमया स
चिव कह्या थकी साजनां, शोचे चित्त मझार ॥ वि
षयातुर राजा थयो साजनां, ऐ ऐ सरजणहार ॥
जोजो रे हवे नारी चरित्र, करशे नमया नार ॥१॥
ए आंकणी ॥ नृप पासें लेइ जाशे ॥सा०॥ मंत्री वीश
वा वीश ॥ राजा मुजने प्रार्थशे ॥ सा० ॥ त्यारें हुं शुं
करीश ॥ जो० ॥ २ ॥ श्यो जोगो अवस्थातणो ॥सा०॥
शील हुं राखीश केम ॥ परवश पडीयां मानवी ॥

सा०॥ कुण विध राखे नेम ॥ जो० ॥ ३ ॥ श्रागोषी नमया रही ॥ सा० ॥ जाँखे छो मंत्री तान ॥ रे गुण धैली गोरडी ॥ सा० ॥ केस गुम वेठी श्राम ॥ जो० ॥ ४ ॥ वेसो घणे सुखासने ॥ सा० ॥ खोटा म करो विचार ॥ राजाने श्रावी मलो ॥सा०॥ रह्ो श्रहनिश दरबार ॥जो०॥ ५ ॥ श्रति दृढ ताणी मंत्रीए ॥सा०॥ ततक्षण नमया नार, वेसाडी ऊपाडीने ॥सा०॥ सुंदर रथह मकार ॥ जो० ॥ ६ ॥ परवश ए नमया पडी ॥ ॥० ॥ श्रतिही धरे मन लाज, जाणीयें पंजरमां प ड्यो ॥ सा० ॥ वनवासी मृगराज ॥ जो० ॥ ७ ॥ पर र मंत्र मनमें गणे, चौद पूरवनो जे सार ॥ रथ वेठी श्रावी सती, एहवे चहूटा मकार ॥ जो० ॥ ८ ॥ त र तिहां शीलने राखवा ॥ सा० ॥ नमयायें कीधो वि चार ॥ जो ठल इहां कोइ करुं ॥सा०॥ तो रहे शील उदार ॥ जो० ॥ए॥ दोहा ॥ बुद्धि शरीरां नीपजे, जो उपजे ततकाल ॥ वानर वाघ विलोवियो, एकलडे शीयाल ॥जो०॥ १० ॥ बुद्धियकी मंत्रीश्वरे ॥ सा० ॥ चोलव्यो यहा कमाल ॥ बुद्धि हरी कपि रोलिया ॥ सा० ॥ एकलडे शीयाल ॥ जो०॥ ११ ॥ नमया राख ण शीलने ॥ सा० ॥ मंत्रीने विप्रतार ॥ रथहुंती कूदी

पडी, परवरि खाल मझार ॥ जो० ॥ १२ ॥ कादवथी
तनु लीपीयुं ॥ सा० ॥ देखे लोक समक्ष ॥ जाणीने
घहेली थइ ॥ सा० ॥ जाणे वलग्यो यक्ष ॥ जो०
॥ १३ ॥ चीर पटोली कंचुकी ॥ सा०॥ कीधां ते खंडो
खंड ॥ जाणीने कांइक कहे ॥ सा०॥ मुखथी करे आ
क्रंद ॥ जो० ॥ १४ ॥ बीहाडे लोको भणी ॥ सा० ॥ छू
टा केश कराल ॥ क्षिण हसे क्षिणके रुवे ॥ सा० ॥
क्षणके विलोके खाल ॥ जो० ॥ १५ ॥ एम असमं
जस देखीने ॥ सा० ॥ मंत्री विनवे भूपाल, स्वामीजी
ते सुंदरी ॥ सा० ॥ थइ दीसे छे कराल ॥ जो०॥१६॥
रूप अनोपम छे घणुं ॥ सा० ॥ पण तस परवश देह,
ते केमही साजी हुवे ॥ सा० ॥ तो वधु उपजे स
नेह ॥ जो० ॥ १७ ॥ मंत्री वचन सूणी करी ॥ सा०
॥ आलोचे महीपाल, मोहनविजयें वर्णवी ॥ सा०
॥ चुम्मालीशमी ढाल ॥ जो० ॥ १८ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

महीराज मंत्री भणी, कहे सांभळ मुज वेण ॥
नारीने साजी करे, एहवो कोइ छे सेण ॥ १ ॥
भूपें पडह वजावियो, बब्बरकूल मझार ॥ जे नमया
साजी करे, ते लहे लाख दीनार ॥ २ ॥ एहवे

केणे ब्राह्मणें, पडह छब्यो तेणीवार ॥ एहने हुं सा जी करुं, एहने किस्यों विचार ॥ ३ ॥ नृप सेवक ब्रा ह्मण चाली, ब्याव्यो राजा पास ॥ महाराज तें ना रीने, तेडावो ब्यावास ॥ ३ ॥ नृपें ब्यनुचर तेडवा. मूकया तास तिवार ॥ पकडीनें दरबारमां, ब्याणी नमया नार ॥ ५ ॥ एक ब्यत्रोधी ओरडी, बेसाडी तिण मांहि ॥ ब्याव्यो ब्राह्मण मंत्रवी, नमया पास सोरसाहि ॥ ६ ॥ दूर विसर्ज्या लोकने, ब्राह्मण पूरी द्वार ॥ नमयाने साजी करे, जोजो मूढ गमार ॥७॥

॥ ढाल पिस्तालीशमी ॥

साहेया मोतीडोने हमारो जीवनां मोती० ॥ ए देशी ॥ ब्राह्मण जोलो भेद न लेहेचे, नमया ब्या गल धूप उखेवे ॥ नर्मदा नवरंगी, सलूणी शील सुप्रसंगी ॥ मंत्र जपीने ऊजणी नाखे, सती शि रोमणि सर्व सांखे ॥ नर्मदा नवरंगी ॥ १ ॥ सुंदरी जाणे ब्राह्मण जोलो, फोकट श्यो मांड्यो ठे ए रोलो ॥न०॥ जेम जेम ब्राह्मण ऊंजे दूणे, तेम तेम सा उत्त मांग धधूणे ॥न०॥ २ ॥ एहवे नमया बुद्धि उपावे, काढीदंत ब्राह्मण पर धावे ॥न०॥ बीहीनो वाडव ऊठी जाग्यो, काइक पहेलुं कांइक नागो ॥न०॥ ३ ॥ द्वार

उघाडी ब्राह्मण दोड्यो, जाणीये वादीथी रेवत
ठेड्यो ॥ न० ॥ आगलें मंत्रवी पूंठल नमया, चढु
टा लगे एम करतां तेसुं गया ॥ न० ॥ ४ ॥ लोकें
तेह ब्राह्मण जगाड्यो, जूठ मंत्रवादीए मंत्र हका
र्यो ॥ न० ॥ नमया जिन गुण कंठे गाये, जाणीयें
सुकंठे कोइक मोरली वायें ॥ ५ ॥ बब्बर चहूटे न
मे थइ धीठी, एहवे जिनदासें ते दीठी ॥ न० ॥
पुरजन अलगा करीने पूछे, कहे सुंदरी कारण एह
शुं छे ॥ न० ॥ ६ ॥ जिनना गुण तुं गाय छे रूडी,
तो केम एम पुरमें नमे भूंडी ॥न०॥ बाहेर एहवी
अंतर साहि, तो एम लोक कां मूक्यां वाही ॥न०॥
७॥ दीसे श्रावक कुलनी जाइ, साच कहो मुज आ
गल बाइ ॥न०॥ छे कोण तुं पुत्री छे केहनी, जाणंतुं
हुं तुं छे रे जेहनी ॥ न० ॥ ८ ॥ हुं पण श्रावक हुं सू
ण वहेनी, मूज आगल तु साचुं कहेनी ॥ न० ॥ कहे
नमया हलूए शुं फेरी, ए शी वेला पूछ्या केरी ॥
न० ॥ ए ॥ जो तु साचोछे जिननो पंति,तो मुज पूछ
जे कहेशुं एकंति ॥ न० ॥ जे अवसर पूछे ते साचो,
जे नवि जाणे ते फोकट वाचो ॥ न० ॥ १० ॥ तव
जिनदास छानो थइ रहीयो, नमया भेद न कोइने

कह्यो ॥ नमया पूंठ जमे निरदीहे, पण नवि
बोलावे करि जीहे ॥ ११ ॥ नमया जमे पुरमांहे
एकाकी, जाणीने परम महारस ताकी ॥ न० ॥ रा
जा केइ उपाय करावे, पण नमयाने क्षेमे नावे ॥
न० ॥ १२ ॥ आगत मूकने कोण गवाडे, जाणीने
ऊंघे तेने कोण जगाडे ॥ न० ॥ एहवे कौमुदी म
होत्सव आवे, पुर जन सघला वनमां जावे ॥न०॥
१३ ॥ नमया पण जिनवरने गेहें, जनी स्तुति करे
पूरण नेहें ॥ न० पूंठले पण जिनदास आव्यो, नम
याथी धर्म सनेह उपाव्यो ॥न०॥ १४ ॥ नमया आपुं
पातुं जोइ, जिनदास हूंती वातें हूइ ॥ न० ॥ हुं
वर्धमान नयरनी वासी, माहरो जनक सहदेव वि
लासी ॥ न० ॥ १५ ॥ परणी मूजने सकोमे नाहे,
पण ते मूकी गयो वनमांहे ॥ न० ॥ तिहां मुज
तात मल्यो अणजाणी, तिहांथी इहां इण पुरमांहे
आणी ॥न०॥ १६ ॥ उंलवी गणिकाए मूजने राखी,
राख्युं शील एम करी सुसाखी ॥न०॥ पिस्तालीशमी
ढाल सवाइ,सुंदर मोहनविजयें गाइ ॥ न० ॥ १७ ॥
॥ दोहा ॥
नमयाने जिनदास कहे, हुं पण चाखुं सच ॥—

पुत्री हुं जिनदास अछुं, नयर जिहां जरुअच ॥१॥ ताहरे तातें मूजने, कही तहारी सवि वात ॥ हुं छुं नेही तेहनो, मध्यंतर विख्यात ॥ २ ॥ तुजने जोवा कारणें, हुं इहां आव्यो एम ॥ में पण तुज राखी गुप्त करी, कहो प्रगट हुइ केम ॥ ३ ॥ हवे तुं मु जने मली, न धरिश केहनी बीक ॥ तुं मत जाणे एकली, तुं छे मूज नजीक ॥ ४ ॥ तुं छे पुत्री मुज तणी, मुजथी म करीश लाज ॥ जेम तेम करी संगे करिश, जो करशे जिनराज ॥ ५ ॥ एम कही जिनदास ते, आव्यो तुरत वखार ॥ दाम सबल गांठे करी, वाहण कर्यां तैयार ॥ ६ ॥

॥ ढाल छेंतालीशमी ॥

झांझरीया मुनिवरनी देशी ॥ राजायें तव सांभ ळ्युं जी, प्रवहण सजे जिनदास ॥ सेवक मूकी तेह ने जी, तेडाव्यो निज पास ॥ १ ॥ गुणमणि गोरडी नरमया सुंदरी नारी, ए आंकणी ॥ कहे जिनदास नरेसरने जी, फरमावो महाराज ॥ केम मुजने ते डावियो जी, सेवक मूकी आज ॥ गु० ॥ २ ॥ कहे नृप कारज माहरुं जी, सांभली करजे तुं एक ॥ इहां एक नरमया सुंदरी जी, ते अति छे निर्विवेक ॥गु०॥

॥ ३ ॥ चोहटे गलीयें चाचरें जी, ते अति करे तो फान ॥ धींहाडी धीहनी नथी जी, करती करती तोफान ॥ गु० ॥ ४ ॥ नयर कर्युं इण नारीयें जी, वानर वनह समान ॥ कोइ आडो नवि उतरे जी, ए नमयाहो तान ॥ गु० ॥५॥ ते माटे तुमें एहने जी, घाली पोतमझार ॥ कोइ परदेशे मूकजो जी, सापण परें निरधार ॥ गुं० ॥ ६ ॥ ठे परदेशी प्राहु णी जी, थइ वली एहवे वेश ॥ एहनी कुंण करे चाकरी जी, लेइ चालो परदेश ॥ गु० ॥ ७ ॥ कहे जिनदास इसी करी जी, वारु जी महाराज ॥ परवश नमया नारीने जी, प्रवहण गावुं आज ॥ गु० ॥८॥ करी प्रणाम नररायने जी, ऊठ्यो ते जिनदास ॥ धसमसतो हेजे नख्यो जी, आव्यो नर्मदा पास ॥ ॥ ए ॥ ऊठ्य पुत्री मुझ प्रवहणे जी, आवी वेसो हेव ॥ नमया निसुणी दोडती जी, जइ वेठी तत खेव ॥ गु० ॥ १० ॥ नवरावी नमया जणी जी, प्रग ट्युं रुप यत्न ॥ जेम कचरो धोया पठी जी, झलहले जेहवुं रत्न ॥ गु० ॥ ११ ॥ वेसाडी महोत्सवें जी, पेहराव्या शणगार ॥ मुंहगा जांड तणी परें जी, राखी तेणीवार ॥ १२ ॥ प्रवहण ताम हंकारियांजी,

सयल मनोरथ सिद्ध ॥ नर्मदापुरवर आवीयां जी जीतना जंगी दीध ॥ गु० ॥ १३ ॥ उतस्यां प्रवहण थकी जी, नमयाने ससनेह ॥ अति उत्सव आड वरे जी, आणी तातने गेह ॥ गु० ॥ १४ ॥ नमया देखी तातने जी, उलटियो उछरंग ॥ सयल कुटु म्बतणां तिहांजी, हरख्यां अंगोअंग ॥ गु० ॥१५॥ हेज तणां आंसु झरे जी, अमीये उठ्या मेह ॥ न मया आनंदशुं वसे जी, निज माताने गेह ॥ गु० ॥ ॥ १६ ॥ हसे रमे क्रीडा करे जी, टाल्यो दुःख जं- जाल ॥ मोहनविजयें वर्णवीजी, छेंतालीशमी ढाल ॥ गु० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

नमया तात जणी तिहां, सोंपीने जिनदास ॥ चाल्यो तिहांथी अनुक्रमे, आव्यो निज आवास ॥ ॥ १ ॥ नमया ताततणे घरे, रहे सदा मनरंग ॥ स हीउंशुं क्रीडा करे, निर्विकार निःशंक ॥ साधु अवज्ञाथी इणे, केतां सहियां दुःख ॥ पण एक शी ल सहायथी, पुण्ये पामी सुख ॥ ३ ॥ तात कहे नमया जणी, रे पुत्री तुज कंत ॥ कहेतो तेडावुं

रह्यो कामणीओ नाम ॥ नाम सुण्या मन गहगह्या, श्री-
पार्श्व जिनधाम ॥ ५ ॥ आवि उत्सव ठाठ सुरंग,
जिन मूर्ति तप सत ॥ नमणा नित्य पूजा करे, गा
ता गाता मस्त ॥ ६ ॥

॥ ढाल सुडतालीसमी ॥

कानुडो तो वेण वजावे कालिंदीने कांठे ॥ ए देशी ॥ वर्धमानपुर परिसरमांहि, पधार्या सद्गुरु आव्या ॥ पंचाचार विचारे पूरा, सहुकोने मनना व्या ॥ १ ॥ नमवा तात कुटुंब संघाते, गुरु चरणां बुज भेट्यां ॥ जेहना दरिसण दीठा हुंती, जय जय पातक मेट्यां, ॥ २ ॥ धर्मशील सूरीश्वर नामे, सद्गुणे आगल वेणां ॥ गुरु उपदेश तणा मंदिरमां, भविषण देते पेणां ॥ ३ ॥ धर्मोद्यम कीजे रे प्राणी, सुणीए जिनवर वाणी ॥ अमिय समाणी सद्गुरु शिक्षा, धारीजें हित आणी ॥ ४ ॥ जाणोछे ए जीव विचारो, छे सघळुं ए मोरुं ॥ पण अभ्यंतर निरखी जोतां, शुं देखे छे तोरुं ॥ ५ ॥ तात जातने मात सुता पति, छे विपरीत सगाइ ॥ पण अंतर मेही मदमातो, तेणे रह्यो लपटाइ ॥६॥ पोतानो करी गणीयें जेहने, ते होवे साहमो वेरी ॥ छे संसार

तणी गति एहवी, वली गति कर्मह केरी ॥ ७
काची काच घटी समकाया, कूडी शी तस माया
पंथीपरें विसामो जगमें, कुण डुर्बल कुण राया
॥ ८ ॥ ठे संसार विचारी जोतां, बाजीगरनी बाज
क्षणभंगुर अनित्य पदारथ, तो पण होवे राजी॥ए
जेम वंध्याए सुहणे दीठो, जाणे सुत मुज आयो
दीधुं नाम विश्वंभर एहनुं, हालरुए हुलरायो॥१
जव सा जागी रोवा लागी, किहां गयो में दीठो
ते जेम खोटुं तेम जग खोटो, पण विषया रस
मीठो ॥११॥ इंद्र जाल विद्या रमनारा, रवि सेवक
थइ फूके ॥ अंगकरंग वणावण वीरुआ, जाण तो
साचुं वूके ॥ १२ ॥ नारी पति साथे पावकमां, पेसी
वली सती थाये ॥ ए कूडुं तो नहीं केम साचुं, करीने
कोइथी गहायें ॥ १३ ॥ पाणीना पपोटा जेहवी,
जेम पाणीमांहे पतासो ॥ जेम काचो घट नीरें न
रियो, तेवो देह तमासो ॥ १४ ॥ समकित विण ए
जीव विचारो, दोडे ठे हा हुंतो ॥ पाणो एकेंद्री
नवि मूक्यो, एके ठाम थकूतो ॥ १५ ॥ करशे धर्म
ते सुखियां थाशे, दीधो एम उपदेश ॥ गोमांचित

॥ स० ॥ १० ॥ तव सा देवी मुनि मुख पेखी, चिंते केम नवि कंपे हे ॥स०॥ एम पराजवियें ते तो पण, कडवुं वयण न जंपे हे ॥ स० ॥ ११ ॥ धन्य धन्य एहने एहवी धीरता, सा पूछे कर जोडी हे ॥स०॥ कुंण तुं स्वामी इहां केम ऊजो, कहो मुनि आमलो गेडी हे ॥ स० ॥ १२ ॥ कहे मुनि अमें साधु जिणंदना, पंच महाव्रतधारी हे ॥ स० ॥ ध्यान धरी ऊजा तुं सुंदर, निरखी जूमिका सारी हे ॥ १३ ॥ देवी कहे अहो साहु शिरोमणि, खमजो मुऊ अपराध हे ॥ स० ॥ में तुमने एहवा नवि जाण्या, अबुद्धि जेम अगाध हे ॥ स० ॥ १४ ॥ मुनि कहे अमने क्रोध न होवे, खंति तणाउं अन्यासी हे ॥ स० ॥ एहये लेशे सां जल्युं नरगें, जे जीव सहे नरगावासी हे ॥ स० ॥ १५ ॥ नेही निस्नेही विहु ते सरीखा, अमें लेखवीयें एम हे ॥ स० ॥ जे जेहवुं करशे तेहवुं ते लहेशे, पण अमें कोपूं केम हे ॥ स० ॥ १६ ॥ नमया देवी सुप्रसन्न थइने, सांजली वचन रसाल हे ॥ स० ॥ मोहनविजयें मीठी जांखी, अडताशमी ढाल हे ॥ स० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

नमया देवी आगले, कहे तपोधन ताम ॥ प्राणीने नवि पीडीयें, अहो सूरि विण काम ॥ १ ॥ दया सुधा कुंडी अछे, जगमांहि निःशंक ॥ तिहां मज्जन करतां मिटे, कल्मष तणूं कलंक ॥ २ ॥ काम डुघा सम ए दया, इछित सुख दातार ॥ सकल धर्म अग्रेसरी, नांखे जगदाधार ॥ ३ ॥ दया विहूणा बापडा, चउ गइ मांहे नमंत ॥ दया धारि शिव नारिथी, अहोनिशि लील करंत ॥ ४ ॥ जे निर्दय निठुर निगुण, ते केम लहेशे ठाण ॥ केम जलथी आवे तरी, अति ऊंचो पाषाण ॥ ५ ॥ सदयी जे वि नीचे गई, पामे पण शिव होय ॥ नारें बूडे तुंबिका, पण आवे तरि सोय ॥ ६ ॥

॥ ढाल उगणपचासमी ॥

मागे महिडारो दांण, धूतारडो मागे महिडारो दांण ॥ ए देशी ॥ सुंदर दे उपदेश, रे मुनीश्वर सुंदर दे उपदेश ॥ सुललित मीठी वाणी रे, जयं कर टालें डुरित कलेश ॥ जीव सयलनो सारिखो रे, कीडी तेम मातंग ॥ थोडे वर्णे पुदगलें थयुं, इहां नाहनुं मोटुं अंग रे ॥ सुं० ॥ १ ॥ आलया

हुंती ऊरडे रे, ऊरडाहूंती गेह ॥ इयत्तावछिन्न अ जुआलडुं, पण दीपक तेहनो तेह ॥सुं०॥ २ ॥ पूरा ए सहेजें गले रे, एतो पुन्नल धर्म ॥ पण जो ह णीए हाथथी, ते तो बांधे निकाचित कर्म रे ॥ सुं० ॥ ३ ॥ जोगद बिहु इंद्रीतणा, एम जांखे जि नराय ॥ द्रव्येंद्रिया, जावेंद्रिया, वली द्रव्यथी नेद बे थाय रे ॥ सुं० ॥ ४ ॥ जावेंद्रिया बे नेद थी, लब्धि तथा उपयोग ॥ लब्धि कहीयें तेहने, जे होये आचरण वियोग रे ॥ सुं० ॥ ५ ॥ उपयो गथी जावेंद्रिया रे, एगंदियादिक जीव ॥ पंच विषय तन्नतपणे, ते अनुनवे अतुल आ जीव रे ॥सुं० ॥ ६ ॥ जेम कन्या जूषण सजी रे, तुरग प्रति आरूढ ॥ वदन जरी तांबूलथी, सा संचरी होय अमूढ ॥ सुं० ॥ ७ ॥ आवे जिहां कूपक जस्यो रे, पारदनो द्युतिवंत ॥ तस उपकंठे कन्नी रहे, मुख मधुरो शब्द कहंत ॥ सुं० ॥ ८ ॥ शब्द सुणी क न्या जणी रे, ग्रहवाने रसराय ॥ दोडे उपांग विना तिहां, एम उपयोग इंद्रिय कहाय रे ॥ सुं० ॥ ए ॥ वली बकुलादिक वृक्षने रे, सिंचे गंगातोय ॥ पण मदिरा सिच्या विना, तस कुसुम करंब न होय

सुं० ॥ १० ॥ एकेंद्रिय उपयोगथी रे, जाणजो सुख दुःख एम ॥ जास करण वधतां हूइ, तेह जाणे नहिं कहो केम रे ॥ सुं० ॥ ११ ॥ मनमें करुणा राखियें रे, सेवीजें मुनिलोय ॥ चिंतामणि सेवीजे तो, अर्थिने सुप्रसन्न होय ॥ सुं० ॥ १२ ॥ चोथुं शौच दया तणुं रे, सहु कोय पूरे साख ॥ ते माटे कहुं बुं सूरि, मनमांहे दया तुं राख रे ॥ सुं० ॥ १३ ॥ अमे उपशम संयम धरु रे, क्रोध न करुं तिलमात्र ॥ क्रोधी क्रोध करंतडां, वणसाडे प्रीतिनुं पात्र रे ॥ सुं० ॥ १४ ॥ क्रोध शमे धरतां क्षमा रे, खंतें क्रोध न थाय ॥ तृण विण मंकलें जइ पड्यो, पण आफूरडो अग्नि उंलाय रे ॥ सुं० ॥ १५ ॥ नमया देवी मुनितणा रे, लळि लळि प्रणमे पाय ॥ अहो तपसी कीजें नलो, मुज ऊपर कोय पसाय रे ॥ सुं० ॥ १६ ॥ सोंपी समकित वासना रे, देवी जणी हित लाय ॥ ढाल उंगणपच्चासमी, कही मोहनविजयें बनाय रे ॥ सुं० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा. ॥

॥ दोहा ॥

सा देवी उपदेशथी, अतिही थइ प्रवीण ॥ साधु अवज्ञाथी कहो, शुं शुं होशे प्रक्षीण ॥ १ ॥ दे

वी साधु पराजवें, निर्धन निगुण सरोग ॥ इह जव परजव ते लहे, वाह्लातणो वियोग ॥ २ ॥ साधु अवज्ञा फल सुणी, कंपी सुरी अतीव ॥ पातक ए विण जोगव्यां, केम छूटशे जीव ॥ ३ ॥ सा न मया देवी चवि, मणुअ लोग उपन्न ॥ नामे नमया सुंदरी, महासती धन्य धन्य ॥ ४ ॥ पूर्व कर्म य की एणें, पाम्यो कंत वियोग ॥ विकल थई वन वन जमे, पुनरपि थई अशोग ॥ ५ ॥ नमया पूरव जव सुणी, थइ मूर्छांगत एम ॥ दीठो पूरव जव ज लो, सुगुरु जांख्यो जेम ॥ ६ ॥

॥ ढाल पचासमी ॥

कान्हजी मेहलोने कांवली रे ॥ ए देशी ॥ नमया आवी मंदिरें रे, मुनिनी सुणी वाणी ॥ मनथी मांमी विचारणा रे, जो जो कर्म कहाणी ॥ १ ॥ हुं वलिहारी सुगुरुनी रे ॥ जेह जन दरिसण पामे, रहे अलगा संसारथी रे ॥ विषय जालने सामे ॥ हुं ॥ ॥ २ ॥ सदन संबंधि सहोदरा रे, तेहथी खोटी शी माया ॥ स्वारथनां सहु को सगां रे, नवि कोइ एना कहेवाया ॥ हुं० ॥ ३ ॥ वाहलादूंती वाहलोरे, तेजो माहरो न हुवो ॥ बीजो तो कोण होयशेरे, कर्मनी

गति ए जुवो ॥ हुं० ॥ ४ ॥ दावानल जेम पा[illegible] रे, एह संसार असारो ॥ अलगो रहे ते [illegible] नहिं तो नहिं कोइ आरो ॥ हुं० ॥ ५ ॥ एहमां [illegible] संजम आदरुं रे, खरुं एह वे जोतानुं ॥ [illegible] लंतें कूपडे रे, निकल्युं ते पोतानुं ॥ हुं० ॥ ६ ॥ [illegible] तने नमया विनवे रे, द्यो मुजने आदेश ॥ जो [illegible] मति होय तुम तणी रे, तो ग्रहुं मुनिनो वेश ॥ [illegible] ॥ ७ ॥ तृप्त थइ तव तोगवी रे, नथी हुं [illegible] ॥ पामि परीक्षा मद्दु तणी रे, एम वचनें [illegible] ॥ हुं० ॥ ८ ॥ तात कहे नमया तणी रे, [illegible] ताहरो ॥ जेह तुं संयम आदरे रे, [illegible] हरो ॥ हुं० ॥ ९ ॥ संयम [illegible] नथी खेल हांसीनो ॥ [illegible] तुल खजानो ॥ हुं० ॥ १० ॥ कोइ [illegible] लोहचणा चावे ॥ संयम [illegible] सो कोने नावे ॥ हुं० ॥ ११ ॥ [illegible] तणी रे, तरवी आवनी [illegible] तणा रे, मुक्ले [illegible] भारा [illegible] रे, [illegible] नथी रे, [illegible]

ए जेम सघसुं दोहिलुं रे, तेम संजम छे तेहवो ॥
वेगां वेगां उपन्यो रे, केम वैराग्य एहवो ॥ छुं०॥१४॥
ग्रीष्म ऋतुने तावडे रे, अणवाणे पगे फिरशो॥ काय
सुकोमल एहवी रे, केम गोचरी करशो ॥ छुं० ॥ १५
बावीश परिसह आकरा रे, ते केम करी सहेशो ॥
भार महाव्रत पांचनो रे, कही विधें वहेशो ॥ छुं०॥
॥ १६ ॥ योग युक्तिनी योजना रे, योगेश्वरें तेने
जाणी ॥ मोहनविजयें पचासमी रे, वारु ढाल व
खाणी ॥ छुं० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

रण रसिया रणमंडलें, पाछा न दिये पाय ॥ नि
रति संयम पालवा, हाम तेणे न घलाय ॥ १ ॥ संयम
तो सुरगिरि शिखर, उंचो अपरंपार ॥ तिहांथकी
जे कोइ लडथड्या, भूला भमे संसार ॥ २ ॥ मटक
विरागी होयतां, संयम तो न पलाय ॥ बाजीगरना
नृपतिसम, राज्य कितो निवहाय॥३॥ संयम सोहिलो
जो हुवे, तो सहु पाले एम ॥ तरुण भाव संयम
पणे, संय्यम ग्रहशो केम ॥ ४ ॥ बोली नमया सुं
दरी, अतिलूखो परिणाम ॥ संयम लेतां वारीयें
ए नहिं उत्तम काम ॥ ५ ॥ बालक वीहाव्यो र

अज्ञाने करी एम ॥ पण संयम रसलालची, वचनें वीहे केम ॥ ६ ॥

॥ ढाल एकावनमी ॥

चंदनरी कटकी जली ॥ ए देशी ॥ संसारनां सुख दाखवी, शुं जोलावो जो तात, मनडुं हो राज, सुगुण संयम पर माहरुं ॥ मूरखनुं हित कां करो, किजे पंडित बोल ॥ म० ॥ सु० ॥ १ ॥ रोगी कडवे औषधें, निश्चें होय नीरोग ॥म०॥ पण मीठा आहारथी, केम नीरोगनो योग ॥ म० ॥ सु० ॥ ॥ २ ॥ कर्मतणो रोग टालवा, संयम औषध जेम॥ म० ॥ पण मीठो नाकारडो, करमनें कहीयें केम ॥ म० ॥ सु० ॥ ३ ॥ चाले जे बुद्धि पारकी, ते सम मूढ न कोय ॥ म० ॥ करीयें जे मन साखि द्यो, तो तो मनवांछित होय ॥ म० ॥ सु० ॥ ४ ॥ हुं संयम अरथी थइ, लेइश संयम जार ॥ म० ॥ तुम वचनें चालुं हवे, तो कुण होय आधार ॥ म० ॥ सु० ॥ ॥ ५ ॥ तात आगल नमया कहे, श्लोक अनुपम एम ॥ म० ॥ चारित्रथी राची थकी, आणी परम विवेक ॥ म० ॥ सु० ॥ ६ ॥ तत्त्वातत्त्वविचाराय, स्वैव बुद्धिःक्षमा नृणां ॥ परोपदेशो विफलो, यथाऽ

सोधनदत्तवत् ॥ १ ॥ पुर्वढाल ॥ तात कहे नमया
जणी, ते कुंण हतो धनदत्त ॥ म० ॥ कहे मूऊने
समऊाववा, एम कहे उत्सुत्त ॥ म० ॥ सु० ॥ ७ ॥
खोटुं जाखुं केम पिता, साचो ठे तेह संबंध ॥ म०
तात आगल नमया कहे, धनदत्तनो संबंध ॥ म० ॥
सु० ॥ ८ ॥ नयर विशाला सुंदरुं, तिहां वसतो,
धनदत्त ॥ म० ॥ लक्ष्मी परिगल मंदिरें, यौवन वय
उन्मत्त ॥ म० ॥ सु० ॥ ए ॥ तात जरातुर तेहनो,
अवयव थयो बलहीन ॥ म० ॥ उपनी मस्तक वे
दना, तेणें तेह जांखे दीन ॥ म० ॥ सु० ॥ १० ॥
तेड्यो तेणे धनदत्तने, बेसाड्यो निज पास ॥ म० ॥
डुःख निवेद्युं पुत्रने, सुत सुणि करिय विखास ॥
म०॥सु० ॥ ११ ॥ तात जरातुर तरफडे, पण शाता
नवि पामंत ॥ म० ॥ धनदत्त तात डुःख देखीने,
गदगद कंठे कहंत ॥ म० ॥ सु० ॥ १२ ॥ रेरे तात
तुमारडी, केही अवस्था एह ॥ म० ॥ जे कांइ मन
डामें हुवे, कहो तेम करीयें तेह ॥ म० ॥ सु० ॥
॥ १३ ॥ कांइ एम डुःख जोगवो, कहो जे हुइ
वात ॥ म० ॥ वचन सुणी धनदत्तनां, मंद स्वरें
कहे ॥ म० ॥ सु० ॥ १४ ॥ रे सुत में धन

लव्युं, ते करी कूड प्रपंच ॥ म० ॥ लछी छे पापानु बंधनी, एहमां नहीं खलखंच ॥ म० ॥ सु० ॥ १५ ॥ में लछी नवि वावरी, सातें क्षेत्र मझार ॥ म० ॥ ते लछी शा कामनी, जो नवि हुवे उपगार ॥ म० ॥ सु० ॥ १६ ॥ विलसी हिज लछी नली, जाणे बाल गोपाल ॥ म० ॥ मोहनविजयें वर्णवी, एकावनमी ढाल ॥ म० ॥ सु० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

बोली जूठां मोटकां, में ए मेल्या दाम ॥ पण ए साथे कोइने, नवि आया विरजाम ॥ १ ॥ सोवन डुंगरियो करी, लोन्नीजनें अनंत ॥ पण एक कटको हेमनो, लेइ न गयो कोइ संत ॥ २ ॥ कूपक जलनें द्रव्य ए, नित नित जेम ववराय ॥ तेम तेम विछु खूटे नही, शास्त्रें एम कहाय ॥ ३ ॥ ते कारण अंगज तमे, धन जे आपणे गेह ॥ सुकृतने वासें सदा, वावरजो धरि नेह ॥ ४ ॥ जो धन वावरशो तमे, तो गति लहेशो जीव ॥ नहिं तो तुमने सांन्नलो, परितापीश सदैव ॥ ५ ॥ धनदत्त नाम कहे पिता, मनमां हुउ प्रसन्न ॥ धर्म ठाम तुम मेलवुं, वावरशुं ए धन्न ॥ ६ ॥

॥ ढाल बावनमी ॥

केसर वरणो हो काढी कसुंबो माहरा लाल ॥ ए देशी ॥ सुतने वयणे हो जनक प्रसन्नो, माहरा लाल ॥ ते सुरलोकें हो तुरत उपन्नो ॥ माहरालाल ॥ कांति अनोपम हो सुरपुर नूपण ॥ मा० ॥ निर्मल देहीहो, नहीं को दूपण ॥ मा० ॥ १ ॥ धनदत्त हियडे हो, ताम विचारे ॥ मा० ॥ कोइ गति तातें हो, कृत स्वीकारे ॥ मा०॥ जगस्थिति दीसे हो, अरघटमाला ॥ मा० ॥ उपजे विणसे हो, वस्तु विशाला ॥ मा० ॥ २ ॥ पण मुझ ताततुं हो, विण संनाल्युं ॥ मा०॥ दान प्रचारूं हो, कुल अजुवालुं ॥मा०॥ जे गयो परघर हो, फेर न आवे ॥ मा० ॥ धनदत्त मनडुं हो, एम समजावे ॥ मा० ॥ ३ ॥ अवनीत लमांहे हो, जे धन हुंतु ॥ मा० ॥ एणे बाहिर हो, कीधुं अतुं तुं ॥ मा० ॥ शत्रुकारें हो, ते धन खरचे मा० ॥ उलट अधिको हो, पण नवि विरचे ॥मा०॥ ॥ ४ ॥ साते क्षेत्रे हो, अति धन वावे ॥ मा० ॥ पूर्ण कमाणी हो, सबल उपावे ॥ मा० ॥ तेणे नाकारो हो, मुखथी न साख्यो ॥ मा० ॥ कृपणपणाने हो, दूर निवास्यो ॥ मा० ॥ ५ ॥ वेहेंता जलधि हो,

ये बेहु सरीखो ॥ मा०॥ आवे ते कनेहो, अर्थी आ
कर्ष्यों ॥ मा० ॥ प्राप्ति जेहवी हो, तेहवुं पामे ॥मा०॥
पण नवि वारे हो, तेवहु आमे ॥ मा०॥ ६ ॥ कीर्ति
प्रसरी हो, धनदत्त केरी ॥ मा०॥ वाजे जगमां हो,
कीर्ति भेरी ॥ मा० ॥ सोखी हरखे हो, कीर्त्ति कसके
मा० ॥ दोषी नर ते हो, देखी न शके ॥ मा० ॥७॥
विप्र महोदय हो, एहवे नामें ॥ मा० ॥ अति खल
निवसे हो, तिणद्विज गामे ॥ मा० ॥ धनदत्तसाथे
हो, करी मित्राइ ॥ मा० ॥ वातें रीझवे हो, करी
पवित्राइ ॥ मा० ॥ ८ ॥ खलने मलतां हो, वार न
लागे ॥ मा० ॥ काम सख्याथी हो अलगो भागे ॥
मा० ॥ गरल अपूरव हो, खल निर्वासे ॥ मा० ॥
श्रवण पहोते हो, विष प्रतिभासे ॥ ए ॥ विप्र प्ररू
पे हो, मित्र महारा ॥ मा० ॥ अमे शुभ वांछक हो,
अहोनिश तहारा ॥ मा० ॥ तुझ सुख सुखिया हो,
पुण्य पवाडे ॥ मा० ॥ होय जो कूवे हो, आवे अ
वाडे ॥ मा० ॥ १० ॥ एम धन उपरें हो, कां तुं
रूठो ॥ मा० ॥ पुंठ विचारी हो, जोय अपुंठो ॥मा०॥
जो धनधोरणि हो, ताहरे होशे ॥ मा० ॥ तो तुज
साहमुं हो, कोइ जोशे ॥ मा० ॥ ११ ॥ धनविण

मानव हो, कोडि न पावे ॥ मा० ॥ साहमा सधनी हो कोडि उपावे ॥ मा० ॥ निर्धन नरने हो, कोइ न धीरे ॥ मा० ॥ धनने आदर हो, सहु को उदीरे॥ ॥ मा० ॥ १२ ॥ उरगकलेवरहो, कोयी होवे ॥मा०॥ पण निर्धनने हो, कोइ न जोवे ॥ मा० ॥ पुरुष विहूणा हो धन कहेवाये ॥ मा० ॥ प्रभुता विभुता हो धनथी थाये ॥ मा० ॥ १३ ॥ धन विहु अक्षर हो, पण गुण मोटो ॥ मा० ॥ धनवंत सानो हो, बीजो खोटो ॥ मा०॥ प्रभु निर्द्रव्ये हो एकज पुजाये ॥ मा० ॥ पण नर बीजो हो द्रव्य सरावे ॥मा० ॥ १४ ॥ पूरवपुण्ये हो, तुं धन पायो ॥ मा० ॥ राखी न जाणे हो, कोय ठगायो ॥ मा० ॥ देतां न कहे हो, कोइ नाकारो ॥ मा०॥ धन सहु वांछे हो, आप पियारो ॥ मा० ॥ १५ ॥ मित्रविहूणो हो, इम कुण कहेशे ॥ मा० ॥ रूडुं भुंडुं हो, तुं निर्वहेशे ॥मा०॥ मारी शिक्षा हो, धनदत्त मानो ॥ मा० ॥ एम कही बाडव हो, रहियो छानो ॥मा०॥१६॥ धनदत्त मनमां हो,एम विचारे ॥मा०॥ दान देयंतो हो,कोइ न वारे ॥मा०॥ भांखी रूडी हो, ढाल बावनमी ॥ मा० ॥ मोहनविजयें हो, विनवत अनमी॥ मा० ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

ए वाडव माहरो खरो, नेही इण संसार ॥ धन पण कांइ नथी मागतो, कहे छे हित उपगार ॥१॥ एणे मुज साचुं कह्युं, हुं तो दीउंछुं दान ॥ पण धन विहूणा नर हुवे, नीरस तरण समान ॥२॥ धनदत्त ब्राह्मण वचनथी, परिहर्युं देवुं दान ॥ लोक दशा पसरी खरी, नीचसंगति निदान ॥ ३ ॥ संगति उत्तम कीजीयें, तो थइये वरवीर ॥ परिखा जल गंगा गयुं, तो थयुं गंगानीर ॥ ४ ॥ जो जो संगति नीचथी, आपद असी अमेल ॥ जो खलसंगति आदरे, तो निष्फल नागरवेल ॥ ५ ॥ धनदत्त धन ढगला करी, राख्या मंदिरमांहि ॥ नाकारो शीख्यो फरी, विप्र वचनथी त्यांही ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रेपनमी ॥

सासू पूछे वहु वात ॥ माला किहां छे रे, ए देशी ॥ मूर्ख मित्रनी वातो रे, कह्यो कुण माने रे ॥ एक अज्ञानिनी टोली रे, करे कुण काने रे ॥ ए आंकणी ॥ धनदत्त ब्राह्मणथी जरमाणो, वाहला मारा नवि मनमें शरमाणो ॥ लाज तणी तेणे वात न राखी, यशनो रत्न गमाणो रे ॥ मू० ॥ १ ॥

दान देयंतें वधती हुंती, लछी परिगल गेहें रे, दान निवारे धनदत्त सार्थे, लच्छी थइ निःस्नेही रे ॥ क० ॥ २ ॥ दानें लछी होय मद माती, विण दानें कृश थाये रे ॥ जोजनथी तनु पुष्ट होय तेम, जोजन विण न चलाये रे ॥ क० ॥ ३ ॥ मणि माणिकने सोनुं रूपुं, एहथी रीशें जराणां रे ॥ श्याम वर्ण कोपें धग धगता, हुइ अंगार समाणा रे ॥ क० ॥ ४ ॥ जलवट थलवट केरी लछी, तिणे ग ति जलनी कीधी रे ॥ जो जो धन दत्त मूढ पणाथी, दरिडीने साह्य दीधी रे ॥ क० ॥ ५ ॥ सुगुण सहो दर सयल सनेही, तेणे पण हित चोख्युं रे ॥ दीठुं तिहां तेणे धनदत्त द्वारें, दान विटपि विण मोख्युं रे ॥ क० ॥ ६ ॥ धनदत्त निर्धनने वशे जोलो, ज्र मतो पुरमां लाजे रे ॥ पूर्व लाज अठे धनदत्तनी, जेह करे ते ठाजे रे ॥ क० ॥ ७ ॥ विप्र म होदय एहवे अवसर, धन दत्त मंदिर आव्यो रे ॥ निर्धन दीठो तेणे नयणे, सान करी समजाव्यो रे ॥ क० ॥ ८ ॥ एह शी सूरि जन ताहरी अ वस्था, ए शुं देवें कीधुं रे ॥ रोहण शैल समो रय णायर, पुंज उलाली लीधो रे ॥ क० ॥ ए ॥ नेत्र

सजल थइ धनदत्त बोल्यो,रे रे मित्र शुं कहीये रे ॥
अतरगंतनी कहो कुण जाणे, जेह लख्युं ते लहीयें
रे ॥ क० ॥ १० ॥ वाहला मित्रजी जइयें परदेशें,
तिहां जइ उदर जरीशुं रे ॥ शुं करीये कहो केहने
कहीयें, मूल मजूरी करीशुं रे ॥ क० ॥ ११ ॥ देशें
चोरी विदेशे जिक्षा, एहवो बोल्यो उखाणो रे ॥
पण एकलडां केम सुहाये, हियडे विचारी जाणोरे॥
क० ॥ १२ ॥ विप्र कहे सुण धनदत्त जाई, एक
लडो केम बोडुं रे, जो कांइ काम पडे जो ताहरे,
शीषसहित तनु ओडुं रे ॥ क० ॥ १३ ॥ पण तुं मा
हरा कथनमां रहेजे, धनदत्त कहे पण वारुरे ॥ ते
बेहु चाल्या परदेशे, पेट जराइ सारु रे ॥ क० ॥१४॥
मूकी देश विदेशे पोहता, धनदत्त वाडव साथें रे ॥
पण कोइ उद्यम संपति केरो, नावे तेहने हाथेंरे ॥
क० ॥ १५ ॥ जे जे वाडव विधि प्रकाशे, धनदत्त तेह
विधि चालेरे॥ पण पूर्वापर ते न विचारे,पाछो उत्तर
नालेरे॥ १६ ॥ जो जो जमया ए दृष्टांतें, तात जणी
समजावे रे॥ अतिहि सुललित ढाल त्रेपनमी, मोहन
कही समजावे ॥ क० ॥ १७ ॥ सर्वगाथा ॥

॥ दोहा ॥

एक दिन वनमां चालतां, तृषावंत धनदत्त ॥ नि श्रकने मागे तिहां, पय पीवाने कत्त ॥१॥ मित्र कहे इहां वेसतुं, हृदय धरीने धीर ॥ वनमांहे सरवर श की, लेइ आवुं हुं नीर ॥ २ ॥ वेसाडी धनदत्तने, कोइक तरुवर छांहि ॥ विप्र मित्र जल कारणे, गयो गहन वनमांहि ॥ ३ ॥ न मिल्युं जल ते विप्रने, चिंते मनमां ते एम ॥ विण पाणी निज मित्रने, वद न देखाडुं केम ॥ ३ पूठलथी धनदत्त हवे, मित्र त णी जोइ वाट ॥ जल नाव्युं दीठुं तेणे, चिंते हृदय निपाट ॥ ५ ॥ हलुये उठ्यो तिहां थकी, एकाकी धनदत्त॥ वनमांहे भूलो भमे, जिम करिवर उन्मत्त॥६॥

॥ ढाल चोपनमी ॥

मूजरो ल्योने जालिम जाटणी ॥ ए देशी ॥ धन दत्त भोलो जी वनमां भमे, करवा विप्रनी शुद्धि ॥ तुमें फल जो जो नीचसंगति तणां ॥ ए आंकणी ॥ संगति नीचनी होये अलखामणी, प्राये निर्धन नि र्बुद्धि ॥ तु० ॥ १ ॥ वनमें पारधीया खेटक रमे, ठा ना मांडीने फंद ॥ ताणे वाण ते मृगवध कारणे, वेठा ते मतिमंद ॥ तु० ॥ २ ॥ मृग पण आव्या तृण च

रता तिहां, पारधी फंद नजीक ॥ एहवे धनदत्ते ते अजाणते, कीधी उत्तम ठींक ॥ तु० ॥३॥ ठीकें नाग ते मृग पाश फस्या, दोड्या पारधि ताम ॥ रुष्या बोले मृग केणे त्रासव्या, कस्युं केणे वैरीनुं काम ॥तु०॥४॥ धनदत्त दीठो पारधीये तिहां, पकड्यो दोडीने ताम॥ नाख्यो मेदिनी लात प्रहारथी, कीधो हृदय अकाम तु० ॥ ५ ॥ रे रे फंद पड्या मृग त्रासव्या, तेहनां यह फल जोय ॥ बांधी चाल्याजी तरु शाखांतरें, पा रधी न रह्यो जी कोय ॥ तु० ॥ ६ ॥ धनदत्त आफ ले बल घणुं करे, छोडी न शकेजी बंध ॥ कीणही वाटाउयें नवि तस दीठडो, कुसुम जिस्यो निर्गंध॥ तु० ॥ ७ ॥ एहवे वाडव वारि लेइ करी, आव्यो प्रथ म तरुपास ॥ तेणे नवि दीठो तिहां धनदत्तने, तव ते करेजी विखास ॥ तु० ॥ ८ ॥ अनुपम दीठो ते ध नदत्तने, तव ते दीठो बांध्यो जी मित्र ॥ केणे माहरो मित्र पराभव्यो, कांइक दीसे छे चरित्र ॥ तु० ॥ए॥ छोड्यो मित्रने शाखाथकी, पूछ्यो बंधविचार ॥ धन दत्त भांखेजी वाडवआगलें, व्याध तणो अधिकार ॥ तु० ॥ १० ॥ भांखे वाडव धनदत्त आगलें, एम नवि कीजें अचूक ॥ पुरबाहेर नर देखी तिहां, बोलीयें न

हीं कहुं तुझ ॥ तु० ॥ ११ ॥ दीठे मारग सीधा चा
लीयें, तो कुण दूहवे एम ॥ मान्युं धनदत्तें कह्युं वि
प्रनुं, चाल्या आगल जेम ॥ तु० ॥ १२ ॥ आव्या
कोइ पुरवर परिसरें, दीठुं सरोवर एक ॥ रजक नि
हाल्यो वस्त्र तिहां धोवतां, धनदत्त चिंते विवेक ॥
तु० ॥ १३ ॥ इलूए इलूए सरोवर संचस्यो, केडे
रह्यो कांइ विप्र ॥ दीठो रजकें धनदत्त आवतो, साह
मो दोड्यो जी क्षिप्र ॥ तु० ॥ १४ ॥ पकड्यो रजकें
धनदत्तने, तथा रजक कहे मुख एम ॥ दिवस घणा
नो करतो तस्करी, पकड्यो जाइश केम ॥ तु०॥१५॥
काले लेइ गयो वस्त्रनी ग्रंथिका, वली तुं आव्यो छे
आज ॥ चोरनुं वितक तुझने विताडशुं, वलशे त्यारे
तुझ लाज ॥तु०॥१६॥ रजकवचनें धनदत्त चिंतवे, हुं
कुण चोर छे कुण ॥ मोहनविजयें ढाल चोपन्नमी,
पन्नणी परम अनूण ॥ तु० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

रे रजक कुंण चोर छे, माहरुं धनदत्तनाम ॥ नग
री विशालायें रहुं, व्यापारी अभिराम ॥ १ ॥ दैव
वशें इहां हुं आवियो, अणबोल्यो इण गाम ॥ मित्र
महोदय कथनथी, कीधां सवि आयाम ॥ २ ॥ विप्र

एम नाविया ॥ हो० ॥ तो० ॥७॥ बेसो इहां विश्राम, करीने जाय जो ॥ हो० ॥ क० ॥ वचन उलंघी मुझ, गमार न थाय जो ॥हो०॥ग०॥ धनदत्त तास वचन, रह्यो धीरज धरी ॥ हो० ॥र०॥ जो जो विबुधें ताम, विबुधता शी करी ॥हो०॥ वि० ॥ ८ ॥ धनदत्त देखे तेम, सुरेश्वरहित धरी॥हो०॥सु०॥ नाखी उदह मांहि रयण, अंजलि नरी नरी ॥हो०॥अं०॥ एम असमंजस देखी, कहे धनदत्त इस्युं ॥हो०॥क०॥ रे व्यवहारी ए काम, करे ठे तुं किस्युं ॥हो०॥क०॥ ए ॥ देखी पेखी रयण, उदहे केम नाखीयें ॥ हो० ॥ उ० ॥ सुख दुःख उव्यने काज, सवे हुं साखीए ॥ हो० ॥ स० ॥ के कोइ प्रेत विशेष, थयो ठे तुझ ने ॥ हो० ॥ थ० ॥ जे कांइ हृदयमें वात, हुवे ते कहो मुझने ॥ हो० ॥ हु० ॥ १० ॥ बोलोगो कांहां वेण, करो कां ग्रथलता ॥ हो० ॥ क० ॥ उपहासीथी केम, तने नथी वीहृता ॥ हो० ॥ त० ॥ तव सुर बोल्यो एम, वचन रचना करी ॥ हो० ॥ व० ॥ रे पंथी वड वीर, कहुं तुझ हित धरी ॥ हो० ॥ क० ॥ ११ ॥ हुं तुं सारथवाह, रयण संनद्द घणो ॥ हो० ॥ र० ॥ एक ठे माहरे मित्र, मोमांढ सोहामणो

॥ हो० ॥ चो० ॥ तेजे मुजने रत्न देखी, कहुं एहवुं ॥ हो० ॥ क० ॥ माने माहरो बोल, तो हुं तुजने कहुं ॥ हो० ॥ तो० ॥१२॥ ए वन गहन मकार, एक डह रूयडो ॥ हो० ॥ ए० ॥ सुंदर सलिल गंनीर, पद्म डह जेवडो ॥ हो० ॥ प० ॥ तास तणे उपकंठ, रयण लेइ नाविये ॥ हो० ॥ र० ॥ अंजलि नरी नरी कोटिश, तेहमें नाविये ॥ हो० ॥ ते० ॥ १३ ॥ एक वरस मर्यादि, लगण तिहां स्थिर करी ॥हो०॥ ल० ॥ प्रगटे डहथी ताम, रयणनी डुंगरी ॥ हो० ॥ र० ॥ मित्र वचनथी आज, इहां हुं आवियो ॥ हो० ॥ इ० ॥ सयल रयणनो पुंज, डहांतरे नावियो ॥ हो० ॥ ड० ॥ १४ ॥ होशे रयणनो शैल, प्रजा कर रूयडो ॥ हो० ॥ प्र० ॥ साचो माहरो मित्र, कहे केम कूयडो ॥ हो० ॥ क० ॥ बोल्यो धनदत्त ताम, घणो पुलकित थइ ॥ हो० ॥ घ० ॥ ताहरी सारथ वाह, कहुं केम बुद्धि किहां गइ ॥ हो० ॥ क० ॥ १५ ॥ कहिं डहमां रत्न, उग्यां तें सांजल्यां ॥ हो० ॥ उ० ॥ फेरी शी तस आश के, जे गांगें गल्यां ॥ हो० ॥ जे० ॥ ते जूठो ताहरो मित्र, जे तुज नंनेरीउं ॥ हो० ॥ जे० ॥ तुं नोलो जे तास, व

चन नवि फेरव्यो ॥ हो० ॥ व० ॥ १६ ॥ मानीश एहवा मित्र, तणी जो शीखडी ॥ हो० ॥ त० ॥ मा गीश सारथवाह, नली तुं नीखडी ॥ हो० ॥ न० ॥ पंचावनमी ढाल, मोहनविजयें कही ॥ हो० ॥ मो० ॥ जे कोइ निपुण शिरोमणि, तेणे तो शर्दही ॥ हो० ॥ ते० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा. ॥

॥ दोहा ॥

वणिक रूपें कहे देवता, सांनल्य तुं धनदत्त ॥ पर उपदेशें कुशल तुं, दीसे बे उन्मत्त ॥ १ ॥ पर्वत पर जलती बहु, नयणे निरखे लोय ॥ पण पयतल बलतां थकां, मूढ न देखे कोय ॥ २ ॥ पर अवगु ण राई सरस, करे सुरशैल समान ॥ निज अव गुण मंदर समा, राई करे अयाण ॥ ३ ॥ एक वा र तुं ताहरी, गति सामुं तो जोय ॥ त्यार पढी पर बूझियें, एम काह्यो शुं होय ॥ ४ ॥ धनदत्त तव नि सुणी करी, कहे तव सुरने एम ॥ शीखामण देतां थकां, रीष चढावो केम ॥ ५ ॥ वचन मांनो जो माहरुं, तो सुखी होज महाराज ॥ हुं तो हेत माटे कहुं, तव बोल्यो सुरराज ॥ ६ ॥

॥ ढाल उपजमी ॥

नदीयाणीना नीतनी अथवा सुरती प्यारी लागे जिनजी ताहरी ॥ए देशी॥ धनदत्तने एम जांखे हो, व्यवहारी रूपें देवता ॥ रे जडक मतिहीन, प्रय मज तुं जुलवाणो हो, तेह तो तुं नथी शोचतो, कां न संजारे दीन ॥ ध० ॥ १ ॥ हुं तो जोगी व पणे हो, रयण वली आव्यो वावचा ॥ तो तें वाख्यो मूक ॥ वाडवनी तुं शीखें हो, जे एम वनमां रड वडे, तो कुण वारशे तुज ॥ ध० ॥२॥ तुजने जें को ताते हो, जोलुडा वचन कह्युं हतुं, न कर्युं तें नि र्वाह ॥ वांजणनां वचनथी हो, धुताणो एम जूवो जमे, हजीय नथी लाजतो याह ॥ ध० ॥ ३ ॥ ते माटें कहुं तुजनें हो,धनदत्तजी चुंकु म मानशो, कहे वाये ए रूढ ॥ हुं जोलवाणो केहवो हो, जोलवाणो तुं ए विप्रथी, मूढ हुं किंवा तुं मूढ ॥ ध० ॥ ४ ॥ पर उपदेशें माह्यो हो, ते कारण तुने हुं कहुं ॥ जो तुं संजाली पूंठ ॥ जे कांइ तुज आगल हो, विण पूछ्ये जे में उपदिश्युं, ए साचूं के जूठ ॥ ध० ॥५॥ में तो जोगीवचनें हो, डहमांहि रत्न जे वोसर्यां ॥ पण तुं विचारी जोय ॥ वाडवना कह्याथी हो, तें

हज पुण्य प्रमार्जियुं, वली जम्यो दुर्जग होय ॥ध०॥ ॥६॥ जो होइये निकलंक हो, तो परनुं कलंक प्रकाशियें ॥ करी जाणो निर्धार, ते कारण तुमे जाउ हो॥ जूलशो पुरनी वातडी, खोटा न करो उपचार ॥ ध० ॥ ७ ॥ धनदत्त तिहां मनमांहि हो, आलोचे उंडी आलोचना, ए केम लहे मुफ वात ॥ एणे जे मूफ जाख्युं हो, ते साची सघली वातडी, खोटा नहिं अवदात ॥ ध० ॥ ८ ॥ वाडवने कहे लुब्धो हो, में तातनुं वचन विसारियुं, जलो जूख्यो हुं जोर ॥ मूरखने वली होवे हो, माथें मोटां शिंगडां, कहेने कहुं करी शोर ॥ ध० ॥ ए ॥ मानव तो नवि दीसे हो, दीसे छे ए तो देवता, नहीं तो जाणे केम ॥ सारथवाहने जांखे हो, धनदत्त वेहु कर जोडीने, प्रगट प्रकाशी प्रेम ॥ ध० ॥ १० ॥ तमे कोण छो बुद्धिवंता हो,मुफ आगल साचुं जांखजो, दाखो प्रगट स्वरूप ॥ धनदत्तना कथनथी हो, सा र्थपनो रूप विसर्जियो, कर्युं सुररूप अनूप ॥ ध० ॥ ॥ ११ ॥ निर्मल देही जेही हो, फाटिकनी जाणे न पूपिका, अंबुज परिमलपूर ॥ जूषणने संजारे हो, संपूजीत तन सोहामणो, तेजें न जिते सूर ॥

ध० ॥ १२ ॥ धनदत्तने सुर जांखे हो, सांजल्य हुं तुं ताहरो, पूरव जवनो तात ॥ सुरपुरनें सुरलीला हो, जोगवतां अवधि प्रयुंजीयो, दीठा तुज अवदात ॥ ध० ॥ १३ ॥ पूरव जवने नेहें हो, तुज प्रति बोधन आवियो, सारथवाहने वेश ॥ इहमांहे मणि कपटें हो नाखिने, तुज समजावियो अहो, हित शीख विशेष ॥ ध० ॥ १४ ॥ केम करीने चालीजें हो, वालूडा बूडे पारकी, कीजें मन अनुजाय ॥ घणी घणी शी फेरी हो, जांखीजे तुजने शीखडी, तुजने कहुं तुं न्याय ॥ ध० ॥ १५ ॥ सुरवरने व चनें हो, प्रतिबूज्यो धनदत्त हियडे, दीठो तात सनेह ॥ देवें एक अनिमेषे हो, वनहुंती धनदत्त आणीयो, जीहां पूरव निज गेह ॥ ध० १६ ॥ गृह मांहे मणि माणिक हो, सोनुं ने रूपुं सामटुं, प्रग ट्यो जाकजमाल ॥ ठपन्नमी रतनाली हो, सुगुणीनें हेतें ए कही, मोहनविजयें ढाल ॥ ध० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

ते सुरवर धनदत्तने, सोंपी धण कण धाम ॥
प्रतिबोधी सुरपुर रमा, आजरणीकृत ताम ॥ १ ॥

उच्च विवेकनुं, काया वली उल्लोल ॥ एम शिशिर निर्वाहशुं, करशुं रुचि कल्लोल ॥१४॥ पूर्वढाल ॥ वली तेमज वसंतऋतु आवे, तव किसलय तेम तरु नावे ॥ वागे चंग मृदंग सुरागें, वली टोली गावे फागें ॥१५॥ छांटे केसर भरी पीचकारी, तेम लालगुलाल नरनारी ॥ करे नाटक बत्रीश बद्ध, ते तो मुनिवेषें नवि कीध ॥१६॥दोहा॥ तप नवकिसलय तरु थयो,आवश्यक वाजीत्र ॥ अध्ययनादिक फागगति, केसर क्रिया विचित्र ॥ १७ ॥ मार्दव लाल गुलाल बहु, परिसह नाटक कीध ॥ ऋतुवसंतमांहे अहो, मुनिने ए अनिषिद्ध ॥ १८ ॥ पूर्व ढाल ॥ ऋतु ग्रीष्म तपन तपे जोर, तेम लूक वहे चिहुं ओर ॥ रस करीये घोली रसीलो, सुणीये कंइ पिकवचन रसाल ॥ १९ ॥ तेम करे विलेपन चंदननां, ते शीतल पवन विंजनना ॥ साकर जल नेली पीजे, एम ग्रीष्मनो लाहो लीजें॥ ॥ २० ॥ दोहा ॥ क्रोधातप कृश खंतिथी, लूक लोभनी जेह ॥ आदरशुं निःस्पृहता, वसशुं संयमगेह॥ ॥ २१ ॥ अनुभवरस सहकार रस, कोकिल जिनवर वाणी ॥ चंदन सत्व विलेपनां, उपशम व्यंजन जाणी ॥ २२ ॥ गुरुआणा साकर विनय, नीरतणुं निरस

पान ॥ एम करी ग्रीष्म ऋतु जाणी, निर्वहिनुं परि
मान ॥ २३ ॥ पूर्व ढाल ॥ ऋतु वर्षांकाल कर मंके,
धारा अनिमिष न खंके ॥ हिर्दी दादुर चातक बोले,
कामी काम पथ खोले ॥ २४ ॥ गुणिजन आगारे
मल्हार, वही सुंदर नेम आहार ॥ वहे सरिता तृ
रिता तेम भरणी, केम निर्वहशो नरख आचरणी॥
॥ २५ ॥ दोहा ॥ मोहमहाघननी घटा, भरशुं सुप
संवेग ॥ श्रद्धाविहग उद्घोषणा, खोली मने परि
नेग ॥ २६ ॥ राग मल्हार सचाय छे, निःशंकी
आहार ॥ सत्व नदी मुनिगुण हरित, ए पायस
प्रतिचार ॥ २७ ॥ पूर्वढाल ॥ ऋतु शरदें कमल शशी
ऊगे, वधे तेज नयन कर पूगे ॥ ऊरे पीयूष शुक्ति
समाय, तस बिंदुनां मौक्तिक थाय ॥२८॥ योगीश्वर
ग्रह नवरात्रि, करे याग यगन संयात्री ॥ मली कन्या
गरवो गाइ, करी मंगल दीपक जाइ ॥२९॥ अति म
होत्सव आणा प्रयाणां, संयमिने क्यांथी सयाणां ॥
वसती बाहिर एकाकी, न फरे पुनि जेम ए रांकी ॥३०॥
दोहा॥समकित शशी अजुवालडो,तास तत्व ज्ञानांश॥
ज्ञान नियम निर्मल यशे, लोकालोक प्रकाश ॥ ३१ ॥
दयाशुक्तिमांहि अचल, मौक्तिक धर्म सशुरू ॥

नवयोगी नव वाडि ते, नव रात्रि प्रति वुद्ध ॥ ३२ ॥
नोली कन्या नावना, जिन गुण गरवा केली ॥ मं
गल दीपक परम पद, कर्म नटाव अहेलि ॥ ३३ ॥
वियावच्च आणुं नलुं, थविर तथा मुनिनाह ॥
शिशिर रुतुयें मुनिवर करे, एम महोटा उ
त्साह ॥३४॥ पूर्व ढाल॥ कह्यो षटे रुतुनो एह वि
वाद, नवि पामी नमया विषवाद ॥ नमया चारि
त्रनी अरथी, रागी पूरण मुनिवरथी ॥ ३५ ॥ ध
न्य धन्य ते नव नय ठंडे, मुनि वेशें आदर मंडे
॥ कही सत्तावनमी ढाल, एह मोहनविजयें रसा
साल ॥ ३६ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

तातें घणुंये प्रीढवी, पण नवि माने तेह ॥ तातें
नमयाने धरी नेह ॥ १ नमया
अनुमति दीधली,
अति रंजी हिये, तनू हुवो रोमंच ॥ उमाही दी
क्षा नणी, करे नहीं खल खंच ॥ २ ॥ तातें पुर श
णगारियुं, तिहां हय गय रह जोडि ॥ अति उत्स
व अष्टाहिका, मांके होडा होड ॥ ३ ॥ दया पटह
पुर फेरव्यो, दीधां अर्थीदान ॥ सयण सयल नेलां
हुवां, दीधां तिहां वहु मान ॥ ४ ॥ वेठी नमया

सुंदरी, शिबिकाए सोलसाह ॥ तूरि तणा निर्घोष ब हु, गय गयणांगण तांह ॥ ५ ॥ पुरजन कौतुक पे खवा, मलियां धोका थोक ॥ आव्यां इम गुरु संनि धि, जोडीने कर कोक ॥ ६ ॥

॥ ढाल अट्ठावनमी ॥

ते तरीया भाइ ते तरीया ए देशी ॥ आर्य सु हस्ती सूरीश्वर चरणे, प्रणमी नमया विनवे रे ॥ आपो मुजने चारित्र खजानो, अवसर आव्ये एह वे रे ॥१॥ जयवंता विचरो जगमांहें ॥ ए आंकणी ॥ जे अनुसरे मुनि मुद्रारे, तास चरणरज तिलक करीजे, सेवियें थइ अक्षुद्रा रे ॥ ज० ॥२॥ गुरु स हदेवतणी महे आणा, सघलें अनुमति दीधी रे॥ अहो भावुके अहो नमयासुंदरी, प्रीति संयमथी कीधी रे ज० ॥ ३ ॥ मन थिर ठे किंवा नथी ता हरुं, संयम ठे अति दोहिलुं रे ॥ सायर जल तरवुं ठे भुजाथी, निःस्पृहने ठे सोहिलुं रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ सिंह थइने ल्यो गो संयम, सिंह थइने निर्वहेजो रे, जो न पाली शको प्रव्रज्या, तो गृहवासे रहेजो रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ नमयासुंदरी विनवे गुरुने, स्वामी कांहे विहाडो रे ॥ साहसुं वल वंधावी मु

ऊने, निद्रालुने जगाडो रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ माहरुं मन ले दृढ संयमथी, हुं आवी तुम चरणे रे ॥ चारित्रथी केम होइश चंचल, जलखो एहवे आचरणें रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ नमयायें भूषण सयल उतार्यां, परिहरी लोभ अधुनो रे ॥ वासकेपथी थाल भरीने, तात समीपें ऊनो रे ॥ ज० ॥ ८ ॥ केशजाल मस्तकथी लुंच्या, जाण महामोह दावे रे ॥ आचारय करवा संग्रहीने, नर्मदा मस्तक नावे रे ॥ ज० ॥ ए ॥ धर्म सिंधुर कुंभस्थल वेगा, गुरु एम देशना नांखे रे, पंचशालि कण जेम महाव्रत, जे ग्रहे ते सुख चाखे रे ॥ ज० ॥ १० ॥ एह संसार असार विचारी, पालजो मूर्छा दीक्षा रे ॥ पंच महाव्रत भार निर्वहेजो, ए सहगुरुनी शिक्षा रे ॥ ज० ॥ ११ ॥ प्रणम्या पुरजन नमयाने चरणे, आंसुभर्यें ते नयणे रे ॥ अहो नमया धन्य धन्य तुम जीवित, एम उल्लापे वयणें रे ॥ १२ ॥ राखजो धर्म गनेह अम उपर, संभारजो वली अमने रे ॥ तुम गुण सीता केम विसरशे, वर्णुं जिनवीर्ये शुं तमने रे ॥ ज० ॥ १३ ॥ सहदेवादिक नयणथी वरसे, आंसुभिनं जलधारा रे ॥ नांखे नमया साधवी तेहने, सीता

वचन उदारा रे ॥ ज० ॥ १४ ॥ धर्मोद्यम करजो सहु प्राणी, एम कही दीधी शीखो रे ॥ नमयाने आशीष कहे एम, जीवजो कोडी वरीसो रे ॥ ज० ॥ १५ ॥ जनकादिक सहु मंदिर आव्या, हवे सह गुरुउल्लासें रे, नमया साध्वीने हित आणी, सोंपी साधवी पासे रे ॥ ज० ॥ १६ ॥ साधु मारग शीखाव्यो वारु, करे जिन आगल साखी रे ॥ अढा वनमी ढाल सलूणी, मोहनविजयें भांखीरे ॥ ज० ॥ ॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

अहनिश साध्वी नर्मदा, करे ज्ञान अभ्यास॥चारित्र चंद्र प्रद्योतथी, करे मन कुमुद विकास ॥ १ ॥
जयणा गंगा सुरसरी, जिहां हित प्रगटतरंग ॥ तीहां झीले थइ हंसली, करे पवित्र निज अंग ॥२॥
अंबर मुनि आचारनां, भक्ति तणो मुख कोश॥ संवर केसर घोले बहु, विनय पखाले अदोष ॥३॥
स्तवना कुसुम मनोहरु, समकित दीप उद्योत ॥ अक्षत अनुभव रूपना, ध्यान धूप सिद्धोत ॥ ४ ॥
एम पूजा जिनराजनी, साहसथी नितमेव ॥ रचे कर्म चकचूरवा, सा साध्वी नितमेव ॥ ५ ॥

॥ ढाल उगणसाठमी ॥

आइ आइ हो ढोला आइ हो श्रावण त्रीज, माहरी प्रोले पडह्या वाजीया होराज ॥ वारी जाउं राज, जीवनप्यारा राज ॥ लाडीरा लाडा राज ॥ राज मृगानयणीथी मांड्युं रूसणुंजी ॥ वा० ॥ जीव न० ॥ लाडी० ॥रा०॥ ए देशी ॥ मांड्यो मांड्यो हो तेणें नमयाए पूरण प्रेम, रतनाली सुमति गुणि सा हेलीशुंजी ॥ गंड्यो गंड्यो हो तेणें कुमति सा हेली संग, लय लागी ते अलवेलीशुंजी ॥ १ ॥ कहुं मनजावें, नमयाए कुमतिथी रूसणुं जी ॥ ए आंकणी, तास मंदिर हो नहीं सुंदर नामें आरंज, तेह्नी तो गेडी शेरडी जी ॥ आवी वेठी हो तव उपशम गेह, जस संयमशेरी न वेरडी जी ॥ क० ॥ ॥ २ ॥ तव जयणाने हो कहुं नमयायें वेनडी मूक, इहां कुमतिने हो मन देजो पेलना जी ॥ मुज नो वाली हो एणें एता दीह, अनंत स्थिरताए न दीधी वेलना जी ॥ क० ॥३॥ एहवे कुमतिए हो मेली हिं सा दासी कुरूप, नमयाने कहुं निम्नालना जी ॥ कोइ लोभी हो वाडे मत्सरलो नेह, समनेही छेम छेम दीलासवां जी ॥ क० ॥ ४ ॥ तेहने अहिंसायें हो

कही कडुवा कडुवा बोल, घर बाहेर काढी गज इन्द्र देइने जी ॥ कहे कुमतिने हो तेह, दासी अहिं साए मुफ, कहे नांडी आवडे आवडे जी ॥क०॥५॥ थइ झांखी हो कटुकवचनें कुमति तेवार, नमयाने मूकी संचारवा जी ॥ करे सुमतिथी हो नित रंग कल्लोल, श्रुतज्ञाननी गोष्टि विचारवा जी ॥क०॥६॥ मति ज्ञानने हो तिहां वेंच्यां फोफल पान, वहु हूवां रंग वधामणां जी ॥ तव उपन्युं हो नमयाने अवधिज्ञान, मोहादिक दुवां दयामणां जी ॥ क० ॥ ॥ ७ ॥ हवे अनुक्रमें हो, करे नूतल तेह विहार, हूइ महासती ताम पवत्तणी जी ॥ पडीवोहें हो, जवि चातुर जवियण वृंद, देवे देशना अतिही सोहामणी जी ॥ क० ॥ ८ ॥ जेणे सांजली हो तस देशना श्रवणे जव्य, तेणें जाणुं पीयुप पीधलुंजी॥ जस दीधी हो मुख धर्माशीप मनोज्ञ, ते तो अव्यय जीवित दीधलुंजी ॥ क० ॥ ए ॥ वहु साहूणीहो, मली महासतीने परिवार, एक एकथी अधिक गुणें करीजी ॥ तपें कीधो हो जेणें पावन आपण देह, उपदेश महारयणे जरी जी ॥ क० ॥ ॥ १० ॥ नमया महासती हो, पामी सहगुरुनो आ

धरे अधर्मने जीव ॥ काच कामली रोगे मडे, शंख विचित्र तदीव ॥ ३ ॥ हसतां अथवा क्रोधथी, बंध निकाचित कर्म ॥ केम त्रूटे विण जोगव्यां, साख नरे जिनधर्म ॥ ४ ॥ पामे पूरवकर्मथी, सतीउं पण अप वाद ॥ कर्म विपाक ग्रही जतां, केम करियें विषवाद ॥५॥ अगतां पण सतीउं जणी, चोहटे जेह कलंक ॥ ते नर विलसे बापडा, जववारिधि निःशंक ॥ ६ ॥

॥ ढाल साठमी ॥

कर्म परीक्षा कारण कुमर चढ्योजी ॥ ए देशी ॥ कहे दृष्टांत तिहां धनवती तणो, पति प्रतिबोधवा काज ॥ पोष्यो अद्भुत रस देशना विपेजी, निसुणी नर नरराय ॥ १ ॥ कर्म कुटिलथी वल नहीं कोइनुं जी, शिवपुर पंथ विशाल ॥ आठ लूटांक ते हेरे हे रणांजी, करी परिकर जंघाल ॥ क० ॥ २ ॥ शावस्ती नगरीयें वसतो हुतोरे, व्यवहारी पुण्यपाल ॥ धन वती तेहनी अनोपम अंगना जी, मुख्य सती सुवि शाल ॥ क० ॥ ३ ॥ अनुक्रमें कंथविदेशे चालतां रे, धनवतीनी तेणीवार ॥ दीधी जलामण आपणा मि त्रनेरे, उपस्थित करण रोजगार ॥ क० ॥ ४ ॥ केता दिवस पठी धनवती जणी जी, प्रार्थे कंथनो मित्र ॥

सुख जोगव्य तुं मुझथी सुंदरी रे, यौवन रूप्य तुं पवित्र ॥ क० ॥ ५ ॥ निर्भ्रंम्यो धनवतीए तेहने जी, ते पण पाम्यो रोष ॥ तेणे पुरमे कही कही शाकिनी जी, दीधो सतीने दोष ॥ क० ॥ ६ ॥ न शके नयरी मांहे फरी सतीजी, तिहां पण पीहर गइ परगाम ॥ ते धनवती निजबंधू घरे वसे जी, जो जो कर्मनां काम ॥ क० ॥ ७ ॥ धनवती बंधू सुतने हुलरावती जी, नाखती निःश्वास ॥ तिहां पण प्रार्थे विषय सुख कारणे जी, निज सहोदरनो दास ॥ क० ॥ ८ ॥ तेहने पण सतीये निर्भ्रंछियो जी, दास थयो विणप्रेम ॥ दासे बाल विणाश्यो क्रोधथी जी, सा हुलरावती जेम ॥ क० ॥ ए ॥ प्रात थयो धनवतीये बालने जी, दीठो विनाश्यो जाम ॥ करी आक्रंद कुटुंब सवि मेलव्युं जी, आव्यो दास पण ताम ॥ क० ॥ १० ॥ दास कहे सहू लोको सांजलो जी, ए सतीनुं विरुऊ ॥ कहो कूण सोंपे सुत शाकिनी कन्हे जी, जेम मांजारने दूध ॥ क० ॥ ११ ॥ शावस्ती लोके सती एहने जी, काढी वनह मकार ॥ कीहांथी आवी रंभा शाकिणी जी, बांधवने आगार ॥ क० ॥ १२ ॥ अति शरमाणी ते धनवती सती जी, परिहरी पी

हर ताम ॥ आवी एकांते गहनवनांतरें जी, वडतले मस्रो विश्राम ॥ क० ॥ १३ ॥ गुहड विहंग रयणी भर तरुशिरें जी, सहित बालक परिवार ॥ वीट नि चय देखीने बाचडां जी, गुण पूछे तेणीवार ॥ क० ॥ ॥१४॥ कुष्ट शमे ते विट प्रभावथी जी, पंखीपति कहे एम ॥ धनवतीये गुण जाणी संग्रही जी, विट भणी धरी प्रेम ॥क०॥१५॥ तिहांथी आवी कोइ पुरवरे जी, कीधो पुरुषनो वेश ॥ टाले कुष्ट ते वीट प्रयोगथी जी, यश थयो देश विदेश ॥ क०॥ १६ ॥ मोटा म होल बनाव्या मोजमां जी, चाहे बाल गोपाल ॥ मोहनविजयें ए भणी सातमी जी, श्रोता सांभलो थइ उजमाल ॥ क० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

एहवे धनवती वल्लहो, आव्यो निजपुर जाम ॥ पण मंदिरमां अंगना, तेणे नवि नीरखी ताम ॥१॥ प्रीछ्यो मानव मूखथकी, दयितानो अधिकार ॥ अ ति झांखो हूउं थको, पहोतो मित्र द्वार ॥ २ ॥ दी ठो कुष्टी मित्रने, सती कलंक प्रभाव ॥ पुण्यपाल समज्यो हिये, कुटिल सुहृदनो दाव ॥ ३ ॥ एहवे पुरमांहे कह्युं, वैद्य विदेशी एक ॥ टाले कुष्ट उपाय

थी, जन्मांतरिय विवेक ॥४॥ पुण्यपाल निज मित्रने, तेडी चाले जाम ॥ सती बंधुनो दास पण, कुष्टी आव्यो ताम ॥ ५ ॥ बहुने तेडी अनुक्रमें, आव्या ते परदेश ॥ जेणे पुर धनवती रहे, रचि पुरुषनो वेश ॥ ६ ॥ वालम दीठो आवतो, पामी परमानंद ॥ पण पियुने समजाववा, रचशे रामा फंद ॥ ६ ॥

॥ ढाल एकसठमी ॥

अणसणरा हो योगी ॥ ए देशी ॥ कहे पुण्यपाल तदा कर जोडी, तुज कीरतें आव्यो हुं दोडी रे ॥ वैद्य जी करो करुणा ॥ ए आंकणी ॥ ए बहु कुष्टीने साजा कीजें, वली मूख मागो ते दीजें रे ॥वै०॥१॥ सा कहे वैद्यरूप ते नेही, करुं औषधी पण निःस्पृही रे ॥ वै० ॥ पण ए रोगी साचुं कहेशे, तो एहने औषध गुण देशे रे ॥ वै० ॥ २ ॥ सहु सांभलतां कहेतां जो लाजे, तो बेसो एण बाजे रे ॥ वै० ॥ पडदो रहे जेणे वाते करीयें, नवि दंभ कोइ अनुसरियेंरे ॥ वै० ॥ ३ ॥ कोइ धनवतीनो भेद न जाणे॥ सवि सत्य करी प्रमाणे रे ॥ वै० ॥ जठी पुण्यपाल ते अलगो बेठो, तेह चिकित्सक पडदे पेठो रे ॥ वै० ॥ ४ ॥ कहे पुण्यपालनें हजूर विख्यातो, तुं तु

भजे कुटिलनी वातो रे ॥ वै० ॥ एम कही आवें वैद्य फरीने, वर ओषध फांट जरीने रे ॥ वै० ॥ ५ ॥ रे रोगीयो नहि जूठे राचुं, केम रोग थयो कहो साचुं रे ॥ वै० ॥ वोल्यो प्रथम पीयुमित्र कुसंगी, कहुं प्रगट सुणो एक रंगें रे ॥ वै० ॥ ६ ॥ ए पुण्य पालतणी हुंती नारी, नामे धनवती मनोहारी रे ॥ वै० ॥ कामवशे में प्रार्थी तेहने, करी वेदेन गणी हुंती जेहने रे ॥ वै०॥ ७ ॥ माहरुं वचन नहि मान्युं तेणे, में आण्यो रोप हियडेरे ॥ वै० ॥ कही कही शाकिनी घणुं अवहेली, एतो लाजी गइ पुर महेली रे ॥वै०॥८॥जूठ कलंक चढाव्युं माटे,कुष्ट रोग शरीरें उचाटे रे॥वै०॥ एम तेहने तव अणवोल्यो राख्यो॥ तेह दास जणी संचाल्यो रे ॥वै०॥ ए ॥ में पण याची तेहज नारी, तेणे निर्भ्रंछ्यो मुजने जारी रे ॥ वै०॥में तव शेठनो तनुज विणास्यो, वली शाकिनी दोष प्रकास्यो रे ॥ वै० ॥ १० ॥ निकली तिहांथी अतिहीं लजाती, तेनी खवर किसी न जणाती रे ॥वै०॥ कर्म कहाणीए केहने कहीयें, हवे तुमे कहो ते वहीये रे ॥वै०॥ ॥ ११ ॥ पडदांतरे ते वातो जाणी, पुण्यपालें कंधरा धूणी रे ॥ वै० ॥ मुज कामिनीने कलंक दीधुं,

थइ मित्र ए शुं काम कीधुं रे ॥ वैं० ॥ १२ ॥ एहवे धनवती पडदे आवी, ते वेहुनी वातो जणावी रे ॥ वैं० ॥ पेठी घरमां वेश उताऱ्यो, स्त्रीवेषें वपु शण गाऱ्यो रे ॥ वैं० ॥ १३ ॥ रम ऊम करती पियुने चर रणे,सा प्रणमें न्नरी आन्नरणें रे ॥वैं०॥ उलखी प्रमदा पोता केरी, वधी प्रीति लता अधिकेरी रे ॥वैं०॥१४॥ औषधें वेहुनो रोग गमाड्यो, एम गुणसज्जननो गणाड्यो रे ॥ पुण्यपाल निज धनवती संगें, आव्यो शावस्ती मन रंगें रे ॥ साची सती करी पुरमें जाणी, जेणे विसारी अपवाणी रे ॥ वैं० ॥ अनुक्रमें धन वती शिवसुख पामी,एम नमया कहे गुणधामी रे॥ वैं० ॥ १५ ॥ कहे महेश्वरदत्तनी आगे, सतीने पग लंछन लागे रे वैं० ॥ ए एकसठमी ढाल सुरंगी, कहे मोहन सुगुण प्रसंगी रे ॥ १६ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

कहे नमया पवत्तणी, कर्म तणी गति एम ॥ जेणे धर्म न आदर्यो, ते गति लेहशे केम ॥१॥ ते श्री जिनवर धर्मना, शास्त्रमांहे अधिकार ॥ चोदश ज्य ए शास्त्रथी, प्रगट लहीजें सार ॥ २ ॥ नरय मणुअ तिरिय देव गइ, इलीचारा पर्यंत ॥ नाण हुवे

ए लालची, गीतार्थ होय गर्जन ॥ ३ ॥ कोइक पुरुषों शास्त्रडे, जेह नगे अथाय ॥ सरखी सरूप जाणियें, रूप रंग गुण व्याप ॥ ४ ॥ पण स्वरलक्षण शास्त्री, मूरखने न कहाय ॥ साहामो गुण अवगुण करे, अहिपय पानना न्याय ॥ ५ ॥ तेह कारण श्रुति शास्त्रनो, करजो सप सहु कोय ॥ जेहथी उत्तम संपदा, एह कथाथी होय ॥ ६ ॥

॥ ढाल चालशमी ॥

कपुर होय अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥ महेश्वरदत्त चित्त चमकीयो रे, निसुणी कथा कल्लोल ॥ धन्यधन्य एम पवत्तणी रे, धर्मची रंग ठे चोल रे ॥१॥ चेतन चेते नहीं कां मूढ, लही उपशम श्यगूढ रे ॥चे०॥ पण पर्णे स्वरलक्षण लघुं रे, ते साचो उल्लास ॥ महेश्वरदत्तं मांफियो रे, नमयानो पश्चात्ताप रे ॥ चे० ॥ २ ॥ सही मुज नमया अंगना रे, जाणी हशे लक्षण शास्त्र ॥ गायन लक्षण कह्युं हतुं रे, बेठे वते यानपात्र ॥ चे० ॥ ३ ॥ पण में मूढ अजाणते रे, कीधुं अधमनुं काम ॥ वनमां सतीने परहरी रे, थइ निष्कृप अभिराम रे ॥ चे०॥ ४ ॥ मुफ वनिता हती महासती रे, पण हुं थयो अज्ञान ॥ मुफ सरीखो

संसारमें रे, निर्घृण नहि को निदान रे ॥ चे० ॥५॥
शी गति थइ हशे तेहनी रे, रजनीचरने द्वीप ॥
अहो अहो हुं महापातकी रे, तुछ मति जडीप रे ॥
चे० ॥ ६ ॥ अति चिंतातुर कंथने रे, देखी पवत्तणी
ताम ॥ कहो तुमें चिंतातुरा रे, अहो महानुभाव
आम रे ॥ चे० ॥ ७ ॥ कहे महेश्वर कर जोडीने रे,
ुरवलो जदंत, आंसु ऋरंते लोयणें रे, नारी गुण
विलपंत रे ॥ चे० ॥ ७ ॥ बोली ताम पवत्तणी रे, तेह
हुं अवर न कोय ॥ जे तमे विसर्जी वनमां रे, नयण
उघाडी जोय रे ॥ चे० ॥ ए ॥ ताहरो दोष नहीं कि
ो रे, ए मुफ कर्मनो दोष ॥ शुं करेछे बापडा रे,
ुं नथी धरती रोष रे ॥ चे०॥ १० ॥ आपवीती वातो
कही रे, महेश्वरदत्त ते सर्व, आदखुं में साहुणी पणुं
:, गंडी क्रोध ने गर्व रे ॥ चे० ॥ ११ ॥ आवी हुं इहां
ुफने रे, प्रतिबोधनने काज ॥ समज तुं गति संसार
ीरि, ठलख तुं जिनराज रे ॥चे०॥ १२ ॥ नर्मदासुंदरी
ोलखी रे, लाज्यो महेश्वरदत्त ॥ निज अपराध खमा
वेयो रे, लह्यो वैराग्य उन्मत्त रे ॥ चे० ॥ १२ ॥ कहे
महेश्वर मुफ कीजीए रे, ज्ञान दर्शन चारित्र ॥ नम
ा कहे सूरि अछे रे, आर्यसुहस्ती पवित्र रे ॥ चे०॥

॥ १४ ॥ ऋषिदत्ता पण शुज परें रे, श्रति पामी प्रतिबोध ॥ चारित्र लेवा सूंडियां रे, टालि सयल विरोध रे ॥ चे० ॥ १५ ॥ अनुक्रमे विचरंता आविया रे, आर्यसुहस्ती गुरुराय ॥ महेश्वरदत्त हरख्यो हिये रे, ऋषिदत्ता हित लाय रे ॥ चे० ॥ १६ ॥ दीक्षा वेहु ए आदरी रे, ठोडी सयल जंजाल ॥ मोहनविजयें जली कही रे, ए वासठमी ढाल रे ॥ चे० ॥ १७॥

॥ दोहा ॥

ऋषिदत्ता दीक्षा ग्रही, पाले निरतीचार ॥ आयु वशें जइ ऊपनी, निर्जरने श्रागार ॥ १ ॥ मुनि महेश्वरदत्त पण, दिक्षातणे प्रजाव ॥ जवसायर हेलांतरे, वेसी धर्मने नाव ॥ २ ॥ अनुक्रमें पाम्या पुण्यथी, सुरपर्यंत संयोग ॥ विलसे निजदेवी थकी, विषयादिकनो जोग ॥ ३ ॥ जो जो नमया महासती, करियो ए उपकार॥ महापतित पतिने कियो, महोटो सुर शिरदार ॥ ४ ॥ सुंदर नमया महासती, वसुधा करे विहार ॥ करे मार्त्तंड प्रजापरें, जविकैरव विस्तार ॥५॥ कहेणी रहेणी विहु सरिस, तेहवो नाण प्रकाश ॥ कर्मतणी करे निर्जरा, उपशमने आवास ॥ ६ ॥

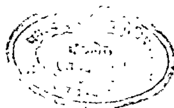
॥ ढाल त्रेसठमी ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ नमया सुंदरी महासती, शु
धो संयम पाले जी ॥ ध्यानानल संयोगें सुपरें, कर्म
समिध प्रजाले जी ॥ न०॥१॥ अवधि ज्ञान तणे अनु
सारें, आयुष कर्म विचारी जी ॥ मास तणी हित आ
णी दाखे, संलेषणा सुखकारी जी ॥ न० ॥ २ ॥
लाख चोराशी जीव खमावी, सम नावें मन आणी
जी ॥ शुरू देव गुरु धर्म त्रि करणें, निश्चल चित्तें
ध्याइ जी ॥ तृप्ति नाव नाव्यो मन शुद्धें, परम म
होदय पाइ जी ॥ ३ ॥ नमया सुंदरी ताम वियजो,
पोहती निकट सुर लोक जी ॥ देवपणे सुर सुख
लीलायें, नोगवे अतिहें अशोक जी ॥ न० ॥ ४ ॥
पंक्ति तांडव नित्य अखंकित, देव पडह पट वाजे
जी ॥ विविध तूरिनिर्घोष प्रसारें, विबुध गृहांगण गा
जे जी ॥ न० ॥ ५ ॥ एम सुपर्व तणी प्रनुताइ, नो
गवे महासती जीव जी ॥ पुनरपि मानव नव पडि
वजशे, महा विदेहे तदीव जी ॥ न० ॥ ६ ॥ लहेशे
नृप पदवी ससलूणी, जीतशे अरियण वृंद जी ॥
विषय तणां सुख निज वनिताशी, अनुनवशे पद
अमंद जी ॥ न० ॥ ७ ॥ सह गुरु वाणी श्रवणे सु

षणे, जाणशे अथिर संसार जी ॥ परहरी राज्य रा मा तेम प्रमदा, थाशे मुनि अणगार जी ॥ न० ॥ ८ ॥ पाळशे निरतिचारे संयम, अष्ट कर्म क्षय करशे जी ॥ केवल ज्ञान महासुख दाता, तेह ति हां अनुसरशे जी ॥ न० ॥ ९ ॥ करशे सुरवर क मलनी रचना, देशना मधुरी देशे जी ॥ अक्षय प दवी अक्षय लीला, परमोदयथी लहेशे जी ॥ न० ॥ १० ॥ एह चरित्र नमया सतीनुं, शील संबंधे गा युं जी ॥ जाणी गेहली नमया थइने, राख्युं शील सवायुं जी ॥ न० ॥ ११ ॥ एह संबंध छे शील कुला में, जो जो सुगुण जगीसें जी ॥ नरदेसर बालुब लि वृत्ति, प्रगट संबंध ए दीसे जी ॥ न० ॥ १२ ॥ ए संबंध छे साचो पण कोई, कल्पित करी मत जाणो जी ॥ आविर्भूत संबंध अपर जे, कवि रचना ते प्र माणो जी ॥ न० ॥ १३ ॥ धन्य धन्य नमया महा सती केरी, सरस कथा में गाइ जी ॥ कीधी पावन सुंदर रसना, सरस सुखद उपाइ जी ॥ न० ॥ १४ ॥ एह महासतीनी परें कोइ, पालशे शील अभंग जी ॥ ते पण वांछित सुख अनुभवशे, लेहशे ज्ञान तरंग जी ॥ न० ॥ १५ ॥ चोथुं व्रत निवृत्तिनुं कार

ण, तेम सौभाग्य प्रदाता जी ॥ यति उपदेशें एम सुखहुंती, शील महोदय शाता जी० ॥ न० ॥ १६ ॥ नमयासुंदरी केरुं रच्युं छे, चरित्र अनोपम एह जी ॥ कवि कुल कोइ हांसी न करजो, करजो शुचि ससनेह जी ॥ न० ॥ १७॥ मेंतो सुकवि भरुंसो आणी, रास रच्यो छे साचें जी ॥ नहीं तो शी मति माहरी जे हुं, होड्य करुं करी वांचे जी ॥ न०॥ १८ ॥ तेह कारण ए रास रसीलो, नमया सुंदरीकेरो जी ॥ कंठाभरण पणे सहु करजों, पण दूषण मत हेरो जी ॥ न० ॥ १९ ॥ विधिमुख शिवमुख रुषि इंडु (१७५४) संवत संज्ञा एहजी ॥ मास पोष वदी तेरश दिवसें, उशना वार गुण गेह जी ॥ न० ॥ २० ॥ तुंगया नगरी उपमा पामे, सभी नयरी सुविशेषे जी ॥ चतुरपणें चोमासुं कीधुं, सद्गुरुने आदेशें जी ॥ न० ॥ २१ ॥ तप गछ गगन विकाशन दिनमणी, विजयरत्नसूरि राजें जी ॥ रचना रास तणी ए कीधी, आग्रह संघने काजें जी ॥ न० ॥२२॥ श्री विजयसेन सूरीश्वर सेवक, कीर्तिविजय उवझाया जी ॥ तस पद पंकज षट्पद उपमा, मान विजय कविराया जी ॥ न० ॥ २३ ॥ जास शिष्य क

वि कुल वक्षःस्थल, मंडन जूषण दिव्य जी ॥ रूपवि जय पंडित सुपसायें, कीर्ति सुधा सम सेव्य जी ॥ न० ॥ २४ ॥ कृपा प्रसाद लहीने तेहनो, मोहनवि जयें उल्लास जी ॥ त्रेसठमी ढाले करी गायो, नर्मदा केरो रास जी ॥ न० ॥ २५ ॥ जे कोइ जणशे गणशे सुणशे, ते लहेशे परमानंद जी ॥ मंगल प्राप्ति सदा घर श्रंगण, शोजशे शोजा वृंद जी ॥ न० ॥ २६ ॥ घर घर लीला मंगल लक्ष्मी, प्रगटे पुण्य प्रकाश जी ॥ श्रोता जन श्रुति धरजो सहु को, मोहन वचन वि लास जी ॥ न० ॥ २७ ॥ इति श्री पंडित श्री मोहन विजय विरचित्त नर्मदा सुंदरीरास शीलविषये संपूर्णः ॥ शुजं जवतु ॥



ए, तेम सौभाग्य प्रदाता जी ॥ यति उपदेशें एम
सुखहुंती, शील महोदय शाता जी० ॥ न० ॥ १६ ॥
नमयासुंदरी केरुं रच्युं छे, चरित्र अनोपम एह
जी ॥ कवि कुल कोइ हांसी न करजो, करजो शुचि
ससनेह जी ॥ न० ॥ १७॥ मेंतो सुकवि जरुंसो आ
णी, रास रच्यो छे साचें जी ॥ नहीं तो शी मति मा
हरी जे हुं, होड्य करुं करी वांचे जी ॥ न०॥ १८ ॥
तेह कारण ए रास रसीलो, नमया सुंदरीकेरो जी
॥ कंठाभरण पणे सहु करजो, पण दूषण मत हेरो
जी ॥ न० ॥ १९ ॥ विधिमुख शिवमुख रुषि
इंदु (१७५४) संवत संज्ञा एहजी ॥ मास पोष
वदी तेरश दिवसें, उशना वार गुण गेह जी ॥ न०
॥ २० ॥ तुंगया नगरी उपमा पामे, सभी नयरी सु
विशेषे जी ॥ चतुरपणें चोमासुं कीधुं, सद्गुरुनें
आदेशें जी ॥ न० ॥ २१ ॥ तप गछ गगन विकाशन
दिनमणी, विजयरत्नसूरि राजें जी ॥ रचना रास
तणी ए कीधी, आग्रह संघने काजें जी ॥ न० ॥२२॥
श्री विजयसेन सूरीश्वर सेवक, कीर्तिविजय उव
झाया जी ॥ तस पद पंकज षट्पद उपमा, मान वि
जय कविराया जी ॥ न० ॥ २३ ॥ जास शिष्य क

वि कुल वक्षःस्थल, मंडन नूषण दिव्य जी ॥ रूपवि
जय पंडित सुपसायें, कीर्ति सुधा सम सेव्य जी ॥
न० ॥ २४ ॥ कृपा प्रसाद लहीने तेहनो, मोहनवि
जयें उल्लास जी ॥ त्रेसठमी ढाले करी गायो, नर्मदा
केरो रास जी ॥ न० ॥ २५ ॥ जे कोइ नणशे गणशे
सुणशे, ते लहेशे परमानंद जी ॥ मंगल प्राप्ति सदा
घर श्रंगण, शोजशे शोजा वृंद जी ॥ न० ॥ २६ ॥
घर घर लीला मंगल लछी, प्रगटे पुण्य प्रकाश जी
॥ श्रोता जन श्रुति धरजो सहु को, मोहन वचन वि
लास जी ॥ न० ॥ २७ ॥ इति श्री पंडित श्री मोहन
विजय विरचित्त नर्मदा सुंदरीरास शीलविषये
संपूर्णः ॥ शुनं नवतु ॥